



संकल्प

2025-26 | अंक - 37



यंत्र अनुसंधान एवं विकास संस्थान

रायपुर रोड, देहरादून-248008



डॉ. अजय कुमार
उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक

संरक्षक



श्रीमती रूमा ढाका
उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं सह-निदेशक

संपादक



श्री पुनीत वाशिष्ठ
वैज्ञानिक 'जी', प्रधान संपादक



डॉ. ललित मोहन पंत
वैज्ञानिक 'जी'
समूह निदेशक राजभाषा
उपाध्यक्ष, रा.का.स., संपादक



श्री मधुसूदन उपाध्याय
तकनीकी अधिकारी 'सी'
नामित राजभाषा अधिकारी



श्री त्रिलोक सिंह
डाटा प्रोसेसिंग अधिकारी
सदस्य



श्री पवन कुमार सूरज
तकनीकी अधिकारी 'बी'
सदस्य



श्री वाई एस बरार
तकनीकी अधिकारी 'बी'
सदस्य



श्री अवधेश कुमार ढोंडियाल
भण्डार अधिकारी
सदस्य



श्री प्रकाश नीरव
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी
सदस्य



श्री अमित कुमार पटेल
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
सदस्य

(पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।)



संकल्प

पत्रिका



यंत्र अनुसंधान एवं विकास संस्थान

रायपुर रोड, देहरादून-248008



संकल्प

2025-26 | अंक - 37

डॉ. समिर वी. कामत
Dr. Samir V. Kamat



सचिव, रक्षा अनुसंधान तथा विकास विभाग
एवं
अध्यक्ष, डीआरडीओ
Secretary, Department of Defence R&D
&
Chairman, DRDO



संदेश

यह अत्यंत हर्ष और गौरव का विषय है कि यंत्र अनुसंधान एवं विकास संस्थान, देहरादून इस वर्ष अपने संस्थान की वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका 'संकल्प' के 37 वें अंक का प्रकाशन कर रहा है। इस संस्थान ने सशस्त्र सेनाओं के उपयोगार्थ प्रकाशिकी एवं विद्युत प्रकाशिकी के क्षेत्र में अनुसंधान तथा विकास से संबंधित विभिन्न महत्वपूर्ण परियोजनाओं को निर्धारित समय में पूर्ण किया है जो कि संस्थान के विचारों, मूल्यों, कार्यसंस्कृति को प्रतिबिंबित करता है और वहीं गृह पत्रिका 'संकल्प' इसके रचनात्मक दायित्व को भली-भांति निभाती है।

राष्ट्र के भाषायी गौरव को अक्षुण्ण रखने के लिए राजभाषा हिंदी का कार्यालयीन प्रयोग परम आवश्यक है। शासकीय कार्यों में हिंदी के प्रयोग से राजभाषा की गरिमा सुदृढ़ एवं विकसित होती है। हिंदी के प्रति संस्थान के अधिकारी एवं कार्मिकों का समर्पण, सम्मान और आत्मीयता गृह पत्रिका 'संकल्प' के 37वें अंक में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है।

गृह पत्रिका 'संकल्प' के 37वें अंक के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

दिनांक: 04 फ़रवरी, 2026
स्थान: नई दिल्ली

समिर वी. कामत

(डॉ. समिर वी. कामत)

रक्षा अनुसंधान, रक्षा अनुसंधान तथा विकास विभाग, डीआरडीओ भवन, राजी मार्ग, नई दिल्ली-110011
Ministry of Defence, Department of Defence R&D, DRDO Bhawan, Rajaji Marg, New Delhi-110011
दूरभाष/Phone: 011-23011519, 23014350 फैक्स/Fax: 011-23018216 ई-मेल/E-mail: secydrdo@gov.in



संकल्प

2025-26 | अंक - 37

डॉ मयंक द्विवेदी, एनडीडी
महानिदेशक (मानव संसाधन)
Dr Mayank Dwivedi, ndc
DIRECTOR GENERAL (HR)



सत्यमेव जयते



एक जटम सांख्यिकी की जित

भारत सरकार, रक्षा मंत्रालय
Government of India, Ministry of Defence
रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन
Defence Research and Development Organisation
201, द्वितीय मंज, 'ए' ब्लॉक, डी आर डी ओ भवन
201, 2nd Floor, 'A' Block, DRDO Bhawan
राजाजी मार्ग, नई दिल्ली-110011
Rajaji Marg, New Delhi-110011



संदेश

मुझे अत्यधिक प्रसन्नता एवं गौरव की अनुभूति हो रही है कि यंत्र अनुसंधान एवं विकास संस्थान, (आई.आर.डी.ई.) देहरादून द्वारा वार्षिक हिन्दी गृह पत्रिका 'संकल्प' का अंक 37, वर्ष 2025-26 का प्रकाशन किया जा रहा है।

वैज्ञानिक एवं तकनीकी अनुसंधान कार्यों से सम्बद्ध संस्थान द्वारा राजभाषा नीति का अनुपालन करते हुए हिन्दी गृह पत्रिका के माध्यम से अपनी उपलब्धियों की जानकारी हिन्दी में प्रकाशित करने से सभी पाठकों का ज्ञानवर्धन होगा तथा सरकारी कार्यों में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा मिलेगा।

गौरव का विषय है कि यंत्र अनुसंधान एवं विकास संस्थान, देहरादून रक्षा सेवाओं को प्रकाशिकी के क्षेत्र में नवीनतम प्रौद्योगिकी तथा उपकरण प्रदान करने के साथ-साथ राजभाषा नीति, नियमों तथा निर्देशों के अनुपालन एवं कार्यान्वयन के लिए भी समर्पित है।

ज्ञानवर्धक लेखों व मौलिक रचनाओं से परिपूर्ण वार्षिक हिन्दी गृह पत्रिका 'संकल्प' अंक-37 के सफल प्रकाशन हेतु मैं हृदय से शुभकामनाएं देता हूँ।

स्थान: नई दिल्ली
दिनांक: 13 जनवरी, 2026

(डॉ. मयंक द्विवेदी)



संकल्प

2025-26 | अंक - 37

डॉ बि के दास
महानिदेशक (ईसीएस)

Dr B K DAS
DIRECTOR GENERAL (ECS)



भारत सरकार, रक्षा विभाग
रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन
महानिदेशक (इलेक्ट्रॉनिक्स एवं संस्था प्रणाली) का कार्यालय
एन आर डी ई कैंपस, सी बी रामन नगर, बेंगलूरु-560 093

GOVT OF INDIA, MINISTRY OF DEFENCE
DEFENCE R & D ORGANISATION
OFFICE OF DIRECTOR GENERAL (ECS)
LRDE CAMPUS, CV RAMAN NAGAR, BENGALURU - 560 093



संदेश

यह गौरव और प्रसन्नता का विषय है कि इस वर्ष यंत्र अनुसंधान एवं विकास संस्थान, देहरादून द्वारा वार्षिक हिंदी पत्रिका 'संकल्प' का 37 वां अंक प्रकाशित किया जा रहा है। रक्षा अनुसंधान तथा विकास के क्षेत्र में कार्यरत यह संस्थान रक्षा सेवाओं को नवीनतम प्रौद्योगिकी एवं उपकरण उपलब्ध कराकर भारत में आत्म निर्भरता का मार्ग प्रशस्त कर रहा है। इसके साथ-साथ राजभाषा नीति, नियमों के अनुपालन एवं कार्यान्वयन तथा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए भी यह संस्थान निरन्तर प्रयासरत है।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय की प्रेरणा और प्रोत्साहन की नीति के अनुसार राजभाषा कार्यान्वयन को प्रभावी बनाने हेतु वार्षिक हिंदी पत्रिका 'संकल्प' में संस्थान से संबंधित ज्ञानवर्धक जानकारियों शामिल करने के साथ-साथ कार्मिकों द्वारा राजभाषा हिंदी में लिखी गई रचनाओं का समावेश है। इससे निश्चित ही सभी कार्मिक अपने कार्य क्षेत्रों में हिंदी का प्रयोग करने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित होंगे।

'संकल्प' पत्रिका को उत्कृष्टता प्रदान करने के लिए संपादक मण्डल तथा प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का प्रयास प्रशंसनीय है। वार्षिक हिंदी पत्रिका 'संकल्प' के 37 वें अंक के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

दिनांक: 04 फ़रवरी, 2026
स्थान: बेंगलुरु

बि.के.दास

(डॉ. बि. के. दास)



संकल्प

2025-26 | अंक - 37

विपिन कुमार कौशिक
उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक
Vipin Kumar Kaushik
Outstanding Scientist & Director



भारत सरकार
रक्षा मंत्रालय
रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन
348, डी आर डी बी भवन, नई दिल्ली-110011
Government of India
Ministry of Defence
Defence Research & Development Organisation
348, DRDO Bhawan, New Delhi-110011



संदेश

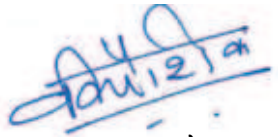
यह हर्ष का विषय है कि यंत्र अनुसंधान तथा विकास संस्थान (आई.आर.डी.ई.), देहरादून द्वारा इस वर्ष अपनी वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका 'संकल्प' का 37 वां अंक प्रकाशित किया जा रहा है। यह गौरव की बात है कि यह संस्थान पिछले 36 वर्षों से हिंदी गृह पत्रिका 'संकल्प' का अनवरत प्रकाशन कर रहा है। संस्थान द्वारा किया जाने वाला यह प्रयास राजभाषा नीति और निर्देशों के अनुपालन एवं कार्यान्वयन में संस्थान के उत्साह का परिचायक है।

यह प्रशंसनीय है कि वैज्ञानिक एवं तकनीकी अनुसंधान क्षेत्र के कार्मिक होते हुए भी इन्होंने अपने शोध एवं विचारों की अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में हिंदी को चुना है। यह राजभाषा के प्रति इनकी दृढ़ निष्ठा एवं समर्पित इच्छाशक्ति को प्रदर्शित करता है। संस्थान में राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित सभी कार्यक्रमों को निर्धारित समय पर संपन्न कराने के लिए सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का प्रयास सराहनीय है।

राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के क्षेत्र में हिंदी गृह पत्रिकाओं की अहम भूमिका है। इन पत्रिकाओं का उद्देश्य न केवल कार्मिकों को हिंदी में अभिव्यक्ति का एक मंच प्रदान करना है, बल्कि राष्ट्रभाषा, राजभाषा और संपर्क भाषा के रूप में हिंदी की गरिमा और उसके महत्व को उजागर कर प्रतिष्ठित करना भी होता है। इस दिशा में यंत्र अनुसंधान एवं विकास संस्थान द्वारा प्रकाशित गृह पत्रिका 'संकल्प' अपने दायित्व का भली-भांति निर्वहन कर रही है।

संस्थान के निदेशक, राजभाषा कार्यान्वयन समिति एवं राजभाषा अनुभाग के सभी सदस्य तथा पत्रिका प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों व कर्मचारियों को हार्दिक बधाई और 'संकल्प' पत्रिका के अंक- 37, वर्ष 2025 -26 के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

स्थान: नई दिल्ली
दिनांक: 12 जनवरी, 2026


(विपिन कुमार कौशिक)



संकल्प

2025-26 | अंक - 37

डॉ अजय कुमार
उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक

Dr. AJAY KUMAR
OUTSTANDING SCIENTIST & DIRECTOR



सत्यमेव जयते

भारत सरकार, रक्षा मंत्रालय
रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन
यंत्र अनुसंधान एवं विकास संस्थान
रायपुर रोड, देहरादून - 248008 (उत्तराखण्ड)
GOVT. OF INDIA, MINISTRY OF DEFENCE
DEFENCE R & D ORGANISATION
INSTRUMENTS RESEARCH & DEVELOPMENT ESTT.
RAIPUR ROAD, DEHRADUN - 248008 (UTTARAKHAND)



संदेश

यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि यंत्र अनुसंधान तथा विकास संस्थान (आई.आर.डी.ई.), देहरादून द्वारा अपनी वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका 'संकल्प' के 37 वें अंक वर्ष 2025-26 का प्रकाशन किया जा रहा है। किसी भी संस्थान द्वारा प्रकाशित गृह पत्रिका उस संस्थान का दर्पण होती है। पत्रिका के माध्यम से संस्थान की विभिन्न गतिविधियों तथा उपलब्धियों की जानकारी मिलती है। यह गर्व का विषय है कि वैज्ञानिक एवं तकनीकी कार्यों के साथ-साथ यंत्र अनुसंधान तथा विकास संस्थान द्वारा राजभाषा नीति का अनुपालन करते हुए पिछले 36 वर्षों से अनवरत पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

देश की तीनों रक्षा सेनाओं की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए यह संस्थान सामरिक महत्व की विभिन्न परियोजनाओं जैसे लेजर व रात्रि दृष्टि यंत्र, गैप मेजरिंग युक्ति, एकीकृत फायर कंट्रोल प्रणाली तथा दृष्टि युक्तियां, नौसेना युद्धपोत के लिए विद्युत प्रकाशिकी फायर कंट्रोल प्रणाली, तापीय प्रतिबिंबक, सेना के लघु हथियारों के लिए होलोग्राफिक साइट, एकीकृत बहुउद्देशीय दृष्टि यंत्र, हल्के सुवाह्य लेजर टारगेट डिजाइनटर व सीमा निगरानी उपकरण तथा प्रकाशिकी एवं विद्युत प्रकाशिकी संबंधी महत्वपूर्ण उपलब्धियां प्राप्त करके रक्षा क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य कर रहा है। साथ ही राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में संस्थान द्वारा प्रकाशित पत्रिका नवीनतम ज्ञानवर्धक जानकारीयों प्रदान करने के संबंध में अहम भूमिका का निर्वहन कर रही है।

पत्रिका को उत्कृष्टता प्रदान करने के लिए संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति, पत्रिका के संपादक मण्डल तथा रचनाकारों का प्रयास प्रशंसनीय है। मैं 'संकल्प' पत्रिका के 37 वें अंक के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ।

अजय कुमार

(डॉ. अजय कुमार)

उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक
यंत्र अनुसंधान एवं विकास संस्थान
देहरादून

दिनांक: 09 जनवरी, 2026

दूरभाष / Phone : + 91 0135-2787189, 2787128

फैक्स / Fax : +91-135-2787161, 2787128

ई-मेल / E-mail : director.inda@gov.in
ajay.inda@gov.in



प्रधान सम्पादक की कलम से...



संदेश

यह अत्यन्त हर्ष एवं गर्व का विषय है कि यंत्र अनुसंधान एवं विकास संस्थान, (आई.आर.डी.ई.) देहरादून इस वर्ष अपनी वार्षिक हिन्दी गृह पत्रिका 'संकल्प' अंक 37 वर्ष 2025-26 का प्रकाशन कर रहा है। पत्रिका का अनवरत प्रकाशन राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन की दिशा में उल्लेखनीय प्रयास है।

यंत्र अनुसंधान एवं विकास संस्थान, देहरादून जहाँ एक ओर रक्षा सेवाओं की आवश्यकताओं के अनुरूप विद्युत प्रकाशिकी से संबंधित अनुसंधान एवं विकास के क्षेत्र में विकास के पथ पर अग्रसर है वहीं दूसरी ओर राजभाषा हिन्दी का शासकीय कार्यों में अधिक से अधिक प्रयोग करते हुए संस्थान की विभिन्न गतिविधियों, रोचक कविताओं, साहित्यिक विषयों से संबंधित लेखों, रचनाओं से सुसज्जित हिन्दी पत्रिका का प्रकाशन करके राजभाषा हिन्दी संबंधी नीति व नियमों का अनुपालन भी कर रहा है। मुझे विश्वास है कि 'संकल्प' पत्रिका के इस अंक में प्रकाशित विभिन्न ज्ञानवर्धक जानकारियों से पाठक गण लाभान्वित होंगे।

मैं वार्षिक हिन्दी गृह पत्रिका 'संकल्प' अंक-37 वर्ष 2025-26 के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

(पुनीत वाशिष्ठ)

वैज्ञानिक - जी

प्रधान संपादक

संकल्प पत्रिका अंक - 37

दिनांक: 12 जनवरी, 2026



उपाध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति की कलम से...



संदेश

यंत्र अनुसंधान एवं विकास संस्थान, देहरादून द्वारा प्रकाशित वार्षिक हिन्दी पत्रिका 'संकल्प' का 37 वां अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करना मेरे लिए गौरव का विषय है। वास्तव में किसी भी संस्थान की पत्रिका वहाँ के ज्ञान-विज्ञान, क्रिया-कलाप और संस्कृति की परिचायक होती है। पत्रिका में स्तरीय साहित्यिक लेखों, रचनाओं और वैज्ञानिक एवं तकनीकी परिश्रम के साथ-साथ संस्थान की विभिन्न गतिविधियों का चित्रण व समावेशन पत्रिका की रोचकता एवं पठनीयता को बढ़ाता है। 'संकल्प' पत्रिका में इसकी सार्थकता हेतु पूर्ण प्रयत्न किया गया है।

यद्यपि यह संस्थान मुख्यतः वैज्ञानिक एवं तकनीकी अनुसंधान कार्यों से संबंधित है तथापि संस्थान में राजभाषा नीति का कार्यान्वयन एवं प्रचार-प्रसार समयबद्ध कार्यक्रम के अनुरूप होता है। संस्थान की हिन्दी पत्रिका का प्रकाशन राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार का सशक्त माध्यम है।

पत्रिका के इस अंक में साहित्यिक विधाओं से भरपूर लेखों, रचनाओं, वार्षिक प्रतिवेदन तथा संस्थान की विभिन्न गतिविधियों को पत्रिका रूपी पुष्पगुच्छ में सचित्र संजोकर प्रस्तुत करने के लिए संपादक मंडल के सदस्यों तथा राजभाषा कार्यान्वयन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सार्थक प्रयास हेतु आभार व्यक्त करता हूँ।

संस्थान की वार्षिक हिन्दी पत्रिका 'संकल्प' अंक-37 की स्वर्णिम सफलता हेतु मेरी शुभकामनाएँ।

(डॉ. एल. एम. पन्त)

वैज्ञानिक - जी

संपादक - संकल्प अंक - 37

दिनांक: 07 जनवरी, 2026



राजभाषा अधिकारी की कलम से...



प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण देवभूमि उत्तराखण्ड के पर्वतांचलों से निसृत पावन गंगा-यमुना के मध्य सुरम्य शैल शिखरों से आच्छादित देहरादून में स्थित प्रमुख रक्षा संस्थान 'यंत्र अनुसंधान एवं विकास संस्थान' भारत सरकार, रक्षा मंत्रालय के रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन का अग्रणी संस्थान है। यह संस्थान आधुनिकतम प्रकाशिकी एवं विद्युत प्रकाशिकी से संबंधित प्रौद्योगिकियों एवं यंत्रों के क्षेत्र में अनुसंधान, अभिकल्पन तथा विकास के कार्यों में संलग्न है। इस संस्थान ने जहाँ एक ओर अपने अनुसंधान एवं विकास संबंधी कार्यों से विश्वस्तरीय कीर्ति स्तम्भ स्थापित किये हैं वहीं दूसरी ओर राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन में भी उल्लेखनीय कार्य किये हैं। पिछले 36 वर्षों से हिन्दी पत्रिका 'संकल्प' का अनवरत प्रकाशन इस तथ्य का सशक्त उदाहरण है।

संस्थान में राजभाषा नीति, नियमों तथा निर्देशों के अनुपालन एवं कार्यान्वयन के सन्दर्भ में समय-समय पर हिन्दी कार्यशालाओं, हिन्दी दिवस, हिन्दी पखवाड़ा, हिन्दी संगोष्ठी का आयोजन, राजभाषा संबंधी निरीक्षण, हिन्दी प्रशिक्षण, राजभाषा कार्यान्वयन समिति तथा प्रबंध परिषद की नियमित बैठकों का आयोजन और वार्षिक हिन्दी गृह पत्रिका का नियमित प्रकाशन महत्वपूर्ण कार्य है।

यंत्र अनुसंधान तथा विकास संस्थान की गृह पत्रिका 'संकल्प' के 37वें स्वर्णिम पुष्प को आप के समक्ष प्रस्तुत करने में मुझे हार्दिक प्रसन्नता एवं गौरव की अनुभूति हो रही है। हिन्दी माध्यम से भाव-संवेदनाओं, विचारों तथा सूचनाओं का आदान-प्रदान कर हम राष्ट्र में हिन्दी के संपर्क भाषा के नाम को सार्थक कर रहे हैं। इससे राष्ट्र की भाषायी अस्मिता सुदृढ़ होती है।

साहित्य समाज का दर्पण है। पत्रिका के इस अंक में संस्थान के विभिन्न क्रिया-कलापों, साहित्यिक लेखों एवं कविताओं का समावेश किया गया है। साथ ही संस्थान की विभिन्न गतिविधियों को चित्रों के माध्यम से दर्शाया गया है। यह संस्थान राजभाषा कार्यान्वयन के प्रति अपने कर्तव्यों एवं दायित्वों के निर्वहन हेतु कृत संकल्प है।

'संकल्प' पत्रिका के 37वें अंक को रोचक, ज्ञानवर्धक एवं पठनीय बनाने के लिए संपादक मंडल तथा सभी लेखकों एवं रचनाकारों का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारी एवं कर्मचारी प्रशंसा के पात्र हैं। पत्रिका को और अधिक सूचनापरक एवं जनोपयोगी बनाने के लिए सुधी पाठकों के सुझावों की प्रतीक्षारत.....

(मधुसूदन उपाध्याय)

तकनीकी अधिकारी-सी

राजभाषा अधिकारी एवं समूह प्रमुख

दिनांक: 06 जनवरी, 2026



अनुक्रमणिका

क्रम सं.	विषय	लेखक	पृष्ठ सं.
1	हिंदी भाषा और सूचना प्रौद्योगिकी: वर्तमान परिदृश्य और भविष्य की संभावनाएँ	त्रिलोक सिंह	12
2	रक्षा विज्ञान में हिंदी की सार्थकता	अमित पटेल	22
3	उत्तराखंड की त्रासदी और हमारा कर्तव्य	अनुज कुमार रुहेला	25
4	यात्रा भीतर की : देहरादून से कामाख्या तक (एक आत्मीय यात्रावृत्त)	प्रकाश नीरव	27
5	लघुकथा - माल्टे का पेड़	रुचि उपाध्याय – धर्मपत्नी मधुसूदन उपाध्याय	36
6	आभासी दुनिया	दर्शिका द्विवेदी	37
7	खामोशी से बुलंदी तक	राघव उपाध्याय पुत्र मधुसूदन उपाध्याय	38
8	मेरा भारत महान	मधुसूदन उपाध्याय	39
9	कोई ऐसा यान बना लो, जो मन से मन तक जाए	पवन कुमार सूरज	40
10	मानवता की टाँग	पवन कुमार सूरज	41
11	वर्तमान का मौसम	पवन कुमार सूरज	41
12	सकल विश्व को किया प्रकाशित, पर विज्ञान डराता है	उर्मिला	42
13	मां, तेरे बिना हर ठोकर भारी है	अनुज कुमार रुहेला	43



संकल्प

2025-26 | अंक - 37

14	माँ	राकेश मोहन रावत	44
15	धरा का नवप्रभात	सुधा	45
16	हिंदी	दर्शिका द्विवेदी	46
17	जीवन कोई दौड़ नहीं	रक्षिता उपाध्याय पुत्री श्री मधुसूदन उपाध्याय	46
18	भटका पँछी	रविन्द्र सिंह	47
19	फुरसत	पूर्णमा गर्ग	47
20	दो दिन, धूप की तरह बहे	प्रकाश नीरव	48
21	संस्थान में राजभाषा नीति का कार्यान्वयन – वार्षिक प्रतिवेदन 2025	त्रिलोक सिंह	49
22	पुरस्कार वितरण एवं हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह	त्रिलोक सिंह	56
23	संस्थान में नियुक्तियाँ, पदोन्नतियाँ, स्थानांतरण, सेवानिवृत्तियाँ - वर्ष 2025	त्रिलोक सिंह	64
24	संस्थान में विशिष्ट अतिथियों का परिभ्रमण, हिन्दी पखवाड़ा तथा पुरस्कार वितरण, स्थापना दिवस-छायाचित्र	त्रिलोक सिंह	67



हिंदी भाषा और सूचना प्रौद्योगिकी: वर्तमान परिदृश्य और भविष्य की संभावनाएँ



त्रिलोक सिंह

सारांश

21वीं सदी को सूचना प्रौद्योगिकी (Information Technology) और डिजिटल नवाचारों का युग कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। आज जीवन का कोई ऐसा क्षेत्र शेष नहीं रह गया है, जिस पर सूचना प्रौद्योगिकी ने अपनी छाप न छोड़ी हो — शिक्षा, व्यापार, चिकित्सा, प्रशासन, मनोरंजन, संचार, और यहां तक कि हमारे सामाजिक व्यवहार भी इसके प्रभाव से अछूते नहीं हैं। इस तकनीकी परिवर्तन ने न केवल संसाधनों की पहुँच और गति को बढ़ाया है, बल्कि ज्ञान के आदान-प्रदान के स्वरूप को भी पूरी तरह से बदल डाला है। इस परिवर्तन के केंद्र में “भाषा” एक अहम भूमिका निभा रही है। पहले जहाँ भाषा को केवल विचारों के आदान-प्रदान का माध्यम माना जाता था, वहीं आज यह डिजिटल माध्यमों की आत्मा बन चुकी है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), मशीन लर्निंग, नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग (NLP), वर्चुअल असिस्टेंट्स, ट्रांसलेशन टूल्स आदि तकनीकों की सफलता भाषा की दक्षता पर ही निर्भर करती है। तकनीक का लोकतंत्रीकरण तब तक अधूरा है जब तक वह आम नागरिक की भाषा में सुलभ न हो।

ऐसे में हिंदी भाषा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो

जाती है। लगभग 60 करोड़ लोगों द्वारा मातृभाषा या द्वितीय भाषा के रूप में बोली जाने वाली हिंदी, विश्व की तीसरी सबसे बड़ी भाषा है। भारत जैसे बहुभाषी देश में जहाँ डिजिटल समावेशन (digital inclusion) की आवश्यकता दिन-ब-दिन बढ़ रही है, वहाँ हिंदी को सूचना प्रौद्योगिकी में एक प्रमुख स्थान देना समय की मांग बन चुका है। चाहे बात सरकारी ई-गवर्नेंस पोर्टलों की हो, मोबाइल ऐप्स की हो, या फिर सोशल मीडिया और ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म की — आमजन तक तकनीक को पहुँचाने के लिए हिंदी का उपयोग अत्यावश्यक है। हिंदी भाषा और सूचना प्रौद्योगिकी का संबंध अब केवल अनुवाद और टाइपिंग तक सीमित नहीं है। यह संबंध अब डेटा माइनिंग, मशीन ट्रांसलेशन, स्पीच रिकग्निशन, ऑटोमैटिक टेक्स्ट समरी, चैटबॉट्स और अन्य उन्नत तकनीकी क्षेत्रों तक पहुँच चुका है। इसका उद्देश्य न केवल तकनीक को हिंदी में उपलब्ध कराना है, बल्कि तकनीक को हिंदी में “सोचने” और “समझने” योग्य बनाना है।

इस शोधपत्र में हम हिंदी भाषा और सूचना प्रौद्योगिकी के मौजूदा परिदृश्य की समीक्षा करेंगे, हिंदी में तकनीकी विकास की दिशा में अब तक हुए कार्यों पर प्रकाश डालेंगे, तथा भविष्य की संभावनाओं और आवश्यक रणनीतियों पर विचार करेंगे, ताकि हिंदी को डिजिटल युग में सशक्त और सुसंगत रूप से स्थापित किया जा सके।

1. हिंदी का तकनीकी विकास: ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

1.1 प्रारंभिक प्रयास (1980-1990)

हिंदी भाषा का तकनीकी विकास एक लंबी और



संघर्षपूर्ण यात्रा रही है, जिसकी नींव 1980 के दशक में रखी गई। यह वह दौर था जब कंप्यूटर भारत में धीरे-धीरे प्रवेश कर रहे थे और सूचना प्रौद्योगिकी एक नवजात क्षेत्र के रूप में उभर रही थी। तकनीक पूरी तरह अंग्रेजी केंद्रित थी, और क्षेत्रीय भाषाओं के लिए संसाधनों का लगभग अभाव था। ऐसे समय में हिंदी को कंप्यूटर और डिजिटल माध्यमों पर लाने के जो शुरुआती प्रयास हुए, वे अत्यंत सीमित संसाधनों, तकनीकी बाधाओं और भाषाई चुनौतियों के बावजूद किए गए। इस कालखंड में सबसे बड़ी चुनौती थी— कंप्यूटर सिस्टम पर हिंदी टाइपिंग और फॉन्ट्स का अभाव। ASCII आधारित सिस्टम केवल रोमन लिपि को ही सपोर्ट करते थे, जिसके कारण देवनागरी लिपि को कंप्यूटर पर प्रदर्शित करना एक बड़ी तकनीकी चुनौती बन गया था। हिंदी में टाइपिंग के लिए कोई मानक नहीं था, और अलग-अलग संस्थानों द्वारा बनाए गए फॉन्ट एक-दूसरे के अनुकूल नहीं होते थे। परिणामस्वरूप एक प्लेटफॉर्म पर लिखा गया दस्तावेज़ दूसरे प्लेटफॉर्म पर पढ़ा नहीं जा सकता था।

प्रमुख प्रारंभिक पहलें

- सी-डैक (C-DAC):** भारत सरकार द्वारा स्थापित 'सेंटर फॉर डेवलपमेंट ऑफ एडवांस्ड कंप्यूटिंग' (C-DAC) ने 1988 में हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं को कंप्यूटर पर लाने के लिए 'ग्यानदूत' और 'विजन' जैसे प्रोजेक्ट शुरू किए। C-DAC का सबसे बड़ा योगदान 1980 के दशक के उत्तरार्ध में 'इंडिक कंप्यूटिंग' की अवधारणा को जन्म देना रहा।
- आईएसएम (ISM) और हिंदी फॉन्ट्स का विकास:** इसी समय कुछ निजी सॉफ्टवेयर डेवलपर्स और संस्थानों ने टू टाइप फॉन्ट्स -

(TTF) के माध्यम से हिंदी में कंप्यूटर पर टाइपिंग की सुविधा विकसित की। लोकप्रियता प्राप्त करने वाले कुछ फॉन्ट्स में 'Kruti Dev' और 'Shree Lipi' प्रमुख रहे, जो आज भी सरकारी कार्यालयों में उपयोग में लिए जाते हैं।

- इनस्क्रिप्ट की शुरुआत:** देवनागरी लिपि के लिए टाइपिंग को मानकीकृत करने के प्रयास के रूप में भारत सरकार द्वारा 'इनस्क्रिप्ट कीबोर्ड लेआउट' विकसित किया गया। यह पहला प्रयास था जिससे हिंदी टाइपिंग को एक समान तकनीकी ढांचा मिला, हालांकि इसे अपनाने में समय लगा।
- हिंदी सॉफ्टवेयर और टूल्स का विकास:** कुछ संस्थानों और संगठनों ने सीमित स्तर पर हिंदी में वर्ड प्रोसेसिंग सॉफ्टवेयर विकसित किए, जैसे कि 'LEAP' और 'Akruti'। हालांकि ये सॉफ्टवेयर सीमित उपयोगकर्ता आधार और तकनीकी जटिलताओं के कारण व्यापक रूप से नहीं फैल पाए।

प्रभाव और सीमाएं

इन शुरुआती प्रयासों ने हिंदी को डिजिटल माध्यमों पर लाने की नींव तो रखी, लेकिन संसाधनों की कमी, मानकीकरण की अनुपस्थिति, तकनीकी विशेषज्ञता का अभाव और अंग्रेजी-प्रधान सॉफ्टवेयर पारिस्थितिकी ने हिंदी के तकनीकी विकास को धीमा बनाए रखा। इसके बावजूद इन प्रयासों ने यह संदेश स्पष्ट कर दिया कि हिंदी को तकनीकी युग से जोड़े बिना भारत में डिजिटल समावेशन संभव नहीं। इस दशक ने हिंदी के तकनीकी भविष्य की आधारशिला रखी और आने वाले वर्षों के लिए दिशा तय की। आगे चलकर इन्हीं प्रयासों की बदौलत 1990 के बाद के दशकों में हिंदी ने कंप्यूटर, इंटरनेट और मोबाइल प्लेटफॉर्म पर तेजी से पैर पसारने शुरू किए।



1.2 यूनिकोड क्रांति (2000-2010)

इस दशक में हिंदी के डिजिटलीकरण में क्रांतिकारी परिवर्तन आए

सन् 2000 से 2010 के बीच का दशक हिंदी भाषा के तकनीकी विकास में मील का पत्थर साबित हुआ। यह वह दौर था जब हिंदी ने तकनीक की दुनिया में एक नया और स्थायी ठिकाना प्राप्त किया—यूनिकोड के माध्यम से। जहां 1980 और 1990 के दशकों में हिंदी का डिजिटल स्वरूप विभिन्न फॉन्ट्स और प्लेटफॉर्म तक सीमित था, वहीं यूनिकोड (Unicode) ने हिंदी को एक वैश्विक, मानकीकृत और संगत पहचान दी।

यूनिकोड क्या है और क्यों जरूरी था?

यूनिकोड एक अंतरराष्ट्रीय मानक है जो विश्व की लगभग सभी भाषाओं के अक्षरों, प्रतीकों और लिपियों को एक कोड-सिस्टम के तहत परिभाषित करता है। इससे पहले हिंदी में लिखे गए दस्तावेज़ या वेबपेज एक विशेष फॉन्ट पर निर्भर रहते थे। यदि वह फॉन्ट किसी कंप्यूटर में इंस्टॉल न हो, तो पूरा लेखन समझ से बाहर हो जाता था। यूनिकोड ने इस समस्या को हमेशा के लिए खत्म कर दिया। अब देवनागरी लिपि में लिखा गया टेक्स्ट किसी भी कंप्यूटर, मोबाइल या ब्राउज़र पर बिना अतिरिक्त फॉन्ट इंस्टॉल किए पढ़ा जा सकता था।

मुख्य परिवर्तन और प्रभाव

1. **वेब पर हिंदी की उपस्थिति में उछाल :** यूनिकोड की वजह से हिंदी भाषा पहली बार इंटरनेट पर टिकाऊ और सुलभ रूप में उभरने लगी। गूगल, याहू और विकिपीडिया जैसे प्लेटफॉर्म ने हिंदी संस्करण लॉन्च किए। अब यूज़र हिंदी में वेबसाइट्स बना सकते थे, ब्लॉग लिख सकते थे, और सोशल मीडिया पर हिंदी में संवाद कर सकते थे।
2. **सर्च इंजन में हिंदी की स्वीकार्यता:** पहले सर्च इंजन हिंदी टेक्स्ट को सही ढंग से इंडेक्स नहीं कर पाते थे क्योंकि वह विभिन्न फॉन्ट्स में था और कोई मानक नहीं था। यूनिकोड ने इस समस्या को दूर किया और गूगल जैसे सर्च इंजन अब हिंदी कंटेंट को पहचानने और रैंक करने लगे। इससे हिंदी वेब सामग्री की दृश्यता और पहुँच में जबरदस्त इजाफा हुआ।
3. **ऑपरेटिंग सिस्टम और सॉफ्टवेयर में हिंदी सपोर्ट :** विंडोज XP से लेकर विंडोज 7 तक, माइक्रोसॉफ्ट ने यूनिकोड सपोर्ट के साथ हिंदी को अपने ऑपरेटिंग सिस्टम में शामिल किया। ओपन ऑफिस, एमएस ऑफिस, और अन्य वर्ड प्रोसेसिंग टूल्स अब यूनिकोड हिंदी में सहजता से काम करने लगे। यह बदलाव खास तौर पर सरकारी और शैक्षणिक संस्थानों के लिए बेहद उपयोगी साबित हुआ।
4. **ब्लॉगिंग और डिजिटल पत्रकारिता का विकास :** यूनिकोड के आगमन के साथ ही हिंदी में ब्लॉगिंग एक जनांदोलन की तरह शुरू हुई। 'नईदुनिया', 'भड़ास4मीडिया', 'कविता कोश', 'अभिव्यक्ति', 'रचनाकार' जैसे प्लेटफॉर्म सामने आए। अब कोई भी व्यक्ति बिना विशेष तकनीकी ज्ञान के हिंदी में डिजिटल लेखन कर सकता था।
5. **ई-मेल, एसएमएस और मोबाइल में हिंदी:** मोबाइल टेक्नोलॉजी में भी यूनिकोड का असर दिखा। हिंदी में एसएमएस भेजना आसान हुआ और धीरे-धीरे मोबाइल कंपनियाँ भी हिंदी इंटरफेस देने लगीं। ईमेल सेवाएं, जैसे जीमेल, ने हिंदी टाइपिंग और इंटरफेस की सुविधा देना शुरू किया।
6. **ऑनलाइन टाइपिंग टूल्स और वर्चुअल कीबोर्ड:** यूनिकोड के साथ-साथ गूगल इनपुट टूल्स, इंडिक टाइपिंग टूल्स और ऑनलाइन -



कीबोर्ड्स का विकास हुआ। इन टूल्स ने फोनेटिक टाइपिंग को संभव बनाया, जिससे लोग रोमन में लिखकर हिंदी में टाइप कर सकते थे। यह हिंदी टाइपिंग को आम लोगों के लिए बेहद आसान और सुलभ बना देने वाला कदम था।

1.3 वर्तमान परिदृश्य (2010-वर्तमान)

हिंदी और सूचना प्रौद्योगिकी का विस्तृत और व्यवहारिक गठजोड़

सन् 2010 के बाद का दौर हिंदी भाषा के तकनीकी विकास का सबसे तेज़, विविध और व्यवहारिक चरण रहा है। यूनिकोड की नींव पर खड़ी हिंदी अब केवल कंप्यूटर या टाइपिंग टूल्स तक सीमित नहीं रही—अब वह स्मार्टफोन, इंटरनेट, सोशल मीडिया, ऐप्स, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, और क्लाउड कंप्यूटिंग जैसे अत्याधुनिक प्लेटफॉर्म पर पूरी तरह स्थापित हो चुकी है। यह वह समय है जब तकनीक सचमुच हिंदी में "सोचने" और "बोलने" लगी है।

1. स्मार्टफोन और मोबाइल एप्लिकेशन में हिंदी की पैठ

2010 के बाद भारत में स्मार्टफोन और मोबाइल इंटरनेट की पहुँच तेजी से बढ़ी। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में डिजिटल उपयोगकर्ताओं की संख्या में बूम आया। इसी के साथ हिंदी भाषा ने मोबाइल तकनीक में एक नया विस्तार पाया:

- गूगल प्ले स्टोर और ऐप्पल ऐप स्टोर पर अब हजारों हिंदी-समर्थित ऐप्स उपलब्ध हैं— शिक्षा, स्वास्थ्य, खेती, बैंकिंग, मनोरंजन, समाचार, ध्यान और योग, आदि हर क्षेत्र में।
- हिंदी में टाइपिंग अब फोन के कीबोर्ड पर सहज हो गई है—गूगल इनपुट टूल्स, स्विफ्टकी, और Gboard जैसे कीबोर्ड हिंदी

- टाइपिंग को अत्यंत सरल और सहज बनाते हैं।
- WhatsApp, Facebook, Instagram, YouTube जैसे लोकप्रिय प्लेटफॉर्म अब हिंदी इंटरफेस और कंटेंट के साथ बड़े पैमाने पर उपयोग किए जा रहे हैं।

2. सोशल मीडिया और हिंदी का जनसंचार

सोशल मीडिया ने हिंदी को एक नया सामाजिक और सांस्कृतिक मंच दिया है। पहले जहाँ डिजिटल माध्यमों पर अंग्रेजी का बोलबाला था, अब हिंदी में लाखों की संख्या में सामग्री प्रतिदिन पोस्ट की जा रही है:

- हिंदी यूट्यूब चैनल्स, जैसे "The Lallantop", "Dhruv Rathee (हिंदी)", "Study IQ", आदि करोड़ों दर्शकों तक पहुँच रखते हैं।
- Twitter (अब X), Instagram, और Facebook पर हिंदी ट्रेंड्स आम हो गए हैं। मीम्स, कविताएं, विचार, और जनमत—सब अब हिंदी में जीवंत रूप से प्रकट हो रहे हैं।
- हिंदी पॉडकास्ट और ऑडियो ऐप्स जैसे "Kuku FM", "Spotify (हिंदी में)", और "Audible" ने नई पीढ़ी को हिंदी में ज्ञान और मनोरंजन की दुनिया से जोड़ा है।

3. आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) और हिंदी

AI आधारित सेवाएं और सिस्टम अब हिंदी भाषा को गहराई से समझने और प्रोसेस करने लगे हैं:

- स्पीच टू टेक्स्ट और वॉइस असिस्टेंट्स जैसे Google Assistant और Amazon Alexa अब हिंदी में संवाद करने में सक्षम हैं।
- Natural Language Processing (NLP) तकनीक ने हिंदी में ऑटो-ट्रांसलेशन, चैटबॉट्स, सर्च ऑप्टिमाइजेशन,



और कस्टमर सर्विस को नया आयाम दिया है।

- गूगल ट्रांसलेट और Microsoft Translator जैसे टूल्स अब हिंदी को कई विदेशी भाषाओं से जोड़ने में सक्षम हैं—व्यक्तिगत और व्यावसायिक दोनों स्तरों पर।

4. शिक्षा और ई-लर्निंग में हिंदी का बढ़ता दायरा

- BYJU'S, Unacademy, Khan Academy, और अन्य प्रमुख ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म ने हिंदी में कोर्सेज़ उपलब्ध कराए हैं, जिससे छात्रों को मातृभाषा में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त हो रही है।
- स्वयं (SWAYAM) और दीक्षा (DIKSHA) जैसे सरकारी प्लेटफॉर्म भी हिंदी में मुफ्त डिजिटल शिक्षा प्रदान कर रहे हैं।

5. सरकारी पहलों में हिंदी का डिजिटलीकरण

- डिजिटल इंडिया अभियान ने सरकारी सेवाओं को हिंदी में सुलभ बनाने पर विशेष जोर दिया है—आधार, पैन, पेंशन, बैंकिंग, कृषि आदि से जुड़ी सेवाएं अब हिंदी में उपलब्ध हैं।
- राष्ट्रीय भाषा प्रौद्योगिकी मिशन (NLTM) और भारतीय भाषा प्रौद्योगिकी विकास केंद्र (TDIL) जैसे संस्थान लगातार हिंदी सहित अन्य भारतीय भाषाओं में टेक्नोलॉजी को आगे बढ़ा रहे हैं।

6. हिंदी कंटेंट का बाज़ार और आर्थिक प्रभाव

- हिंदी डिजिटल मीडिया और कंटेंट क्रिएशन एक बड़ा उद्योग बन चुका है। विज्ञापन कंपनियाँ अब हिंदी में मार्केटिंग को प्राथमिकता देती हैं क्योंकि अधिकतर उपभोक्ता हिंदी भाषी हैं।

- हिंदी वेबसाइट्स, ब्लॉग्स, और न्यूज़ पोर्टल्स जैसे दैनिक भास्कर, आज तक, नवभारत टाइम्स—ने डिजिटल क्षेत्र में बड़ी हिस्सेदारी बनाई है।

2. वर्तमान तकनीकी उपकरण और सॉफ्टवेयर

2.1 इनपुट विधियाँ और टाइपिंग टूल्स

हिंदी भाषा का डिजिटल उपयोग तभी संभव है जब उपयोगकर्ता सरलता और दक्षता के साथ हिंदी में टाइप कर सके। यही वह क्षेत्र है जहाँ इनपुट विधियाँ और टाइपिंग टूल्स की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। 1980-90 के दशक में जहाँ हिंदी टाइपिंग केवल कुछ विशेष फॉन्ट्स तक सीमित थी, वहीं वर्तमान में हिंदी में टाइपिंग के लिए कई सहज, स्मार्ट और आधुनिक विकल्प मौजूद हैं। इन टूल्स ने हिंदी में डिजिटल लेखन को जनसामान्य के लिए न केवल आसान बनाया है, बल्कि उसे मोबाइल और इंटरनेट तक भी विस्तार दिया है।

1. इनस्क्रिप्ट कीबोर्ड

इनस्क्रिप्ट भारत सरकार द्वारा विकसित एक मानकीकृत कीबोर्ड लेआउट है, जो हिंदी सहित सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं के लिए उपलब्ध है। यह कीबोर्ड लेआउट Windows, macOS, Linux और Android सहित सभी प्रमुख ऑपरेटिंग सिस्टम्स में अंतर्निर्मित रूप में मौजूद होता है।

विशेषताएँ:

- यूनिकोड सपोर्टेड
- सरकारी एवं शैक्षणिक कार्यों के लिए आदर्श
- टच टाइपिंग के लिए उपयुक्त, लेकिन सीखने में समय लगता है



चुनौतियाँ:

- आम उपयोगकर्ताओं के लिए जटिल प्रतीत हो सकता है
- अंग्रेज़ी कीबोर्ड पर हिंदी अक्षरों की स्थिति याद रखना कठिन

2. फोनेटिक टाइपिंग टूल्स

फोनेटिक टूल्स उपयोगकर्ताओं को रोमन अक्षरों (जैसे: "mera naam raj hai") के माध्यम से हिंदी टाइप करने की सुविधा देते हैं, जिसे टूल स्वचालित रूप से देवनागरी में बदल देता है।

प्रमुख टूल्स:

(i) Google Input Tools

- गूगल का एक शक्तिशाली इनपुट टूल, जो ब्राउज़र एक्सटेंशन के रूप में भी उपलब्ध है
- यूज़र रोमन हिंदी में टाइप करता है, और आउटपुट देवनागरी में मिलता है
- शब्दों के ऑटो-सजेसन और सुधार की सुविधा उपलब्ध

(ii) Indic Input (Microsoft)

- माइक्रोसॉफ्ट द्वारा विकसित टूल, जो Windows OS में इंस्टॉल किया जा सकता है
- फोनेटिक और इनस्क्रिप्ट दोनों विकल्प प्रदान करता है

लाभ:

- बिना किसी विशेष प्रशिक्षण के हिंदी टाइपिंग संभव
- तेजी से सीखने योग्य
- मोबाइल और वेब यूज़ के लिए अत्यंत उपयोगी

3. वर्चुअल कीबोर्ड और ऑनस्क्रीन टाइपिंग

- कई वेबसाइट्स और सरकारी पोर्टल्स हिंदी वर्चुअल कीबोर्ड प्रदान करते हैं, जहाँ यूज़र माउस से क्लिक करके टाइप कर सकता है।
- Bharatvani, Google Translate, और अन्य प्लेटफॉर्म ऐसे कीबोर्ड को शामिल करते हैं।

उपयोगिता:

- टाइपिंग अनुभव नहीं रखने वाले लोगों के लिए सहायक
- धीमा लेकिन सटीक इनपुट का विकल्प

4. मोबाइल कीबोर्ड ऐप्स

आज स्मार्टफोन हिंदी इनपुट के सबसे बड़े प्लेटफॉर्म बन चुके हैं, और इन पर हिंदी टाइपिंग बेहद सरल हो गई है।

(i) Gboard (Google Keyboard)

- फोनेटिक टाइपिंग, इनस्क्रिप्ट विकल्प, वॉयस इनपुट, और स्वाइप सुविधा
- वॉइस टाइपिंग में हिंदी में बोलकर भी लेखन संभव

(ii) Indic Keyboard / Swarachakra

- भारतीय भाषाओं के लिए विकसित विशेष कीबोर्ड, जिसमें हिंदी लेआउट्स मौजूद हैं

(iii) Microsoft SwiftKey

- बहुभाषी टाइपिंग सपोर्ट, शब्द पूर्वानुमान (predictive typing), और स्मार्ट सुझाव

5. वॉइस इनपुट (Speech-to-Text Tools)

वर्तमान तकनीकी युग में वॉइस इनपुट हिंदी



टाइपिंग का नया विकल्प बन चुका है । यह विशेषकर उन उपयोगकर्ताओं के लिए लाभकारी है जो टाइपिंग में दक्ष नहीं हैं ।

- **Google Voice Typing:** Gboard में उपलब्ध यह सुविधा हिंदी में बोलकर लिखने का विकल्प देती है ।
- **Windows Dictation:** Windows 10 और 11 में हिंदी वॉइस इनपुट विकल्प मौजूद है ।
- **AI आधारित वॉयस टूल्स:** Dragon Naturally Speaking और IBM Watson जैसी सेवाएँ भी अब हिंदी को सपोर्ट करने लगी हैं ।

6. ऑनलाइन हिंदी टाइपिंग पोर्टल्स

बिना कोई सॉफ्टवेयर इंस्टॉल किए, कई वेबसाइट्स हिंदी में टाइपिंग की सुविधा ऑनलाइन प्रदान करती हैं:

- www.typingbaba.com
- www.indiatyping.com
- www.easyhindityping.com

ये पोर्टल्स यूजर को फोनेटिक टाइपिंग, इनस्क्रिप्ट अभ्यास, और टाइपिंग टेस्ट जैसी सुविधाएँ देते हैं ।

2.2 प्रमुख हिंदी सॉफ्टवेयर

हिंदी भाषा के डिजिटलीकरण और तकनीकी उपयोग को मजबूत बनाने में कई हिंदी सॉफ्टवेयरों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है । ये सॉफ्टवेयर केवल टाइपिंग तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे वर्ड प्रोसेसिंग, अनुवाद, शिक्षा, ऑडियो-वीडियो संसाधन, कंटेंट निर्माण, और प्रशासनिक कार्यों तक फैले हुए हैं । इन सॉफ्टवेयरों ने हिंदी को कंप्यूटर, मोबाइल, और इंटरनेट पर व्यवहारिक, प्रभावी और सुलभ बनाया है ।

नीचे प्रमुख हिंदी सॉफ्टवेयरों की सूची और उनका

विस्तृत विवरण प्रस्तुत है:

1. लिप्यंतरण और टाइपिंग सॉफ्टवेयर

(i) Google Input Tools

- यह एक फोनेटिक आधारित टाइपिंग टूल है जो हिंदी को रोमन लिपि में लिखे शब्दों के आधार पर देवनागरी में बदलता है ।
- यह ब्राउज़र एक्सटेंशन, विंडोज़ डेस्कटॉप टूल और मोबाइल कीबोर्ड के रूप में उपलब्ध है ।
- हिंदी टाइपिंग को सहज और बिना विशेष प्रशिक्षण के संभव बनाने वाला प्रमुख सॉफ्टवेयर ।

(ii) Akruti

- एक बहुभाषीय सॉफ्टवेयर जो हिंदी सहित 14 भारतीय भाषाओं में टाइपिंग की सुविधा देता है ।
- इसमें इनस्क्रिप्ट, रेमिंगटन, और फोनेटिक कीबोर्ड लेआउट शामिल हैं ।
- विशेषकर सरकारी कार्यालयों और प्रकाशन संस्थानों में उपयोगी ।

(iii) Baraha

- दक्षिण भारत से शुरू हुआ यह सॉफ्टवेयर हिंदी समेत कई भारतीय भाषाओं में टाइपिंग और ट्रांसलिटिरेशन की सुविधा देता है ।
- यूनिकोड और नॉन-यूनिकोड दोनों मोड में कार्य करता है ।

2. वर्ड प्रोसेसिंग और प्रकाशन सॉफ्टवेयर

(i) iLeap

- C-DAC द्वारा विकसित यह सॉफ्टवेयर हिंदी में वर्ड प्रोसेसिंग, ट्रांसलेशन, और प्रकाशन का समर्थन करता है ।



- इसमें देवनागरी के लिए यूनिकोड और अस्की दोनों फॉर्मेट में टाइपिंग की सुविधा है।
 - सरकारी परियोजनाओं और शैक्षणिक संस्थानों में व्यापक उपयोग।
- (ii) Scribus (हिंदी समर्थन के साथ)
- यह एक ओपन-सोर्स डेस्कटॉप पब्लिशिंग सॉफ्टवेयर है जिसमें यूनिकोड सपोर्ट के ज़रिये हिंदी में लेआउट डिज़ाइन किया जा सकता है।
 - पत्रिकाएँ, ब्रोशर, और पुस्तिकाएँ हिंदी में डिज़ाइन करने हेतु उपयोगी।
3. हिंदी अनुवाद और भाषा संसाधन सॉफ्टवेयर
- (i) Google Translate
- विश्व का सबसे लोकप्रिय ट्रांसलेशन टूल जो हिंदी और 100+ भाषाओं के बीच अनुवाद करने में सक्षम है।
 - टेक्स्ट, डॉक्यूमेंट, वेबसाइट, और वॉइस इनपुट पर आधारित अनुवाद सुविधा उपलब्ध।
- (ii) Anuvadakh (C-DAC द्वारा)
- हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद के लिए विकसित एक एआई-आधारित सॉफ्टवेयर।
 - विशेष रूप से ई-गवर्नेंस और सरकारी दस्तावेज़ों के लिए उपयोगी।
- (iii) Samanantar & Anuvadini (AI4Bharat द्वारा)
- न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन पर आधारित ये टूल्स हिंदी समेत कई भारतीय भाषाओं में गुणवत्तापूर्ण अनुवाद की सुविधा प्रदान करते हैं।
4. हिंदी OCR (ऑप्टिकल कैरेक्टर रिकग्निशन) सॉफ्टवेयर
- (i) Tesseract (with Devanagari support)
- ओपन-सोर्स OCR सॉफ्टवेयर जो हिंदी स्कैन की गई छवियों को डिजिटल टेक्स्ट में बदल सकता है।
 - शोध, अभिलेख डिजिटलीकरण, और दस्तावेज़ संग्रह में अत्यंत उपयोगी।
- (ii) LEKHA (C-DAC द्वारा)
- हिंदी हस्तलिखित या मुद्रित पाठ को पहचानकर संपादन योग्य डिजिटल टेक्स्ट में बदलने के लिए।
5. हिंदी स्पीच-टू-टेक्स्ट और वॉइस रिकग्निशन सॉफ्टवेयर
- (i) Google Voice Typing (Gboard)
- मोबाइल पर हिंदी में बोलकर टाइप करने की सुविधा, अत्यधिक लोकप्रिय और उपयोग में आसान।
- (ii) Vakyansh (AI4Bharat)
- हिंदी वॉइस रिकग्निशन और टेक्स्ट-टू-स्पीच टूल जो ओपन-सोर्स है और विभिन्न भाषाई परियोजनाओं में उपयोग हो रहा है।
3. चुनौतियाँ और समाधान
- 3.1 प्रमुख चुनौतियाँ
- हालाँकि हिंदी भाषा ने सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है, फिर भी डिजिटल युग में इसके व्यापक उपयोग और प्रभावी एकीकरण के मार्ग में कई महत्वपूर्ण बाधाएँ आज भी मौजूद हैं। ये चुनौतियाँ



तकनीकी, भाषायी, सामाजिक और संस्थागत स्तर पर फैली हुई हैं। यदि इनका समाधान समय रहते नहीं किया गया, तो हिंदी तकनीकी युग में अपनी पूरी क्षमता का उपयोग नहीं कर पाएगी।

नीचे हिंदी भाषा के तकनीकी विकास में सामने आने वाली प्रमुख चुनौतियाँ विस्तार से दी गई हैं:

1. तकनीकी संसाधनों की कमी

हिंदी के लिए उन्नत तकनीकी संसाधनों की उपलब्धता अब भी सीमित है, विशेषकर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग (NLP), वॉयस रिकग्निशन, और ऑटोमैटिक ट्रांसलेशन जैसे क्षेत्रों में।

- उन्नत टूल्स की तुलना में अंग्रेज़ी में कहीं अधिक संसाधन हैं।
- हिंदी के लिए कस्टम NLP मॉडल और कॉर्पस डेटाबेस का अभाव है।
- डिक्शनरी, स्पेल चेकर, ग्रामर चेक जैसे टूल्स हिंदी में कमज़ोर हैं या सीमित हैं।

2. मानकीकरण की समस्या

अभी भी टाइपिंग लेआउट, अनुवाद शैली, तकनीकी शब्दावली, और वर्तनी में असंगति देखने को मिलती है।

- विभिन्न कीबोर्ड लेआउट्स (इनस्क्रिप्ट, रेमिंगटन, फोनेटिक) के बीच एकरूपता नहीं है।
- सरकारी, शैक्षणिक और निजी क्षेत्र में शब्दों के प्रयोग में विविधता है।
- डिजिटल दस्तावेज़ों में हिंदी की वर्तनी व व्याकरण को लेकर कोई सार्वभौमिक मानक नहीं है।

3. अनुवाद की गुणवत्ता और सटीकता की कमी
हालाँकि ट्रांसलेशन टूल्स उपलब्ध हैं, लेकिन हिंदी में अनुवाद की गुणवत्ता अब भी चुनौतीपूर्ण है।

- मशीन ट्रांसलेशन में भाव, मुहावरे और सामाजिक संदर्भ का सही अनुवाद नहीं हो पाता।
- गूगल ट्रांसलेट जैसे टूल्स में वाक्य संरचना अक्सर कमज़ोर होती है।

4. भाषायी विविधता और बोलियों की चुनौती

हिंदी की विभिन्न बोलियाँ जैसे अवधी, ब्रज, भोजपुरी, मैथिली आदि तकनीकी मानचित्र में उपेक्षित हैं।

- अधिकांश तकनीकी उपकरण केवल मानक हिंदी को समझते हैं।
- क्षेत्रीय शब्दों, उच्चारण और वाक्य संरचनाओं की पहचान और प्रोसेसिंग में कठिनाई होती है।

5. डिजिटल साक्षरता और प्रशिक्षण की कमी

हिंदी भाषी क्षेत्रों में अब भी बड़ी संख्या में लोग तकनीक के प्रति असहज हैं।

- ग्रामीण और अर्धशहरी इलाकों में हिंदी में डिजिटल टूल्स का उपयोग करने का प्रशिक्षण नहीं है।
- बुजुर्ग, महिलाएं, और कमज़ोर वर्ग तकनीकी टूल्स से कटे हुए हैं।
- अधिकांश सॉफ्टवेयर या वेबसाइट का यूज़र इंटरफ़ेस अंग्रेज़ी में होता है, जिससे हिंदी यूज़र्स को परेशानी होती है।

4. भविष्य की संभावनाएँ

हिंदी भाषा की तकनीकी यात्रा अभी पूर्ण नहीं हुई है - बल्कि यह अभी गति पकड़ रही है। पिछले दो दशकों में डिजिटल क्षेत्र में हिंदी की उपस्थिति ने यह सिद्ध कर दिया है कि यदि सही दिशा, संसाधन और समर्थन मिले, तो हिंदी वैश्विक डिजिटल जगत में एक प्रमुख भाषा बन सकती है। भविष्य में हिंदी न केवल एक संचार भाषा



के रूप में, बल्कि नवाचार, अनुसंधान, शिक्षा, व्यवसाय, और प्रशासन के क्षेत्र में भी तकनीकी माध्यम की एक सशक्त भाषा बनकर उभर सकती है।

हिंदी भाषा के लिए सूचना प्रौद्योगिकी का भविष्य अपार संभावनाओं से भरा है। तकनीक अब सिर्फ अंग्रेजी की बपौती नहीं रही। जैसे-जैसे तकनीक आमजन तक पहुँचेगी, वैसे-वैसे हिंदी का तकनीकी विकास और भी तेज़ होगा। यह केवल भाषाई सशक्तिकरण नहीं, बल्कि सामाजिक समानता और डिजिटल स्वतंत्रता का मार्ग प्रशस्त करेगा। ज़रूरत है - समन्वित प्रयासों की: सरकार, निजी क्षेत्र, तकनीकी संस्थान, भाषा विशेषज्ञ, और आम नागरिक सभी मिलकर हिंदी को तकनीकी विश्व की एक मजबूत और अभिनव भाषा बना सकते हैं।

5. निष्कर्ष

हिंदी भाषा और सूचना प्रौद्योगिकी का संबंध केवल एक भाषायी प्रयोग तक सीमित नहीं है, बल्कि यह 21वीं सदी के भारत के डिजिटल भविष्य की दिशा तय करने वाला एक निर्णायक पहलू है। बीते चार दशकों की यात्रा में हिंदी ने तकनीकी क्षेत्र में धीरे-धीरे लेकिन लगातार प्रगति की है—1980 के दशक के प्रारंभिक प्रयोगों से लेकर यूनिकोड क्रांति, स्मार्टफोन युग, सोशल मीडिया, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, और वॉइस टेक्नोलॉजी तक। यह यात्रा न केवल तकनीकी बदलावों की कहानी है, बल्कि एक सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन की भी दास्तान है जिसमें भाषा ने तकनीक को जनसामान्य के लिए सुलभ बनाने का माध्यम बनकर अपनी भूमिका निभाई है।

वर्तमान में, हिंदी डिजिटल युग की मुख्यधारा में शामिल हो चुकी है। अब यह केवल साहित्य, शिक्षा या मीडिया तक सीमित नहीं, बल्कि प्रशासन, चिकित्सा, विज्ञान, वाणिज्य, कृषि और न्याय प्रणाली जैसे गंभीर क्षेत्रों में भी अपनी मौजूदगी दर्ज करा रही है। हिंदी में टाइपिंग टूल्स, वर्ड प्रोसेसिंग सॉफ्टवेयर, वॉइस इनपुट, अनुवाद टूल्स और मोबाइल ऐप्स की उपलब्धता ने इसे तकनीक से जोड़ने का कार्य सुगम और व्यापक बनाया है।

भविष्य की संभावनाएँ अत्यंत उत्साहवर्धक हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मशीन लर्निंग, नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग और वॉइस तकनीक जैसे क्षेत्रों में हिंदी की उपस्थिति गहराने जा रही है। "डिजिटल इंडिया" और "मातृभाषा में शिक्षा" जैसी सरकारी पहलों के साथ मिलकर तकनीकी हिंदी एक क्रांतिकारी बदलाव का माध्यम बन सकती है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि हिंदी और सूचना प्रौद्योगिकी का मिलन केवल तकनीकी सशक्तिकरण नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक पुनर्जागरण है। यह भारत को एक ऐसे डिजिटल समाज में बदलने की दिशा में कदम है, जहाँ हर नागरिक अपनी भाषा में तकनीक का उपयोग कर सके, सशक्त बन सके, और वैश्विक स्तर पर भागीदारी निभा सके। यह केवल भाषा की बात नहीं - यह समानता, पहुँच, और भविष्य की बात है।

संदर्भ

1. "हिंदी और सूचना प्रौद्योगिकी" - डॉ. रमाशंकर शुक्ल, प्रकाशक: केंद्रीय हिंदी निदेशालय
2. "भारतीय भाषाएँ और सूचना प्रौद्योगिकी" - प्रो. वी. एन. झा, भारतीय भाषा संस्थान
3. "हिंदी कंप्यूटिंग: एक परिचय" - डॉ. ओमप्रकाश सिंह
4. "भारतीय भाषाओं में भाषा संसाधन और टेक्नोलॉजी" - प्रो. पुष्पिंदर पाल सिंह
5. C-DAC (Centre for Development of Advanced Computing) - भाषा तकनीक परियोजनाएँ
वेबसाइट: www.cdac.in
6. राष्ट्रीय भाषा प्रौद्योगिकी मिशन (NLTM) - www.nltm.ai
7. डिजिटल इंडिया कार्यक्रम — भारत सरकार
8. वेबसाइट: www.digitalindia.gov.in





रक्षा विज्ञान में हिंदी की सार्थकता



अमित कुमार पटेल

सारांश

यह लेख रक्षा विज्ञान के बहुआयामी क्षेत्र में राजभाषा हिंदी की प्रासंगिकता, आवश्यकता एवं व्यावहारिक उपयोगिता का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अंग्रेजी के अबाध वर्चस्व वाले इस क्षेत्र में, हिंदी की भूमिका को अक्सर केवल औपचारिक राजभाषा नीति तक सीमित माना जाता रहा है। किंतु यह अध्ययन इस दृष्टिकोण को चुनौती देते हुए तर्क प्रस्तुत करता है कि रणनीतिक स्वायत्तता, सैन्य दक्षता, तकनीकी स्वावलंबन, संचार सुरक्षा और राष्ट्रीय मनोबल जैसे मूलभूत सुरक्षा सिद्धांतों की प्राप्ति के लिए हिंदी का सार्थक एवं व्यवस्थित प्रयोग एक अनिवार्य रणनीतिक आवश्यकता है।

लेख रक्षा अनुसंधान, प्रशिक्षण, संचालन, प्रौद्योगिकी विकास और साइबर सुरक्षा जैसे उपक्षेत्रों में हिंदी के समावेश से प्राप्त होने वाले लाभों को स्पष्ट करता है। साथ ही, यह मानकीकृत तकनीकी शब्दावली के अभाव, अंतर्राष्ट्रीय सहयोग की जटिलताओं और स्थापित मानसिकता जैसी गंभीर चुनौतियों को भी रेखांकित करता है। अंत में, एक व्यावहारिक रोडमैप की रूपरेखा प्रस्तुत की गई है, जिसमें एक स्पष्ट राष्ट्रीय नीति, गतिशील शब्दावली विकास, द्विभाषी प्रशिक्षण प्रणाली,

प्रोत्साहन तंत्र और भाषा प्रौद्योगिकी के समन्वय पर बल दिया गया है। निष्कर्षतः, यह लेख इस तथ्य को प्रमाणित करता है कि रक्षा विज्ञान में हिंदी का एकीकरण केवल एक सांस्कृतिक उद्देश्य न होकर, भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा संरचना को अधिक मजबूत, स्वावलंबी और समावेशी बनाने की दिशा में एक सुविचारित रणनीतिक निवेश है।

प्रस्तावना

रक्षा विज्ञान आधुनिक राष्ट्र-राज्यों की सुरक्षा एवं संप्रभुता का आधारस्तंभ है। इस क्षेत्र में तकनीकी अनुसंधान, रणनीतिक योजना, सैन्य प्रशिक्षण एवं संचालन जैसे अत्यंत संवेदनशील एवं जटिल कार्य समाहित हैं। परंपरागत रूप से अंग्रेजी भाषा ने इस क्षेत्र पर वर्चस्व बनाए रखा है। किंतु, भारत जैसे बहुभाषी राष्ट्र के संदर्भ में, राष्ट्रीय सुरक्षा के व्यापक उद्देश्यों की पूर्ति एवं स्वावलंबन के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि रक्षा विज्ञान के क्षेत्र में हिंदी सहित भारतीय भाषाओं की सार्थक भूमिका का विश्लेषण किया जाए। यह शोधपत्र रक्षा विज्ञान के विविध आयामों में हिंदी के प्रयोग की आवश्यकता, चुनौतियों एवं संभावनाओं पर विचार करता है।

रक्षा विज्ञान में हिंदी की आवश्यकता एवं सार्थकता

- रणनीतिक स्वायत्तता एवं आत्मनिर्भरता: रक्षा अनुसंधान एवं विकास (आर एंड डी), तकनीकी दस्तावेजीकरण, और प्रोटोकॉल में हिंदी के प्रयोग से विदेशी भाषा पर निर्भरता कम होगी। यह 'आत्मनिर्भर भारत' (Atmanirbhar Bharat) की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम होगा, जिससे



संवेदनशील सूचनाओं की सुरक्षा भी बढ़ेगी।

2. **सैन्य बल की दक्षता एवं संचार:** भारतीय सशस्त्र बलों की अधिकांश रैंक एवं फाइल की मातृभाषा हिंदी या अन्य भारतीय भाषाएँ हैं। तकनीकी प्रशिक्षण, संचालन निर्देश, उपकरणों के मैनुअल और रणनीतिक संवाद को हिंदी में उपलब्ध कराने से आदेशों की समझ, निष्पादन दक्षता और त्वरित निर्णय-क्षमता में वृद्धि होगी। यह संचार में होने वाली त्रुटियों को भी कम करेगा।
3. **राष्ट्रीय एकता एवं मनोबल:** हिंदी भारत की राजभाषा एवं संपर्क भाषा है। रक्षा क्षेत्र में इसके प्रयोग से सैनिकों में राष्ट्रीय पहचान और अपनत्व की भावना मजबूत होती है। यह मनोबल वृद्धि का एक शक्तिशाली साधन है।
4. **गोपनीयता एवं साइबर सुरक्षा:** अंग्रेजी एक वैश्विक भाषा है, जिससे साइबर जासूसी और सूचना लीक का खतरा अधिक रहता है। संवेदनशील रक्षा संचार और कोडिंग में हिंदी के प्रयोग से गोपनीयता बढ़ाने में मदद मिल सकती है, क्योंकि इसकी समझ वैश्विक स्तर पर सीमित है।
5. **स्वदेशी प्रौद्योगिकी विकास को गति:** डीआरडीओ (DRDO) और अन्य रक्षा अनुसंधान संस्थानों में हिंदी माध्यम से तकनीकी ज्ञान का प्रसार, शोधार्थियों और इंजीनियरों के एक बड़े वर्ग को सशक्त बना सकता है। इससे स्वदेशी डिजाइन, नवाचार और तकनीकी समाधानों को बढ़ावा मिलेगा।
6. **सामरिक एवं तकनीकी शब्दावली का विकास:** रक्षा विज्ञान की विशिष्ट एवं जटिल अवधारणाओं के लिए हिंदी में मानक तकनीकी शब्दावली (Terminology) का विकास आवश्यक है। इससे अवधारणाओं की स्पष्टता, सटीक अनुवाद और ज्ञान के हस्तांतरण में सहायता मिलेगी।

चुनौतियाँ

1. **मानकीकृत तकनीकी शब्दावली का अभाव:** रक्षा विज्ञान के अत्याधुनिक क्षेत्रों (जैसे- साइबर वारफेयर, क्वांटम कम्प्यूटिंग, ड्रोन तकनीक) के लिए हिंदी में समृद्ध एवं सर्वमान्य शब्दकोश का निर्माण एक बड़ी चुनौती है।
2. **अंतर्राष्ट्रीय सहयोग में व्यावहारिक कठिनाई:** रक्षा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग एवं समझौते अंग्रेजी में ही होते हैं। हिंदी को पूर्णतः लागू करने से इनमें बाधा उत्पन्न हो सकती है।
3. **मानसिकता एवं आदत:** दशकों से अंग्रेजी में प्रशिक्षित रक्षा प्रतिष्ठानों और वैज्ञानिक समुदाय में भाषाई परिवर्तन के प्रति एक रूढ़िवादिता एवं अनिच्छा पाई जाती है।
4. **द्विभाषी शिक्षा प्रणाली का अभाव:** रक्षा शिक्षण संस्थानों में हिंदी माध्यम से तकनीकी शिक्षा की व्यवस्था अपर्याप्त है।

समाधान के सुझाव

1. **राष्ट्रीय स्तर पर नीति निर्माण:** रक्षा मंत्रालय द्वारा एक स्पष्ट एवं चरणबद्ध "रक्षा विज्ञान हिंदी भाषा नीति" बनाई जाए, जिसमें तकनीकी दस्तावेजीकरण, प्रशिक्षण पाठ्यक्रम और आंतरिक संचार में हिंदी के उपयोग का रोडमैप हो।
2. **शब्दावली निर्माण एवं प्रसार:** डीआरडीओ, सेना शिक्षा कोर और हिंदी तकनीकी आयोग के समन्वय से एक व्यापक, अद्यतन "रक्षा विज्ञान तकनीकी शब्दकोश" तैयार किया जाए और उसे डिजिटल प्लेटफॉर्म पर सर्वसुलभ बनाया जाए।
3. **प्रशिक्षण एवं क्षमता निर्माण:** रक्षा कर्मियों, वैज्ञानिकों और इंजीनियरों के लिए विशेष पाठ्यक्रम शुरू किए जाएँ, जो उन्हें हिंदी तकनीकी भाषा में दक्ष बनाएँ। रक्षा संस्थानों में द्विभाषी शिक्षण को



प्रोत्साहन दिया जाए।

4. **प्रोत्साहन योजनाएँ:** रक्षा विज्ञान से संबंधित हिंदी में गुणवत्तापूर्ण शोधपत्र, पुस्तकें, तकनीकी मैनुअल लिखने वालों को पुरस्कार एवं मान्यता दी जाए।
5. **तकनीकी सहायता:** मशीन अनुवाद (AI Translation) और भाषा प्रौद्योगिकी (Language Technology) के विकास में निवेश किया जाए, विशेष रूप से हिंदी और अंग्रेजी के बीच तकनीकी सामग्री के सटीक अनुवाद के लिए।

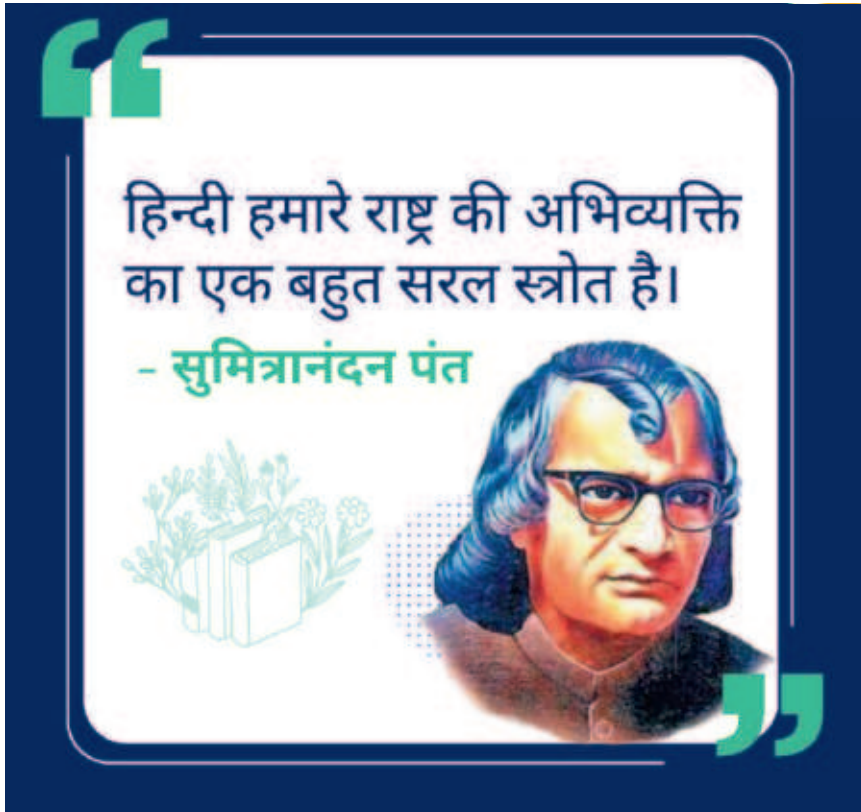
निष्कर्ष

रक्षा विज्ञान में हिंदी की सार्थकता केवल भाषाई गौरव का प्रश्न नहीं है, अपितु यह राष्ट्रीय सुरक्षा, सैन्य दक्षता, तकनीकी स्वावलंबन और राष्ट्रीय एकता से जुड़ा एक

रणनीतिक विषय है। इस दिशा में आने वाली चुनौतियाँ अवश्य हैं, किंतु एक सुनियोजित, चरणबद्ध और वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाकर इन पर विजय पाई जा सकती है। हिंदी को रक्षा विज्ञान की भाषा बनाने का अर्थ है, ज्ञान को अधिक समावेशी बनाना, सैन्य बल की कार्यकुशलता बढ़ाना और देश की रक्षा क्षमताओं को एक नई दिशा प्रदान करना। यह एक दीर्घकालिक परियोजना है, जिसकी सफलता राष्ट्रहित में है।

आभार

लेखक सतत प्रोत्साहन एवं मार्गदर्शन के लिए यंत्र अनुसंधान एवं विकास संस्थान के डॉ. अजय कुमार, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, डॉ. एल. एम. पन्त, वैज्ञानिक-जी एवं समूह निदेशक तथा राजभाषा अनुभाग के सभी अधिकारियों का आभार प्रकट करते हैं।





उत्तराखण्ड की त्रासदी और हमारा कर्तव्य



अनुज कुमार रूहेला

भारत प्रकृति से समृद्ध देश है। हिमालय की चोटियाँ, बहती नदियाँ, हरे-भरे जंगल और उपजाऊ खेत हमारी पहचान हैं। लेकिन आजकल यही प्रकृति हमें चेतावनी भी दे रही है। हाल ही में हुई अत्यधिक वर्षा ने पूरे देश को चिंता में डाल दिया है।

सबसे ज्यादा असर उत्तराखण्ड में देखने को मिला। पहाड़ों का यह सुंदर प्रदेश आज त्रासदी का चेहरा बन गया है। सड़कों पर पानी और मलबा है, कई गाँव मिट गए, हजारों लोग बेघर हो गए और कई मासूम जानें चली गईं।

ये हालात केवल किसी एक राज्य की समस्या नहीं हैं, बल्कि पूरे भारत के लिए चेतावनी हैं।

क्या हुआ उत्तराखण्ड में?

- तेज़ और लगातार बारिश ने नदियों को उफान पर ला दिया।
- जगह-जगह भूस्खलन हुआ, जिससे सड़कें टूट गईं और पुल बह गए।
- मंदिरों और धार्मिक स्थलों पर गए यात्री फँस गए।
- किसान अपनी फसल और पशुधन दोनों खो बैठे। ऐसा लग रहा था जैसे पहाड़ों ने अचानक अपना संतुलन खो दिया हो।

बारिश इतनी ज्यादा क्यों हो रही है?

बहुत से लोग सोचते हैं कि बारिश तो प्राकृतिक घटना है, इसमें इंसान का क्या दोष? लेकिन सच्चाई यह है कि हमारी गतिविधियों ने भी इस संकट को और बड़ा बना दिया है।

कारण

1. **जलवायु परिवर्तन** – धरती का तापमान बढ़ रहा है। इससे बादल ज्यादा नमी लेकर आते हैं और अचानक बहुत तेज़ बारिश कर देते हैं।
2. **पेड़ों की कटाई** – जंगल कम हो रहे हैं। पेड़ पानी सोखते हैं और मिट्टी को थामे रखते हैं। बिना पेड़ों के बारिश का पानी सीधा ढलानों से नीचे आता है और भूस्खलन कराता है।
3. **अवैज्ञानिक निर्माण** – पहाड़ों पर होटल, सड़कें और कॉलोनियाँ बिना सोचे-समझे बनाई जा रही हैं। इससे पहाड़ कमजोर हो रहे हैं।
4. **नदियों के रास्ते पर कब्ज़ा** – हमने नदियों के किनारे घर और बाजार खड़े कर दिए। जब पानी ज्यादा हुआ तो नदी ने अपना रास्ता बदल लिया और सब बहा ले गई।
5. **ग्लेशियर और बादल फटना** – अचानक लाखों टन पानी नीचे गिर जाता है और पूरी घाटी डूब जाती है।

अभी हमें क्या करना चाहिए?

1. सबसे पहले प्रभावित लोगों की मदद करना हमारी जिम्मेदारी है।
 - सुरक्षित जगह पर पहुँचाना,
 - उन्हें खाना, कपड़ा और दवा देना।
2. सरकार और स्थानीय प्रशासन को तेज़ राहत और



बचाव अभियान चलाना चाहिए।

3. डॉक्टरों और स्वयंसेवी संस्थाओं को गाँव-गाँव जाकर इलाज करना होगा।
4. जिनके घर टूट गए हैं, उनके लिए अस्थायी आश्रय और बाद में स्थायी मकान बनवाना जरूरी है।

लंबे समय के लिए हमें क्या करना होगा?

दोस्तों, केवल राहत बांटने से समस्या हल नहीं होगी। हमें अपनी सोच और जीवनशैली बदलनी होगी।

1. पेड़ लगाओ – जीवन बचाओ
 - जितना हो सके पेड़ लगाएँ और जंगलों की रक्षा करें।
 - स्थानीय लोग मिलकर जंगलों को बचाएँ, तभी पहाड़ सुरक्षित रहेंगे।
2. समझदारी से निर्माण
 - पहाड़ों पर सड़क, होटल और इमारतें बनाने से पहले यह देखना जरूरी है कि जमीन इतनी क्षमता रखती भी है या नहीं।
 - सरकार को कड़े नियम बनाने होंगे।
3. तकनीक का सही इस्तेमाल
 - आधुनिक मशीनों और सैटेलाइट से मौसम का सटीक पूर्वानुमान निकालें।
 - मोबाइल पर अलर्ट भेजें ताकि लोग समय रहते सुरक्षित जगह पहुँच सकें।
4. नदियों को खुला छोड़ें
 - नदियों का रास्ता कभी मत रोके।
 - छोटे-छोटे बाँध और जलाशय बनाकर पानी को रोके और ज़रूरत पड़ने पर इस्तेमाल करें।
5. जन-जागरूकता
 - हर गाँव और कस्बे में आपदा प्रबंधन की ट्रेनिंग होनी चाहिए।
 - स्कूलों में बच्चों को सिखाएँ कि बाढ़ या भूकंप जैसी आपदा आने पर क्या करना है।

6. पर्यावरण-हितैषी पर्यटन

- उत्तराखंड और हिमालयी राज्यों में पर्यटन ज़रूरी है, लेकिन भीड़ पर नियंत्रण होना चाहिए।
- जितने लोग पहाड़ सह सकते हैं, उतने ही लोग जाएँ।

भविष्य की योजना : हम सबकी जिम्मेदारी

अगर हमें आने वाली पीढ़ियों को सुरक्षित भारत देना है तो हमें अभी से कदम उठाने होंगे।

1. विकास और पर्यावरण का संतुलन बनाना।
2. कार्बन उत्सर्जन घटाकर जलवायु परिवर्तन की रफ्तार कम करना।
3. गाँव-गाँव में आपदा प्रबंधन दल तैयार करना।
4. आपदा के बाद पुनर्वास की तेज़ व्यवस्था करना।
5. हर नागरिक का कर्तव्य है कि वह अपने आसपास पेड़ लगाएँ और पानी की बर्बादी रोके।

निष्कर्ष

उत्तराखंड की यह त्रासदी हमें एक बड़ा संदेश देती है — **प्रकृति के साथ खिलवाड़ मत करो।**

अगर हम समय रहते नहीं जागे तो ऐसी आपदाएँ बार-बार आएँगी और हमारी मेहनत से बनी सभ्यता को मिटा देंगी।

लेकिन अगर हम मिलकर प्रकृति की रक्षा करेंगे, पेड़ लगाएंगे, नदियों को उनका हक देंगे और समझदारी से विकास करेंगे—तो हम आने वाली पीढ़ियों को एक सुरक्षित और खुशहाल भारत दे सकते हैं।

“प्रकृति के साथ संतुलन ही भविष्य की सुरक्षा है।”



यात्रा भीतर की : देहरादून से कामाख्या तक (एक आत्मीय यात्रावृत्त)



प्रकाश नीरव

प्रस्तावना

डायरी केवल तिथियों का संकलन नहीं होती, वह स्मृतियों का जीवंत कोष है — जहाँ समय थम जाता है, और आत्मा बीते पलों की हल्की धुन पर नृत्य करती है। यह संस्मरण, उसी तिरोहित संगीत की एक प्रतिध्वनि है।

जब कोई यात्रा शुरू होती है, तो हम समझते हैं कि हम बाहर की दुनिया को देखने जा रहे हैं - शहर, सड़कें, नदी, पर्वत, मंदिर, मेले, और चेहरे। पर हर यात्रा के पीछे एक मौन यात्रा और भी चलती रहती है - वह, जो हमारे भीतर घटती है। वह यात्रा, जो स्मृतियों को बुनती है, आत्मा को छूती है, और जीवन के अनकहे प्रश्नों से संवाद करती है। "यात्रा भीतर की: देहरादून से कामाख्या तक" - यह उसी अदृश्य, अव्यक्त यात्रा का लेखा है। यह केवल हवाई अड्डों, होटलों, संगोष्ठियों, घाटों और मंदिरों का वृत्तांत नहीं है - यह उनके बीच बहते हुए क्षणों की बात है, जो कभी आँखों से ओझल हो जाते हैं, लेकिन भीतर उतरकर हमेशा के लिए बस जाते हैं। इस यात्रावृत्त में, असम के सांस्कृतिक रंग हैं, ब्रह्मपुत्र की मौन गूँज है, माँ कामाख्या की अदृश्य शक्ति है, और काजीरंगा की धरती पर पसरा हुआ आदिम

जीवन का स्वर है। तेजपुर की हरियाली में छुपे ऐतिहासिक संदर्भ हैं, चित्रलेखा उद्यान की शांति है, और माँ काली की उपस्थिति में व्याप्त वह रहस्य है जिसे शब्दों में बाँध पाना कठिन है।

यह संस्मरण नहीं, एक मन का मानचित्र है - जिसमें भावनाएँ दिशाओं की तरह हैं, और अनुभव रास्तों की तरह। इसमें कुछ क्षण हैं जो थाली में परोसे भोजन की सादगी में चमकते हैं, कुछ उस वक्त की पीड़ा में जब अपनी बात स्क्रीन पर नहीं दिखा सके, और कुछ उस अलौकिक संतोष में जब माँ के दर्शन हुए। यह एक ऐसी डायरी है, जिसमें कलम से अधिक दिल ने लिखा है। इसका हर पृष्ठ यात्रा की नहीं, जीवन की पुनर्खोज है।

11 दिसंबर 2024

सुबह की पहली साँस कुछ अलग थी - जैसे सपनों और जागरण के बीच की कोई महीन सी परत धीरे-धीरे उधड़ रही हो। नींद की खामोशी में एक अंतर्नाद था, जो कह रहा था कि आज कोई साधारण दिन नहीं है। आँखें खुलीं तो बाहर की हवा में सर्दियों की परिचित गंध तैर रही थी - वही देहरादून की हवा, जो हर बार किसी पहाड़ी गीत की तरह मन को छू जाती है।





संकल्प

2025-26 | अंक - 37



हमारा पहला पड़ाव था - जॉली ग्रांट एयरपोर्ट, जो देहरादून और ऋषिकेश के बीच हिमालय की छाया में बसा एक शांत, संकोच से भरा, लेकिन सजीव हवाई अड्डा है। इसकी दीवारों और प्रांगण में वो सादगी है जो उत्तराखंड की आत्मा को प्रतिबिंबित करती है - अनावश्यक शोर से दूर, प्रकृति के समीप। फ्लाइट जब हवा में उठी, तो खिड़की से नीचे झाँका - पहाड़ों की लहरदार परतें जैसे कोई अधखुली किताब हों, जिनमें जीवन के कई रहस्य छुपे हों। भीतर एक बेचैनी थी - यात्रा को लेकर नहीं, बल्कि उस अज्ञात के प्रति, जो इस यात्रा में मिलने वाला था। दो घंटे तीस मिनट की उड़ान के बाद गुवाहाटी एयरपोर्ट पर उतरना एक अचानक बदलाव जैसा था। लोकप्रिया गोपीनाथ बोरदोलोई अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा - नाम जितना भव्य, अनुभव उतना ही उलझा हुआ। बाहर हवा नम थी, भीतर उमस थी, और चारों ओर अनजान चेहरों का शोर। लेकिन उस शोर में भी एक संगीत था - असम की बोली, उसके पहनावे, और उसकी चाल में बसी अपनी ही गति।



मेरे साथ थे मेरे दो सहयात्री - एक गुरु तुल्य, श्री त्रिलोक सिंह जी, जिनकी उपस्थिति में हमेशा एक स्नेहिल अनुशासन रहता है, और दूसरे - वरिष्ठ अधिकारी श्री कृष्ण मुरारी जी, जिनका अनुभव अपने आप में एक ग्रंथ है। हवाई अड्डे से बाहर आते ही एक टैक्सी ली। हम तेजपुर की ओर निकले। सड़कें शहर से बाहर निकलती चली गईं और प्रकृति की खुली बाँहों में समा गईं। दूर क्षितिज पर कभी-कभी ब्रह्मपुत्र नदी की एक झलक मिलती - विशाल, गंभीर, और रहस्य में डूबी हुई ब्रह्मपुत्र सिर्फ जलधारा नहीं है, वह एक संस्कृति की सजीव स्मृति है - जिसके घाटों पर समय रुका है, और जिसकी लहरों में पुरखों की साँसें बहती हैं।

तेजपुर पहुँचने पर होटल में कमरा साझा करने की व्यवस्था थी - मैं और त्रिलोक जी एक ही कक्ष में ठहरे। यह बाँटना बोज़ नहीं, बल्कि एक अलिखित संवाद था - गुरु और शिष्य के बीच की एक चुप्पी, जिसमें बहुत कुछ कहा जाता है बिना बोले।



शाम को, जब शरीर यात्रा की थकान से झूल रहा था, तब हमने निर्णय लिया - भोजन कहीं पास के ढाबे में करेंगे। वह ढाबा, जो बाहर से सामान्य और भीतर से अब्दुत था। थाली में परोसा गया भोजन कोई भोज्य पदार्थ नहीं, स्मृति का स्वाद था - सरसों की महक में छिपा खेतों का जीवन, चटनी में पीसा हुआ गाँव, दाल में उबली हुई माँ की परवाह, और पेड़े में बसी वह मिठास जो शहरों में कभी नहीं मिलती।



हम पेट ही नहीं, मन भरकर खा रहे थे । और हँसी के साथ यह अनुभव जैसे और भी स्वादिष्ट होता गया । लेकिन, शायद हर अनुभव हर किसी को नहीं मिलता । श्री कृष्ण मुरारी जी, जो हमसे अलग ग्रैंड होटल में ठहरे थे, इस अनुभव से अछूते रह गए । उन्हें परोसा गया एक संयमित, औपचारिक भोजन - जो शायद स्वाद में उत्तम हो, लेकिन आत्मा को न छू सके । पाँच सितारा खाने में वह बात कहाँ, जो मिट्टी के चूल्हे में बनी दाल में होती है । उस रात, जब हम बिस्तर पर लेटे, तब बाहर की हवा में ठंड और भीतर की बातों में गर्माहट थी । हम हँसे, बोले, और कल की संगोष्ठी की चर्चा करते-करते एक मीठी थकान में सो गए ।

12-13 दिसंबर 2024

सुबह हल्के उजाले के साथ आँख खुली — होटल

की खिड़की से छनकर आती रोशनी में तेजपुर का कोई धुँधलाया चेहरा झाँक रहा था । बाहर हलकी-सी ठंड थी और भीतर एक उत्सुकता - आज राजभाषा सेमिनार था, एक ऐसा अवसर जहाँ शब्दों से संवाद नहीं, आत्मा से संवाद की अपेक्षा रहती है । डीआरएल तेजपुर द्वारा आयोजित संगोष्ठी एक भव्य होटल के तृतीय तल पर थी - न शोर, न भीड़, बस एक गंभीर, सौम्य वातावरण । ऐसा लगा मानो शब्दों को भी सज-सँवर कर बोलने की अनुमति हो । व्यवस्थाएँ अनुशासित थीं - जैसे कोई कविता अपने छंद में बैधी हो ।

कार्यक्रम प्रारंभ हुआ । वक्ता मंच पर आए, सरस्वती वंदना की ध्वनि ने एक संस्कारी कंपन से सभा को बाँध दिया । फिर मेरा भी समय आया । PPT तैयार थी - रंगों, आँकड़ों और तर्कों से सजी । लेकिन नियति को शायद मेरा मुँह से बोलना ही स्वीकार था । तकनीकी कारणों से स्क्रीन मौन रही - और तब, मुझे स्वयं को बोलने देना पड़ा । शब्द, मन से सीधे निकलकर होंठों पर आए - बिना माध्यम, बिना सजावट । और शायद वही प्रस्तुति अधिक सजीव हो गई । शुद्ध विचार, बिना परदे के । समय अल्प था, पर उस क्षण में जो कहा गया, वह किसी PPT से अधिक मेरा था ।





कार्यक्रम के उपरांत बाहर निकलते ही ठंडी हवा ने जैसे सारी औपचारिकताओं को बहा दिया । अब हम थे, और थी तेजपुर की खुली दोपहर ।

हम पहुँचे चित्रलेखा गार्डन - नाम में ही एक कविता है, और परिसर में जैसे वह कविता हर पत्ती, हर झील, हर मूर्ति के भीतर सांस ले रही थी । इस उद्यान में केवल हरियाली नहीं, काल का जीवंत स्पर्श बसा हुआ है । कहते हैं, कभी महाभारत काल में अर्जुन और भगवान श्रीकृष्ण यहाँ कुछ समय के लिए रुके थे - और जब इस धरती पर देवता विश्राम करते हैं, तब वह धरती कथा बन जाती है ।

किनारे पर एक शांत शिव मंदिर - मंदिर की सीढ़ियों पर बैठकर लगता था जैसे समय कुछ पल के लिए ठहर गया हो । लेकिन इस गार्डन का वास्तविक जादू इसके नाम की आत्मा में है - चित्रलेखा, जो केवल एक मिथकीय पात्र नहीं, बल्कि इस शहर की पहचान का धड़कता हृदय है । यह वही चित्रलेखा थी - बाणासुर की बेटी उषा की सहेली, जिसने अपने जादुई चित्रों से इतिहास को प्रेमकथा बना दिया । यह तेजपुर की आत्मा है - जहाँ हर निवासी उषा और अनिरुद्ध की प्रेमगाथा को अपने बचपन की कहानियों में सुनता है, और हर गली उस कथा की परछाई लिए चलती है ।



तालाब के मध्य एक नाव - धीमे-धीमे लहरों से हिलती हुई, जैसे किसी पुरानी स्मृति को दोहराती हो ।

कथा कहती है कि यहाँ का शासन कभी बाणासुर के अधीन था - असुरों की एक शक्तिशाली जाति, और स्वयं प्रह्लाद के वंशज । बाणासुर की पुत्री उषा - एक अत्यंत सुंदर और संवेदनशील युवती - अग्निगढ़ की पहाड़ियों पर स्थित एक दुर्ग में रहती थी । अग्निगढ़ - जिसका अर्थ ही है "आग का किला" - चारों ओर से अग्नि की लपटों से रक्षित, जहाँ किसी भी पुरुष का प्रवेश निषिद्ध था ।





एक दिन उषा ने एक कमल-नयन, कृष्णवर्णीय युवक को अपने स्वप्न में देखा । स्वप्न इतना सजीव था कि जागते ही उसका हृदय टूट गया - क्योंकि वह नहीं जानती थी कि वह युवक कौन था । उसकी यह पीड़ा देख, उसकी प्रिय सहेली चित्रलेखा, जो न केवल एक अद्भुत चित्रकार थी बल्कि तांत्रिक शक्तियों से भी संपन्न थी, सामने आई । चित्रलेखा ने अनेक देवताओं, असुरों और वीरों के चित्र बनाकर उषा के सामने रखे - और जब उसने श्रीकृष्ण का चित्र बनाया, तब उषा का चेहरा सिहर उठा, “यह वही है... यह वही है मेरे स्वप्न का पुरुष!” चित्रलेखा ने अपनी सिद्धियों का उपयोग कर द्वारका में सो रहे अनिरुद्ध - श्रीकृष्ण के पोत्र - को अग्निगढ़ में उषा के कक्ष में पहुँचा दिया । वहाँ, प्रेम जैसे जन्मों की प्रतीक्षा करता आया हो । अनिरुद्ध और उषा का मिलन तेजपुर की हवा में घुल गया । दोनों प्रेम में इतने लीन हुए कि समय का बोध ही खो बैठा । परन्तु प्रेम का यह रहस्य अधिक दिन छुप न सका । बाणासुर ने जब अपनी बेटी के कक्ष में अनिरुद्ध को पाया, तो उसका क्रोध अग्नि से भी प्रचंड हो उठा ।

कई कथाओं में यह कहा गया है कि बाण ने अनिरुद्ध को बंदी बनाकर उसे नागरस्सियों (नागपास) से बाँध दिया - एक ऐसा बंधन, जिसे केवल महान योद्धा या स्वयं भगवान ही तोड़ सकते थे ।

फिर प्रारंभ हुआ हरि-हर का युद्ध - एक ऐसा महायुद्ध जिसमें एक ओर थे भगवान शिव, जो बाणासुर के आराध्य और रक्षक थे, और दूसरी ओर भगवान श्रीकृष्ण, जो अनिरुद्ध के पक्ष में थे । यह युद्ध तेजपुर की धरती पर हुआ - कहते हैं युद्ध इतना विकराल था कि देवताओं तक ने दृष्टि फेर ली । पर अंततः, प्रेम और धर्म की जीत हुई । शिव ने युद्ध रोकने का संकेत दिया और बाण को क्षमा करते हुए, उषा और अनिरुद्ध के विवाह को स्वीकार कर लिया । आज भी तेजपुर की मिट्टी में, अग्निगढ़ की दीवारों में, और चित्रलेखा गार्डन की पगडंडियों में उस कथा की ध्वनि गूँजती है - एक ऐसी

कथा जो केवल पुराण नहीं, इस नगर का जीवंत इतिहास है । जब हम वहाँ खड़े थे, तो लगा - हम किसी पार्क में नहीं, एक प्रेमगाथा के जीवित स्मारक में चल रहे हैं । चित्रलेखा के नाम पर बने इस बगीचे में हर पत्ती जैसे उस चित्र को दोहराती है, जो उसने उषा के लिए बनाया था । और ब्रह्मपुत्र की ओर बहती हवा में, आज भी अनिरुद्ध की साँसों की धड़कन महसूस होती है ।



फिर हम पहुँचे एक प्राचीन काली मंदिर - पत्थरों से बनी पुरानी सीढ़ियाँ, दीयों की मिट्टी की महक और मंदिर के गर्भगृह से आती घंटे की गूँज... सब मिलकर एक ऐसा वातावरण रच रहे थे, जहाँ भय और भक्ति का कोई भेद शेष नहीं रह गया था । माँ काली की उपस्थिति वहाँ केवल एक मूर्ति में नहीं थी - वह हवा में थी, ध्वनि में थी, और शायद हमारे भीतर तक उतर आई थी । ऐसा लगा, जैसे मन की सारी अस्पष्टता उनके चरणों में धीरे-धीरे गलने लगी हो । यह कोई पूजा नहीं, यह कुछ कहे बिना आत्मा का आत्मा में विलय जैसा अनुभव था । मंदिर के प्रांगण से जब बाहर निकले, तो गाइड ने बताया - यह क्षेत्र बामुनी हिल्स कहलाता है ।



संकल्प

2025-26 | अंक - 37



पहाड़ी पर खड़े होकर हमने जो दृश्य देखा, वह शब्दों में नहीं समा सकता - नीचे ब्रह्मपुत्र की चौड़ी धारा, दूर तक फैली हरियाली, और उसके पार नीले धुँधलके में लिपटा असम का विस्तृत सौंदर्य ।

यह बामुनी हिल्स, न केवल एक प्राकृतिक स्थल है, बल्कि अपने भीतर इतिहास, धर्म और लोकविश्वास को समेटे हुए एक सांस्कृतिक परत भी है । यहाँ खड़े होकर लगता था जैसे प्रकृति स्वयं ध्यान-मग्न हो - और हम उसमें एक छोटा-सा स्पंदन मात्र । इस स्थल की खामोशी में एक गूँज है - सदियों पुरानी, जैसे कोई प्राचीन ऋषि किसी मंत्र की तरह इसे हमारे भीतर उतार रहा हो । यहीं पास ही स्थित है - माँ चामुंडा का प्राचीन मंदिर । शब्द 'प्राचीन' यहाँ सिर्फ तारीख का संकेत नहीं, बल्कि एक अनुभव की गहराई है । कहा जाता है, इस मंदिर का निर्माण 8वीं-9वीं शताब्दी के दौरान हुआ था, और इसकी वास्तुकला और शिल्पकला आज भी पथरों में जीवित है । माँ चामुंडा - जो काल की शक्ति हैं, जो मृत्यु को भी नियंत्रित करती हैं - इस मंदिर में केवल पूजनीय नहीं, बल्कि प्रकट लगती हैं । भक्त दूर-दूर से आते हैं, लेकिन यहाँ आकर वे कुछ माँगते नहीं - बस दर्शन से ही कृतज्ञ हो उठते हैं ।

मंदिर की दीवारों पर खुदी आकृतियाँ, देवी के विभिन्न रूप, युद्ध की छवियाँ और ध्यानमग्न संत - सब मिलकर ऐसा लगता है कि यहाँ ईंट-पत्थर नहीं, आत्माएँ बसती हैं । जब हम बामुनी हिल्स की ढलान से नीचे उतर रहे थे,

तो सूर्य ढलने लगा था । ब्रह्मपुत्र पर बिखरती सूर्य की किरणों और मंदिर की सीढ़ियों पर पड़ती लंबी छायाएँ - जैसे माँ चामुंडा स्वयं हमसे विदा ले रही हों । और मन में बस एक ही बात रह गई - कुछ जगहें देखी नहीं जातीं, वे भीतर उतर जाती हैं । बामुनी हिल्स और माँ चामुंडा का यह अनुभव उन्हीं में से एक था - ध्यान में डूबा हुआ, मौन में गूँजता हुआ ।

शाम ढल रही थी । हम चल पड़े ब्रह्मपुत्र घाट की ओर । यह नदी नहीं, कोई महाकाव्य है - जो जीवन, मृत्यु और पुनर्जन्म को एक साथ बहा ले जाती है । जब मैंने उसका जल छुआ, तो मन में जैसे सब कुछ थम गया । क्या सचमुच नदी को छूना, स्वयं को छूना होता है? उस क्षण में समय, देह, भाषा - सब व्यर्थ लगा । बस जल और मैं थे ।



अगली संध्या, यानी 13 दिसंबर, एक नया मोड़ लेकर आई — हम निकले काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान की ओर । शब्द वहाँ फीके पड़ गए । कैमरे, नोटबुक, मोबाइल — सब जैसे बेमतलब हो गए । जैसे हम सभ्यता की नहीं, प्रकृति की गोद में प्रवेश कर रहे थे । एक ऐसा स्थान जहाँ न सभागार होते हैं, न प्रस्तुति; जहाँ न भाषण चलते हैं, न तालियाँ बजती हैं — वहाँ बस मौन की सत्ता है, और उस मौन में बोलती हुई एक आदिम दुनिया ।

काजीरंगा, असम के गोलाघाट और नागांव जिलों में फैला हुआ एक वन्यजीव अभयारण्य है — लेकिन यह सिर्फ एक अभयारण्य नहीं, धरती का वो कोना है जहाँ प्रकृति ने अपनी मूल आकृति को बचा कर रखा है ।



संकल्प

2025-26 | अंक - 37

करीब 430 वर्ग किलोमीटर में फैला यह इलाका 1905 में स्थापित हुआ था — और 1985 में इसे यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया। यहाँ जीवन उतना ही असली है, जितना किसी जनजाति के ढोल की थाप, या जंगल के बीच उगती भोर। जैसे ही हम अंदर पहुँचे, घना जंगल हमारा स्वागत करता है। पेड़ों के बीच झाँकती धूप, पगडंडियों पर बिछी सूखी पत्तियाँ, और हवा में मिट्टी की वह आदिम गंध — जिसमें हर जीवन की पहली साँस छिपी हो।



हमारी कार जब धीरे-धीरे आगे बढ़ी, तो बाँसों के झुरमुट दिखाई देने लगे। उन झुरमुटों के पीछे झलक रही थी एक सींग वाले गैंडे की आकृति — काजीरंगा की

पहचान, उसका गौरव, और शायद उसका सबसे मौन लेकिन शक्तिशाली वक्ता। वह गैंडा — भारी, मौन, लेकिन उसकी चाल में ऐसा आत्मविश्वास कि जैसे वह पृथ्वी का अंतिम सच हो। उसके कदमों में कोई जल्दबाज़ी नहीं थी — न किसी को दिखाने की, न किसी से छिपाने की। उसके देखने का तरीका कुछ ऐसा था जैसे वह हमें नहीं, हमारी स्मृति को देख रहा हो — क्या हम सच में जानते हैं कि हम कौन हैं? यह अनुभव ऐतिहासिक नहीं था, लेकिन वह किसी भी इतिहास से कम भी नहीं था। यहाँ कोई पत्थर नहीं बोले, लेकिन घास की सरसराहट, पक्षियों की पुकार, और हवा की साँय-साँय — ये सब मिलकर एक प्राकृतिक पुराण की तरह गूँज रहे थे। हर कदम पर महसूस होता — सभ्यता ने भले ही इमारतें बनाई हों, लेकिन आत्मा ने हमेशा जंगल में ही शरण ली है।

रास्ते में हाथी के पैरों के निशान दिखे, झाड़ियों के पीछे हिरण के झुंड की एक झलक मिली, और ऊपर आसमान में परिक्रमा करते गिद्ध — मानो यह पूरी जगह हमें याद दिला रही थी कि हम यहाँ अतिथि हैं, और यह धरती का प्राचीन मूल रूप अब भी जीवित है। शाम धीरे-धीरे उतरने लगी थी। जंगल की हर चीज़ थककर सुस्ताने लगी थी, और हमारी जीप वापसी की ओर मुड़ गई। खिड़की से बाहर देखते हुए, मन भीतर कहीं और उलझा हुआ था — जैसे किसी अदृश्य संवाद में खोया हुआ। और उसी क्षण यह पंक्ति भीतर गूँज उठी —

कुछ यात्राएँ पूरी नहीं होतीं, वे भीतर घर बना लेती हैं। काजीरंगा भी वैसी ही एक यात्रा थी — जिसने शब्दों से अधिक मौन दिया, जानकारी से अधिक जागरूकता, और दर्शनीयता से अधिक दर्शन।

14 दिसंबर 2024

सूरज के उगने से पहले, जब आकाश अब भी हल्के धुंधलके में था और शहर की धड़कनें जागने की तैयारी में थीं, हम पहुँच चुके थे — नीलांचल पर्वत की चोटी



पर स्थित माँ कामाख्या के धाम । ठंडी हवा में बसी चुप्पी ने जैसे धीरे से कहा — "अब जो कुछ भी होगा, वह अनुभव से नहीं, अनुभूति से होगा ।"

कामाख्या मंदिर, ईंट और पत्थर का ढाँचा जरूर है, पर उसकी आत्मा केवल निर्मित नहीं, जाग्रत है । यह कोई सामान्य धार्मिक स्थल नहीं, यह वह शक्ति-स्रोत है जहाँ ब्रह्मांडीय ऊर्जा साक्षात् अनुभव की जा सकती है । यहाँ धरती स्वयं एक देवी है — और स्त्रीत्व, केवल देह नहीं, एक सृष्टि-शक्ति बनकर प्रतिष्ठित है । मंदिर परिसर में प्रवेश करते ही महसूस हुआ — जैसे हम अपनी ज़मीन से उठकर किसी और धरातल पर आ गए हों । यहाँ वाणी मौन हो जाती है, और मौन स्वयं बोलने लगता है । दस महाविद्याएँ — ये देवी के वे दस रूप हैं जो मानव जीवन की दस अवस्थाओं, दस प्रवृत्तियों, और दस गूढ़ शक्तियों का प्रतिनिधित्व करते हैं । हमने पहले दर्शन किए:

- माँ तारा — जिनकी आँखों में करुणा की असह्य गहराई है,
- फिर छिन्नमस्ता — जो स्वयं का सिर काटकर भी दूसरों को जीवनदान देती हैं,
- माँ काली — विकराल, मगर आंतरिक अंधकार को चीरती हुई,
- बगलामुखी — जिनका मौन ही शत्रु को पराजित कर देता है,
- भुवनेश्वरी — जिनका मुख ब्रह्मांड की शांति का प्रतिबिंब है ।



और अंततः, हम पहुँचे — माँ कामाख्या के चरणों में । गर्भगृह में उतरती वह सीढ़ियाँ — जैसे हर पायदान पर एक परत आत्मा की खुलती जाती हो । वहाँ कोई मूर्ति नहीं, कोई चेहरा नहीं — वहाँ योनिपीठ है, शक्ति का मूल स्रोत । वहाँ शरीर के बाहर से भीतर तक सब कुछ मौन हो जाता है । जैसे समय वहीं रुक गया हो, और आप सिर्फ एक कंपन हैं — ब्रह्मांड की हल्की सी धुन में थरथराता हुआ । आरती का समय हुआ । घंटियों की आवाज़ एक लय में गूँजने लगी, जो सिर से उतरकर हृदय और फिर आत्मा तक पहुँच गई ।

दीपों की लौ नृत्य कर रही थी — मानो आरती कोई अनुष्ठान नहीं, एक नृत्य था आत्मा का, ईश्वर की उपस्थिति में । भक्तों की पलकें झुकी हुई थीं, मगर उनकी चेतना जैसे उठी जा रही थी — हर साँस एक प्रार्थना बन चुकी थी । आरती के बाद हमने माँ का प्रसाद ग्रहण किया । वह प्रसाद — केवल स्वाद नहीं, एक आशीर्वाद का अनुभव था । मन में न कोई माँग थी, न कोई इच्छा — बस एक मौन था, और उस मौन में एक अद्भुत संतोष ।





उस रात, हम मंदिर के पास स्थित अतिथिगृह में ठहरे । हवा में अब भी वह घंटियों की ध्वनि लहराती रही, और मन... मन अब कहीं और था — उसी सीढ़ी पर, उसी गर्भगृह में, जहाँ हमने कुछ भी देखा नहीं, पर सब अनुभव कर लिया । बिस्तर पर लेटते ही नींद नहीं आई — लेकिन सपने जरूर आए, सपनों में कोई माँ के आँचल की तरह सिर पर हाथ फेरता रहा । उस रात, माँ के चरणों में जो विश्राम मिला, वह विश्राम नहीं था — वह जन्मों का लौटना था ।

15 दिसंबर 2024 विदा का दिन ।

हर यात्रा की सुबह अलग होती है, लेकिन विदा की सुबह कुछ और ही होती है — वहाँ जागना नहीं होता, वहाँ छूट जाना होता है । सूरज जैसे धीरे-धीरे अपनी रोशनी समेट रहा था, मानो वह भी हमें यहाँ से जाते नहीं देखना चाहता । हमने माँ कामाख्या को मन ही मन प्रणाम किया । कोई शब्द नहीं बोले — सिर्फ आँखें बंद कीं और मन के भीतर की उस सीढ़ी तक गए, जहाँ एक दिन पहले आत्मा कुछ छोड़ आई थी, और कुछ नया लेकर लौटी थी ।

टैक्सी आई । सामान चुपचाप रखा गया, और पहाड़ियों की ढलान से उतरते हुए हर मोड़ पर ऐसा लगा — जैसे

कोई कह रहा हो, "क्या फिर आओगे?" वही रास्ता, वही गुवाहाटी एयरपोर्ट —लेकिन अब वह एयरपोर्ट वैसा नहीं रहा था । अब वह एक ठहराव का अंतिम पड़ाव था, जहाँ से फिर गति की दुनिया में लौटना था ।

हवा में वही आद्रता, वही भीड़, वही औपचारिकताएँ — लेकिन इस बार हम बस शारीरिक रूप से उपस्थित थे, मन तो कहीं और ही अटका था । फ्लाइट ने जब आकाश में उड़ान भरी, तो नीचे गुवाहाटी सिकुड़ता गया —कामाख्या पर्वत एक छोटी सी छाया में बदल गया, लेकिन भीतर उसकी छवि और भी विस्तृत होती चली गई । वो गर्भगृह, वो आरती, वो ब्रह्मपुत्र का किनारा, वो जंगल की सघन साँसें, चित्रलेखा की कहानी, गैंडे की मौन उपस्थिति — सब जैसे भीतर जम गए थे ।

देहरादून की धरती पर उतरते ही ठंडी हवा ने स्वागत किया — वही घर, वही परिचित सड़कों की गंध । लेकिन भीतर कोई अब भी यात्रा में था । कभी-कभी लगता है — यह यात्रा कहीं खत्म नहीं हुई । यह चलती रहेगी — मेरे शब्दों में, मेरी चुप्पियों में, मेरी प्रार्थनाओं में । अब मैं लौट तो आया हूँ —पर मेरा एक हिस्सा अभी भी वहाँ पड़ा है —नीलांचल की सीढ़ियों पर, ब्रह्मपुत्र के घाट पर, चित्रलेखा की नाव में, काजीरंगा की बांस की झाड़ियों में, और माँ चामुंडा के गर्भगृह की मौन छाया में ।

शरीर अपने स्थान पर है,लेकिन आत्मा अभी भी यात्रा में है । और शायद, यही किसी सच्ची यात्रा की सबसे गहरी पहचान होती है —कि वह खत्म नहीं होती, वह भीतर शुरू होती है ।





लघु कथा - माल्टे का पेड़



रूचि उपाध्याय

धर्मपत्नी मधुसूदन उपाध्याय

रोहन शाम को ऑफिस से थका हारा लौटा। आज मेट्रो में बहुत भीड़ थी, बैठने की जगह ना मिलने के कारण पूरा सफर खड़े-खड़े तय करना पड़ा। घर पहुंचने में देखा, खाने की मेज पर माल्टे रखे थे। रोहन के चेहरे पर मुस्कान आ गई। सारी थकान एक पल में छूमंतर हो गई। बचपन से ही रोहन को माल्टे बहुत पसंद थे। पत्नी रीना ने बताया आज गांव से पड़ोस के रमेश काका आए थे। उनका बेटा भी उसी अपार्टमेंट में रहता था। रमेश काका व रोहन के पिता में गहरी दोस्ती थी। जब भी वह अपने बेटे के पास आते तो उनके घर भी आते थे। रोहन के पिता फौज में थे। अलग-अलग शहरों में तैनाती के कारण गांव कभी कभार ही जाना हो पाता था। रोहन और उसकी मां भी पिता के साथ ही रहते थे। नौकरी लगने पर रोहन दिल्ली बस गया। वहीं शादी हुई और फिर बच्चे भी। पहाड़ का घर पीछे छूट गया। जब तक पिताजी जीवित थे, साल दो साल में एक बार मां के साथ गांव हो आते थे। लौटने पर गहथ, भट्ट की दाल, पहाड़ी मूली, नींबू और ना जाने क्या-क्या खरीद कर लाते थे। साथ ही लाते घर के आंगन में लगे पेड़ के माल्टे। जिनका रोहन को बेसब्री से इंतजार रहता। माता-पिता के देहांत के बाद गांव में जाना बंद हो गया। घर कब खंडहर बन गया पता ही नहीं चला। बस एक माल्टे का पेड़, जिसे रोहन उसके पिता ने एक साथ लगाया था। उनकी

आखिरी निशानी बन आंगन में खड़ा था। हर सर्दी रमेश काका किसी न किसी के हाथ इस पेड़ के माल्टे रोहन के घर भेजते थे। शहरों के विकास की कीमत गांवों के पलायन ने चुकाई है। शहरों ने बहुमंजिला इमारतों के बीच हम भूल बैठे हैं कि गांव से जुड़ी संस्कृति हमारे विरासत भी हमसे छूटती जा रही है। आज रोहन ने निर्णय लिया कि वह भी अपने गांव अपने परिवार के साथ गर्मियों में गांव जाएगा। थोड़ी सी मरम्मत के बाद घर रहने योग्य हो जाएगा। रमेश काका से बात हुई तो उन्होंने उसे इस सब में पूरी मदद करने का आश्वासन दिया। बहुत समय बाद आज माल्टे ज्यादा मीठे महसूस हो रहे थे।



भारत में हर भाषा का सम्मान है,
पर हिंदी ईश्वर का वरदान है



आभासी दुनिया



दर्शिका द्विवेदी

सुबह जब आँखें खुलीं तो मन को विचलित पाया, सर में दर्द था। सोचा था सुबह उठकर सैर पर जाऊंगा, व्यस्त दिनचर्या के कारण वैसे भी समय नहीं मिलता। परन्तु जैसे ही हाथ बढ़ाया और अलार्म बंद किया, फिर एक नोटिफिकेशन दिखा और उसका जवाब देते-देते फ़ोन चलाने में लीन हो गया। रीलें सरकाते -सरकाते न जाने कब तक कांच के पीछे की दुनिया में खो गया और जबतक खुद को होश आया, दफ़्तर जाने का वक़्त हो गया था। फटाफट तैयार हुआ और दफ़्तर को भागा। वहां देर होने के कारण फटकार मिली और मन दुखी हो गया।

काम करते-करते याद आया कि कहीं मेरा ऑनलाइन आर्डर वाला सामान तो नहीं आया। सामान देखते हुए फिरसे फ़ोन की दुनिया में खो गया। घंटों बीत गए देश-दुनिया की हाल खबर जानते हुए। हाय-हाय ये क्या हुआ, एच वन बी वीजा का शुल्क बढ़ गया, नेपाल में विरोध प्रदर्शन हुआ, हाय अब क्या होगा, क्या प्रवासी भारतीय घर वापस आ जायेंगे, क्या नेपाल में फिरसे सरकार बनेगी, मैं तो चिंता में ही डूब गया। फिर पीछे देखा तो बॉस मेरी अधूरी पीपीटी पर आँख गड़ाए हैं। समय के आभाव में जैसे-तैसे मैंने हाथ चलाया, चैट जी पी टी और जैमिनाइ को बुलाया और जैसे-तैसे फटाफट पीपीटी ख़तम करी।

जब खाने बैठा तो बेस्वाद खाने को गले से नीचे उतारने के लिए फिर से मोबाइल फ़ोन का सहारा लिया। इन्स्टाग्राम पर दूसरों की खुशनुमा ज़िन्दगी देखी -कोई विदेश यात्रा पर है, कसी ने नयी गाड़ी ली तो कोई पार्टी कर रहा है। उनको देखकर खुद मन-ही-मन में दुखी हुआ और अपनी नॉट-सो-अस्टेटिक दिनचर्या पर अफ़सोस किया। फिर से दफ़्तर के कार्यों को निपटाया, घर जाने में अभी 10 मिनट शेष थे, उन्हें फिर से आभासी दुनिया में व्यर्थ किया। मेट्रो में बैठे-बैठे ऑनलाइन शॉपिंग करी, और कुछ और रीलें सरकाईं।

घर आते ही बेड पर पड़ गया। आखिर सारे दिन इतना कठिन परिश्रम किया है, थोड़ा मनोरंजन तो बनता है। फिर से निकाला फ़ोन, कुछ और रीलें सरकाईं। पड़े-पड़े न जाने कब रात के 10 बज गए पता ही नहीं चला। थकान के कारण अब खाना बनाने का भी मन नहीं है, चलो कुछ बाहर से आर्डर कर लेते हैं। फिर आता है खाना, अब उसके साथ मूवी भी तो एन्जॉय करनी है। फिर निकाला फ़ोन, शुरू करी मूवी और नींद आने के बावजूद मूवी ख़तम करके देर रात सोया। नींद तो आई नहीं, सोच में पड़ गया कि “आखिर मेरा सारा दिन जाता कहाँ है” और अपनी गिरती सेहत को सुधारने का वादा करते हुए सो गया।





खामोशी से बुलंदी तक



राघव उपाध्याय

सुपुत्र मधुसूदन उपाध्याय

रवि एक छोटे से गाँव में रहता था, जहाँ सपने अक्सर हालातों से हार जाते हैं। लेकिन रवि अलग था। उसके सपनों की आँखें बड़ी थीं। वह अधिकारी बनना चाहता था ऐसा अधिकारी जो कुर्सी पर नहीं, लोगों के दिलों में जगह बनाए। पढ़ाई में रवि बहुत अच्छा था। किताबें उसकी ताकत थीं। रात की खामोशी में, टिमटिमाते दीये के नीचे बैठकर वह घंटों पढ़ता। लेकिन उसकी ज़िंदगी की सबसे बड़ी कमजोरी थी बोलने का डर। जब भी उसे कुछ कहना होता, शब्द गले में अटक जाते। आवाज़ काँपने लगती, हाथ पसीने से भर जाते। लोग सोचते - “यह लड़का चुप क्यों रहता है?” कोई नहीं जानता था कि उसकी चुप्पी के पीछे कितना बड़ा डर छिपा है। कड़ी मेहनत के बाद रवि ने अधिकारी की लिखित परीक्षा पास कर ली। घर में खुशी थी। माँ ने भगवान को धन्यवाद दिया। पिता ने पहली बार कहा - “मेरा बेटा अफ़सर बनेगा।” लेकिन किस्मत ने अभी इम्तिहान लेना बाकी रखा था - इंटरव्यू। इंटरव्यू के दिन रवि कमरे में दाखिल हुआ। सामने बैठे अधिकारी सवाल पूछ रहे थे। सवाल आसान थे... जवाब उसे आते थे... लेकिन शब्द बाहर नहीं आ रहे थे। कभी वह चुप हो जाता, कभी अधूरा बोलता, कभी घबरा जाता। कुछ दिनों बाद परिणाम आया असफल। उस रात रवि बहुत देर तक छत को देखता रहा। उसकी आँखों से आँसू बह रहे थे, लेकिन आवाज़ नहीं निकल रही थी। उसने खुद से कहा “क्या मेरी खामोशी मेरे सपनों से ज़्यादा ताक़तवर है?” कई दिन तक उसने किताबों को हाथ नहीं लगाया। मन में एक ही सवाल था “अब क्या?” एक दिन उसने अपने पिता को किसी से कहते सुना “मेरे बेटे में काबिलियत है, बस उसे खुद पर भरोसा नहीं है।” वही पल रवि की ज़िंदगी बदलने वाला था। उसने तय किया वह अपनी कमजोरी से भागेगा नहीं, उसे बदलेगा। अगले दिन से उसकी नई ज़िंदगी शुरू हुई। वह रोज़ अख़बार ज़ोर से पढ़ने लगा। आईने के

सामने खड़े होकर खुद से बातें करने लगा। मोबाइल में अपनी आवाज़ रिकॉर्ड करता और गलतियाँ सुधारता। लोगों से नज़र मिलाकर बात करने की कोशिश करता। शुरुआत में उसकी आवाज़ अजीब लगती थी। लोग हँसते थे। लेकिन रवि जान चुका था बदलाव हमेशा मज़ाक बनकर ही शुरू होता है। दिन बीते, महीने बीते। डर धीरे-धीरे कम होने लगा। आवाज़ मज़बूत होने लगी। आँखों में आत्मविश्वास झलकने लगा। एक साल बाद वही परीक्षा फिर से आई। इस बार रवि डरा नहीं था। इंटरव्यू के कमरे में उसने गहरी साँस ली और पूरे आत्मविश्वास के साथ बोला। सवाल आए। जवाब साफ़ थे। शब्द सच्चे थे। परिणाम आया रवि चयनित हो गया। उस दिन रवि ने सिर्फ़ अधिकारी बनने का सपना पूरा नहीं किया, उसने अपनी खामोशी को अपनी ताकत बना लिया। आज रवि उन छात्रों से कहता है जो खुद को कमज़ोर समझते हैं “अगर तुम बोल नहीं पाते, तो सीखो। अगर डर लगता है, तो अभ्यास करो। क्योंकि सपने उन्हें ही मिलते हैं जो खुद से हार नहीं मानते।”





मेरा भारत महान



मधुसूदन उपाध्याय

हमने देखा है -

एक नया भारत - समर्थ और सशक्त,
आत्मनिर्भरता से बढ़ता हर कदम प्रशस्त ।
यह नए युग का एक अद्भुत ऐलान है,
अनगिनत प्रार्थनाओं का यह साकार मान है ।
मेरा भारत महान, मेरा भारत महान ।

हमने देखा है -

आगे बढ़ता भारत महान,
तकनीक और विज्ञान से बनी नहीं पहचान ।
'मेड इन इंडिया' बना हमारी शान ।
चांद पर पहुँचा, दिखाया अपना दम ।
सपनों को सच करता, हर भारत का जन-जन ।
मेरा भारत महान, मेरा भारत महान ।

हमने देखा है -

महाकुंभ में भक्ति का सागर,
भक्ति में डूबा हर गांव और नगर ।
संतों की वाणी, मंत्रों का मधुर तान,
देश विदेश से स्नान को आतुर हर इंसान ।
मेरा भारत महान, मेरा भारत महान ।

हमने देखा है -

सीमा पर अडिग जवान खड़े,
तूफानों में भी दुश्मन से भिड़े ।
निर्दोषों की जान का बदला लिया 'ऑपरेशन सिंदूर' से ।
आतंकवादियों को पढ़ाया ऐसा पाठ, उनकी कई पीढ़ियां रखेगी
याद ।
मेरा भारत महान, मेरा भारत महान ।

हमने देखा है -

'योग' ने भी भारत को दी एक अलग पहचान ।
विश्व पटल पर भारत की बढ़ी है शान ।
खेलों में भी कमाया है नाम,
मेरा भारत महान, मेरा भारत महान ।
जय हिंद !





कोई ऐसा यान बना लो, जो मन से मन तक जाए



पवन कुमार सूरज

नहीं चाँद पर जाकर उतरे, ना मंगल तक पहुँचाए ।
कोई ऐसा यान बना लो, जो मन से मन तक जाए ।।

जंगल काटे धरती खोदी , जग भवनों से भर डाला ।
उपग्रहों को भेज-भेज के , नभ में कचरा कर डाला ।।
सप्तसिंधु के जलजीवों को, विकास की भेट चढ़ाया ।
कथित प्रगति की बलिवेदी पे, प्रदूषण खूब फैलाया ।।
कोई ऐसा दर्पण खोजो, जो अपना मुख दिखलाए ।
कोई ऐसा यान बना लो, जो मन से मन तक जाए ।।१

बने रोबोट मनु इस जिद में, मानव खुद रोबोट हुआ ।
विकास की अंधी दौड़ तले, अपनेपन पर चोट हुआ ।।
अपने स्वार्थ सिद्धि की खातिर, कहर प्रकृति पे ढाया है ।।
जीव-जंतु, पशु-पक्षी को, अपना दास बनाया है ।।
कोई ऐसी दवा बनाओ, जो मानवता बच पाए ।
कोई ऐसा यान बना लो, जो मन से मन तक जाए ।।(२)

बड़े-बड़े विद्यालय खोले, पाते सब ऊँची शिक्षा ।
धर्म सैकड़ों निकाल डाले, मिल जाती सबको दीक्षा ।।
आविष्कारों के बूते पर , हित अपना ही साधा है ।
पूर्ण सृष्टि पर आधिपत्य हो, मनुज जोर आमादा है ।।
कोई ऐसा ज्ञान पढ़ाओ, जो धरती सुखद बनाए ।
कोई ऐसा यान बना लो, जो मन से मन तक जाए ।।(३)

जो धरती पर चलता आया, वही वहाँ किस्सा होगा ।
मिलकर सारे देश लड़ेगे, कहीं-कहीं हिस्सा होगा ।।
दूर परग्रह पर जा-जाके, क्या तुम हासिल कर लोगे?
एक और झगड़े के कारण को, इस दुनिया में भर दोगे ।
'सूरज' ऐसा यंत्र बना लो, जो तुमसे तुम्हें मिलाए ।
कोई ऐसा यान बना लो, जो मन से मन तक जाए ।।(४)

वक्ताओं की ताकत
भाषा,
लेखक का अभिमान है
भाषा ।
भाषाओं के शीर्ष पर
बैठी
मेरी प्यारी हिंदी भाषा ।





मानवता की टाँग



पवन कुमार सूरज

वर्तमान का मौसम

(१)

चालक ने थी पी हुई, दारू या फिर भाँग ।
मारी टक्कर गाय को, घायल कर दी टाँग ।।
घायल कर दी टाँग, गाय थी मरने वाली ।
सभी रहे थे कोस, निरंतर बकते गाली ।।
एकत्रित जो भीड़, आज लगती अनुपालक ।
सभी रहे थे ढूँढ, कहाँ गायब वो चालक ?

(२)

कोई पिलवाता सलिल, कोई डाले घास ।
करते वही उपाय सब, जो थे जिसके पास ।
जो थे जिसके पास, अमुक है करें दवाई ।
जितने भी थे लोग, दिखाते आज भलाई ।।
गाय रहे जब छोड़, कहाँ तब आत्मा सोई ?
हम सबका है दोष, नहीं माने पर कोई ।।

(३)

सेवा सेंटर भेज गऊ, शान्त हुआ माहौल ।
अपना कारज पूर्ण कर, लोग हुए फिर गोल ।।
लोग हुए फिर गोल, बोल जय गैय्या माता ।
यदि खाली हो गाय, तोड़ ले उससे नाता ।।
बड़ी गलत ये सोच, कृत्य प्राणों का लेवा ।
जब तक जीवित स्वार्थ, करें बस तक सब सेवा ।

(४)

आखिर क्यों हम छोड़ते ? लावारिस यूँ गाय ।
बछड़ी ही हम पालते, बछड़ा दियो भगाय ।।
बछड़ा दियो भगाय, सभी क्यों हैं मतलब के ।
एक और दो तीन, यहीं करतब है सबके ।।
ले निज काम निकाल, लोग हैं कितने शातिर ।
मतलब की बस चाह, शुरू से लेकर आखिर ।।

(५)

माना दोषी वो हुआ, पैर दिया जो तोड़ ।
दोषी पहले हम हुए, देवें पशु क्यों छोड़ ?
देवें पशु क्यों छोड़ ? नहीं करते हैं सेवा ।
देती जब तक दूध, खिलाते तब तक मेवा ।।
'सूरज' के हैं बोल, कठिन सच को अपनाना ।
मानवता की टाँग, तोड़ता सदा जमाना ।।

पहले सा ना बरसे सावन, ना वैसे बादल छाते है ।।
हुई फुहारे रिमझिम गायब, अब झड़ी नदारद पाते है ।
पहले सा ना बरसे सावन, ना वैसे बादल छाते है ।।

(१)

बिना समय अंबर में शंबर, अब घिर आया करते है ।
अल्प समय में मेघ अत्याधिक, जल भर जाया करते है ।।
काल चक्र में नव परिवर्तन, नित्य नजर अब आते है ।
पहले सा ना बरसे सावन, ना वैसे बादल छाते है ।।

(२)

घुमड़-घुमड़कर मेघ-घटाए, पहले सा ना शोर मचाती ।
रिमझिम गिरती जल की बूँदे, पहले सा ना गीत सुनाती ।।
मनोहर सावन की झड़ियाँ, देख नहीं अब पाते है ।
पहले सा ना बरसे सावन, ना वैसे बादल छाते है ।।

(३)

कार्तिक मास में भी मेघ अब, सावन तुल्य बरसते है ।
सावन के मौसम में अक्सर, जीव जल को तरसते है ।।
चल रहा अब कौन सा मौसम, प्राणी समझ न पाते है ।
पहले सा ना बरसे सावन, ना वैसे बादल छाते है ।।

(४)

अक्सर बादल फटते रहते, बाढ़ प्रलय ले आती है ।
गाँव शहर सब डूबे जल से, नदियाँ उफान पाती है ।।
क्या कहना अब सारे मौसम, कष्ट बहुत पहुँचाते है ।
पहले सा ना बरसे सावन, ना वैसे बादल छाते है ।।

(५)

होकर कुपित प्रकृति अब हर दिन, बदला हमसे लेती है ।
'सूरज' मनुज सुधर भी जाओ, सबक सन्देश देती है ।।
विकास चक्कर में हो अंधे, मानव समझ नहीं पाते है ।
पहले सा ना बरसे सावन, ना वैसे बादल छाते है ।।





सकल विश्व को किया प्रकाशित, पर विज्ञान डराता है



उर्मिला

धर्मपत्नी पवन कुमार सूरज

जीवन किया बड़ा आनन्दित, फिर भी नर घबराता है।
सकल विश्व को किया प्रकाशित, पर विज्ञान डराता है।

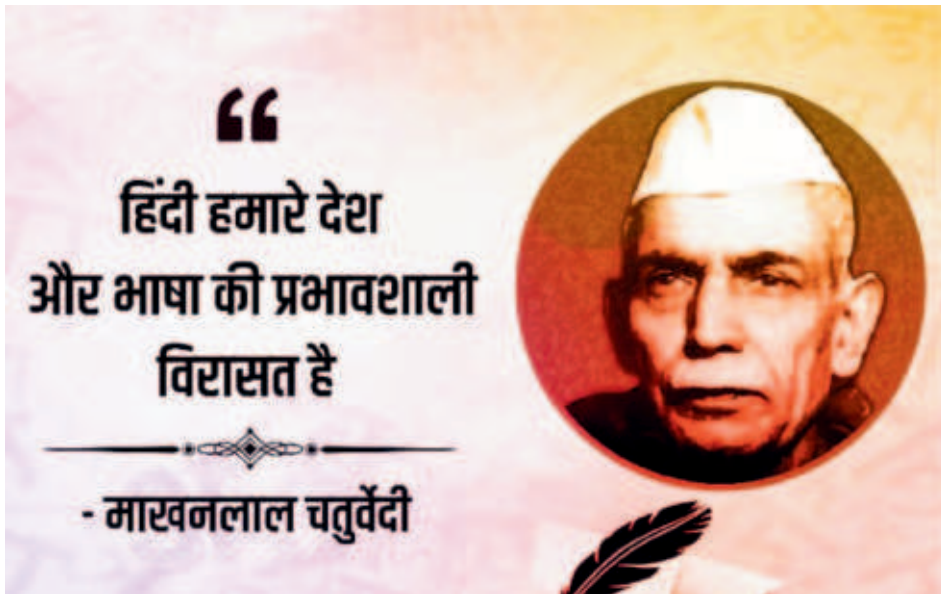
छू आया है दूर चाँद को, मंगल गले लगाया है।
जमा लिया पृथ्वी पर कब्जा, नभ को भी हथियाया है।।
लगा पड़ा रोबोट को यहाँ, मनु करने की कोशिश में।
किन्तु आदमी खुद भी अब तक, आदमी नहीं बन पाया है।।

जग खोज ने किया उत्साहित, फिर भी शांति नहीं पाता है।
सकल विश्व को किया प्रकाशित, पर विज्ञान डराता है।

होकर अति उन्मादी पागल, जाने क्या ठग लाना है।
बरसाने है कृत्रिम बादल, नकली भानु उगाना है।।
नभ को तहस-नहस करता है, घातक नव औजारों से,
मिथ्या पाल अभिमान वश, खुद को प्रभु कहलाना है।।

अखिल सृष्टि को किया प्रभावित, किन्तु खुद सहम जाता है।
सकल विश्व को किया प्रकाशित, पर विज्ञान डराता है।

* * * * *





मां, तेरे बिना हर ठोकर भारी है



अनुज कुमार रूहेला

अब क्यों ठोकरें लगती हैं मां,
अब तो मैं चप्पल भी सीधी पहनता हूँ।

बचपन में जब उलटी जूती पहन लेता था,
तो आप मुस्कराकर कहती थीं—
"देखना, आज गिर जाएगा।"
और सचमुच, दो क्रदम बाद ही
ज़मीन मुझे गले लगा लेती थी।

आज मैं बड़ा हो गया हूँ मां,
जूते भी पहचान लेता हूँ,
राहें भी पढ़ लेता हूँ,
यहाँ तक कि नक्शे की लकीरों को
हथेली पर उतार लेता हूँ।
फिर भी क्यों,
हर मोड़ पर ठोकरें मेरी प्रतीक्षा करती हैं?

क्या यह ठोकरें मेरी नासमझी की हैं,
या ज़माने की ठंडी चालों की?
क्या यह रास्ते टेढ़े हैं,
या मेरे कदम अभी भी लड़खड़ा रहे हैं?

मां, तुम तो कहती थीं—
"सीधी राह पर चलो,
तो कोई नहीं गिरा सकता।"
मैंने वही किया,
फिर भी कहीं न कहीं
छल की काई जमी रहती है,
और पाँव फिसल ही जाते हैं।

कभी लगता है,
ठोकरें अब पत्थरों से नहीं आतीं,
ये ठोकरें रिश्तों के बोझ से आती हैं,
ये ठोकरें उम्मीदों के भार से आती हैं,
ये ठोकरें दुनिया के बनावटीपन से आती हैं।

बचपन में गिरता था तो तुम
गोद में उठाकर सिर सहला देती थीं।
आज गिरता हूँ तो
लोग हँसते हैं,
कुछ ताने कसते हैं,
और कुछ बस तमाशा देखते हैं।

मां, अब समझ में आता है—
गिरना आसान था जब तुम पास थीं।
क्योंकि तुम्हारी गोद ज़मीन से ऊँची थी,
तुम्हारी दुआएँ हर चोट से बड़ी थीं।

आज तुम्हारी दुआएँ तो हैं,
पर हाथ पकड़ने को तुम पास नहीं।
शायद इसी लिए हर ठोकर
इतनी गहरी चुभती है।

मां, क्या ठोकरों का रिश्ता उम्र से है?
या यह ज़िन्दगी का सबक है,
जो हर पड़ाव पर सिखाया जाता है?
तुम कहती थीं—
"गिरना मत सीखो,
उठना सीखो।"

और सच ही कहा था मां,
मैं गिरने से नहीं डरता,
पर तेरे बिना उठना
बहुत भारी पड़ता है।

अब क्यों ठोकरें लगती हैं मां,
अब तो मैं चप्पल भी सीधी पहनता हूँ।

*** **



माँ



राकेश मोहन रावत

माँ मुझे आज भी
बच्चा समझती है
वो हर बात समझाती है
मुझे कैसे रहना है अब भी बताती है।

वो अपनी तकलीफे मुझसे
छिपाती है
वो बिल्कुल ठीक है
मुस्करा कर बताती है।

मेरी परेशानी मेरी माँ के
चेहरे पर नजर आती है
मैं मुश्किल में हूँ
नजाने कैसे जान जाती है।

मैं अपना ध्यान क्यों नहीं रखता
मुझे अक्सर समझाती है
मैं घर से जब भी बाहर रहता हूँ
मेरे लौटने तक उसकी आँखें
घर की चौखट पर बैठ जाती है।

मेरे आहट से वो मेरे होने के
अहसास को जान जाती है
मैं खुश रहूँ कुशल रहूँ
ईश्वर से यही सब माँगने
वो व्रत रखती है मंदिर जाती है।

लड़खड़ाता हूँ जब भी और
नाकामियों में डूब जाता हूँ
अंधेरे छंट जाते हैं माँ जब भी
नजर उठाती है।





धरा का नवप्रभात



सुधा

पर्वतों की चोटी में, जब बादल बरसते हैं,
सैलानियों के हृदय में नया उत्साह वो भरते हैं।

लेकिन इस उत्साह के बीच एक काला बादल छाया है,
जो की इस नये दौर में प्राकृतिक आपदा बनकर आया है।

केदारनाथ की त्रासदी, अब भी याद दिलाती है,
कैसे प्रकृति की लहरें, सब कुछ बहा कर ले जाती है।

जोशीमठ की धरती ने, जब रौद्र रूप दिखाया है,
घर मंदिर सड़कें सबको, उसने खुद में समाया है।

धराली, उत्तरकाशी में भी, प्रकृति ने आंखें दिखायी है,
अन्धाधुन्ध हो रहे निर्माण पर, उसने रोक लगायी है।

देहरादून की बस्तियाँ भी, सैलाबों से घिर गयी है,
पंजाब-हिमाचल में बाढ़ से, कितनी ही ज़िंदगियाँ सहम गईं।

सेना और बचावदलों ने, कितने ही जीवन बचाए हैं,
वही तकनीक और साहस ने भी नए रास्ते बनाए हैं।

किसान फिर से खेतों में, नई फसलें बो रहे हैं,
बच्चे फिर से स्कूलों में अपने सपने संजो रहे हैं।

अब बाँध, सड़कें और सुरंगें, सोच समझकर हमें बनानी है,
क्योंकि पर्वतों की घाटियों में, एक भी जान हमें नहीं गवानी है।

विकास हो पर प्रकृति का भी मान हमेशा बना रहे,
नदियों और पर्वतों का भी, संतुलन हमेशा बना रहे।

आज ये पर्वत फिर से जीवन का, नया गीत गा रहे हैं,
आशा, साहस और श्रम से, सबका भविष्य संवार रहे हैं।





दर्शिका द्विवेदी

हिन्दी

हिन्दी है भारत की भाषा
हमको तो है इससे प्यार ,
ये भाव हमारे बतलाती
और दर्शाती है व्यवहार ।।
सांसों में ये बसती है
और रोचक है इतिहास
वेद पुराणों से लेकर ये
अब तक है सबसे खास ।
साहित्य का जिस्मे किया है भैया,
हर युग में उद्धार,
हिन्दी है भारत की भाषा
हमको तो है इससे प्यार ।।

मुंशी, तुलसी, रहीम, कबीरा
और मीरा सूरदास
तानसेन ने लूटी महफ़िल
बंकिम ने इतिहास ।
हरिवंश ,नारायण, रविन्द्र की रचना,
हैं भारत माँ का ताज
हिन्दी है भारत की भाषा
हमको तो है इससे प्यार ।।

आँखों की भाषा है हिन्दी,
फूलों की खुशबू है हिन्दी,
शबनम की बूँदें हैं हिन्दी,
बारिश का पानी है हिन्दी
आओ मिलकर साथ मनाएं ,
हिन्दी का त्यौहार ।
हिन्दी है भारत की भाषा
हमको तो है इससे प्यार ।।



रक्षिता उपाध्याय
सुपुत्री मधुसूदन उपाध्याय

जीवन कोई दौड़ नहीं

जीवन कोई दौड़ नहीं, जहाँ आगे निकलना ही काम है,
रुक जाना भी खुद से मिलने का, एक सुंदर आयाम है ।
तेज़ जीत की गूँज अकसर, हर ओर छा जाती है,
पर धीरे चलने वाले को ही, राह साफ़ नज़र आती है ।

दूसरों की चाल देखकर, अपनी दिशा न बदल लेना,
भीड़ के शोर में अपनी आवाज़, चुपचाप न कुचल देना ।
हर कहानी अलग होती है, यही उसे पूरा बनाती है,
अपने रंग में जीना ही, मंज़िल को मायने दिलाती है ।

थोड़ा ठहरना कोई हार नहीं, न कोई बहाना है,
गहरी साँस लेना भी तो, खुद को फिर से पाना है ।
ज़िंदगी लम्हों की डोर है, जो धीरे-धीरे खुलती है,
जहाँ हम सच में जीते हैं, वहीं उसकी अर्थवत्ता मिलती है ।

सबसे आगे होना ही, हर बार सही नहीं होता,
साथ चलना, मुस्कान बाँटना, ज़्यादा सच्चा होता ।
अपनों के बिना ऊँचाई, हर बार अधूरी लगती है,
उनके संग जिए पलों से ही, सफलता पूरी लगती है ।

इसलिए शरीर को थकाकर, कभी खुद को न दौड़ाओ,
अपने मन को समझाकर, जीने का अर्थ सिखाओ ।
दौड़ से हटकर भी, एक सुंदर जीवन बसा है,
खुद की शांति में ही, मानो सब कुछ समा है ।





रविन्द्र सिंह

भटका पँछी

गाँव का पँछी चहक-चहककर शहर को उड़ आया,
देख शहर की आबोहवा उसे रास ना कुछ आया,
हरे-भरे पेड़ों के बदले ईट सीमेंट पत्थर के ढाँचे
देख-देखकर ऊब गया डूब गया वो अचरच में,
कहाँ खो गये झरने नदियाँ पेड़ों में फल-फूलों में कलियाँ
नदी बन गयी काला दलदल दिखते हैं बस सूखे नल
पानी की जब प्यास लगी तो गाँव का पनघट याद आया,
देख शहर की आबोहवा उसे रास ना कुछ आया ।

वो शाम बड़ी सुहानी थी उड़ते झुण्ड में रवानी थी,
सोच-सोचकर चूर हुआ दूर हुआ वो अब सबसे
माँ की ममता पिता का प्यार छोड़ आया सब सँगी यार,
चील कौए और चमगादड़ आस पास अपने पा कर
छोटा पँछी सिहर उठा तो गाँव का जमघट याद आया,
देख शहर की आबोहवा उसे रास ना कुछ आया ।

रात ने जब पैर पसारे बैठा पँछी एक किनारे,
बात-बात पर छलकी आँखे रूठ गये पल फुरसत के
ठाठ से घर में रौब दिखाना लाड से माँ का सिर सहलाना
शहरी शोर और तीव्र प्रकाश दिखता नहीं तारों का आकाश
चैन से जब नींद ना आयी तो गाँव का बिस्तर याद आया,
देख शहर की आबोहवा उसे रास ना कुछ आया ।

दिन महीने साल बीते शहरी दाँव सब उसने सीखे,
दूर-दूर तक पँख फैला के इठलाता शाही फितरत में,
अपनी धुन में मग्न हुआ भागती भीड़ से संलग्न हुआ
सहज-सा पँछी हो गया शातिर भूला रिश्ते अहं के खातिर
शहर की जब हवा लगी तो गाँव का किस्सा छूट गया,
देख शहर की आबो हवा भोला पँछी भटक गया ।



पूर्णिमा गर्ग

फुरसत

फुरसत शब्द नाम, सुना-सा लगता है,
बचपन में थी फुरसत, जब दिन बड़ा-सा लगता था ।
अब तो महीना भी, भागता-सा लगता है,
फुरसत शब्द नाम, सुना-सा लगता है ।

इतना समय हो गया, आसमान के तारे गिने हुए,
अब तो सूरज भी पहचाना-सा लगता है,
फुरसत शब्द नाम, सुना-सा लगता है ।

घर-ऑफिस, ऑफिस-घर यही जीवन-सा लगता है,
एकांत का एहसास, खुद से बाते करना
अब तो सपना-सा लगता है
फुरसत शब्द नाम सुना-सा लगता है ।

माँ कहती बच्चों पढ़ लो, फिर फुरसत ही फुरसत है,
पैरों पर खड़े हो जाओ, फिर फुरसत ही फुरसत है
लेकिन अब तक तो फुरसत शब्द नाम, सुना-सा लगता है ।

अब तो घड़ी की टिक-टिक के साथ चलना पढ़ता है,
पाँच मिनट इधर-उधर हो तो सेड्यूल बिगड़ता-सा लगता है
फुरसत शब्द नाम, सुना-सा लगता है ।

महिनों बीत गये कोयल की कू-कू सुने हुए
भँवरे की गुन-गुन सुने हुए,
लूडो, कैरम खेल पहचाना-सा लगता है,
फुरसत शब्द नाम, सुना-सा लगता है ।



देखो समझो बात हमारी,
हिंदी भाषा है सबसे प्यारी



दो दिन, धूप की तरह बहे



प्रकाश नीरव

हैदराबाद उतरा तो
एक पुरानी हवेली की साँस-सी लगी हवा —
जैसे किसी दादी के संदूक से
कढ़ाई वाला रुमाल निकल आया हो ।

चारमीनार की छाँव में
सुनते रहे पत्थरों की बातें,
वो कहते थे —
“कभी इश्क भी इमारतों में बसता था ।”

हेरिटेज मेमोरियल की दीवारें
सीप की तरह कान में कुछ फुसफुसा गईं,
शायद एक पुराना खत था वक्रत का,
जिसे मैंने पढ़ा, चुपचाप ।

इरानी चाय की पहली चुस्की में
माजी घुल गया —
चीनी कम थी,
पर यादें मीठी बहुत थीं ।
एक बुजुर्ग वेटर ने पूछा — “बंबई से आए हो?”
मैं मुस्करा दिया, “नहीं, दिल से ।”

रामोजी फिल्म सिटी में
सपने रिहर्सल कर रहे थे,
क्लैपबोर्ड गिरा — और एक नकली बादल बरस पड़ा ।
ज़िंदगी थोड़ी एडिट हो गई उस दिन ।

दूसरे दिन सुबह पहाड़ ने पुकारा —
श्रीशैलम की ओर मोड़ लिया मन ।
रास्ते में नीम की महक आई,
और कुछ जंगली फूलों ने अपना परिचय दिया ।

भोलेनाथ के दरबार में
धूप की एक पतली सी रेखा
शिवलिंग पर गिरी —
जैसे ब्रह्मा की कलम से
कोई आखिरी शब्द छू गया हो ।

फिर नार्गजुन सागर —
एक विशाल आईना फैला था धरती पर,
जिसमें मैंने खुद को
बिना चेहरा देखे पहचान लिया ।

अंबराबाद पहुँचा तो
टाइगर नहीं दिखा —
लेकिन हर झाड़ी से जैसे कोई आँख देख रही थी ।
एक बगुले ने नज़दीक आकर गर्दन मोड़ी,
और कहा — “तू मेहमान है, पर खामोशी से आना ।”

रात को वहीं तारों के नीचे
एक झींगुर ने राग छेड़ा,
और मैं सो गया —
दो दिन को उम्र मानकर ।

अब लौट आया हूँ —
पर लगता है कुछ छूट गया है वहाँ,
शायद मेरी साँस का एक टुकड़ा,
या वो चाय की प्याली,
जिसमें अब भी उबाल बाकी है ।

“कुछ सफ़र नहीं होते नीरव...
वो रूह के सूत से बुने जाते हैं —
धीरे-धीरे...
और ताउम्र पहने जाते हैं...”





संस्थान में राजभाषा नीति का कार्यान्वयन – वार्षिक प्रतिवेदन वर्ष 2025



त्रिलोक सिंह

यंत्र अनुसंधान एवं विकास संस्थान, देहरादून में मुख्यालय - संसदीय कार्य, राजभाषा तथा संगठन पद्धति निदेशालय, नई दिल्ली के नेतृत्व तथा राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय के मार्गदर्शन एवं संस्थान के निदेशक महोदय के संरक्षण में वर्ष 2025 के दौरान राजभाषा नीति, नियमों व निर्देशों के अनुपालन एवं कार्यान्वयन तथा राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग एवं प्रचार-प्रसार हेतु विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिसकी संक्षिप्त रिपोर्ट इस प्रकार है -

1. राजभाषा कार्यान्वयन समिति की त्रैमासिक बैठकों का आयोजन

संस्थान में राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन तथा गृह मंत्रालय राजभाषा विभाग के वार्षिक कार्यक्रमानुसार निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु, हिन्दी पत्राचार की समीक्षा और राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के सन्दर्भ में हिन्दी कार्यशालाओं, अखिल भारतीय वैज्ञानिक एवं तकनीकी संयुक्त हिन्दी संगोष्ठी, वार्षिक हिन्दी पत्रिका 'संकल्प' तथा 'संकल्प तकनीकी पत्रिका' का प्रकाशन, वैज्ञानिक एवं तकनीकी विषयों पर हिन्दी में लेख तथा पुस्तक लेखन, हिन्दी प्रतियोगिताओं, हिन्दी दिवस, हिन्दी पखवाड़ा एवं हिन्दी प्रशिक्षण तथा संस्थान का

राजभाषायी निरीक्षण आदि विभिन्न कार्यक्रमों के आयोजन एवं समीक्षा तथा हिन्दी पत्राचार की प्रतिशतता को बढ़ाने हेतु राजभाषा कार्यान्वयन समिति की त्रैमासिक बैठकें आयोजित की जाती हैं। वर्ष 2025 में दिनांक 26.03.2025, 30.07.2024, तथा 15.12.2025 को त्रैमासिक बैठकें आयोजित की गईं। इन बैठकों के कार्यवृत्त मुख्यालय - संसदीय कार्य, राजभाषा तथा संगठन पद्धति निदेशालय, नई दिल्ली को प्रेषित किये गए। बैठक के कार्यवृत्त पर यथोचित अनुवर्ती कार्रवाई एवं समीक्षा की गई।

इसके साथ ही समय - समय पर संस्थान की प्रबंध परिषद की बैठक में भी संस्थान में राजभाषा कार्यान्वयन की समीक्षा की जाती है।

2. वार्षिक हिन्दी गृह पत्रिका 'संकल्प' अंक -36 तथा 'संकल्प तकनीकी पत्रिका' अंक -04 का प्रकाशन



संस्थान के स्थापना दिवस एवं वार्षिक खेल-कूद के अवसर पर दिनांक 18 फरवरी 2025 को संस्थान की वार्षिक हिन्दी गृह पत्रिका 'संकल्प' के 36वें अंक तथा



‘संकल्प तकनीकी पत्रिका’ के अंक 04 का विमोचन निदेशक महोदय द्वारा किया गया। हिंदी गृह पत्रिका ‘संकल्प’ अंक-36 वर्ष 2024-25 तथा ‘संकल्प तकनीकी पत्रिका’ अंक-04 वर्ष 2024-25 का ई-पत्रिका के रूप में प्रकाशन किया गया तथा इनकी 30-30 प्रतियों का मुद्रण भी कराया गया। अध्यक्ष डीआरडीओ, सभी डी.जी., मुख्यालय को मुद्रित प्रतियों के साथ – साथ डीआरडीओ की 'क', 'ख' तथा 'ग' क्षेत्र स्थित सभी प्रयोगशालाओं को संकल्प अंक 36 तथा संकल्प तकनीकी पत्रिका अंक 4 की ई-पत्रिका का प्रेषण किया गया। मुख्यालय संसदीय कार्य, राजभाषा तथा संगठन पद्धति निदेशालय नई दिल्ली को मुद्रित प्रति भी भेजी गई तथा 10 मुद्रित प्रतियां विमोचन के समय वितरित की गई। संस्थान के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों की जानकारी हेतु संकल्प तथा संकल्प तकनीकी ई-पत्रिका की सॉफ्ट कॉपी को आईआरडीई इन्टरनेट के राजभाषा पोर्टल पर अपलोड किया गया है।

3. हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन

संस्थान के कार्मिकों में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए हिन्दी के प्रति अभिरूचि को बढ़ाने और राजभाषा नीति, नियमों की जानकारी देने, हिन्दी टंकण संबंधी समस्याओं के समाधान तथा हिन्दी पत्राचार के विभिन्न स्वरूपों की जानकारी हेतु संस्थान स्तर पर वर्ष भर में विभिन्न विषयों पर निम्नांकित विवरण के अनुसार 04 हिन्दी कार्यशालाएं आयोजित की गईं।

(3.1) संस्थान में राजभाषा कार्यान्वयन एवं प्रगामी प्रयोग के संदर्भ में दिनांक 25.02.2025 को ‘हिन्दी टंकण हेतु यूनिकोड एवं विभिन्न टूल्स संबंधी जानकारी तथा हिन्दी पत्राचार’ विषय पर हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया।

इस कार्यशाला का उद्घाटन संस्थान के कार्यकारी निदेशक श्री पुनीत वाशिष्ठ, वैज्ञानिक - जी, डॉ. एल.एम.पन्त, वैज्ञानिक - एफ, समूह निदेशक तथा श्री

त्रिलोक सिंह, डाटा प्रोसेसिंग अधिकारी, प्रभारी अधिकारी राजभाषा द्वारा संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित करके किया गया। कार्यशाला में संस्थान के श्री अनुज कुमार रुहेला, तकनीकी अधिकारी - बी द्वारा ‘कम्प्यूटर द्वारा हिन्दी टंकण एवं विभिन्न टूल्स सम्बन्धी जानकारी’ विषय पर तथा संस्थान की श्रीमती मंजु धस्माना, तकनीकी अधिकारी - सी द्वारा ‘यूनिकोड सम्बन्धी जानकारी’ विषय पर एवं संस्थान के श्री प्रकाश नीरव, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी द्वारा ‘हिन्दी अनुवाद एवं पत्राचार के विभिन्न स्वरूप’ विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किये गये।

इस कार्यशाला में संस्थान के विभिन्न विभागों से नामित 49 अधिकारियों एवं कर्मचारियों तथा 03 वक्ताओं तथा 12 राजभाषा कार्यान्वयन समिति. एवं कार्यदल के सदस्यों सहित कुल 64 अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। सभी प्रतिभागियों को पंजीकरण किट वितरित की गई।

(3.2) संस्थान में राजभाषा कार्यान्वयन एवं प्रगामी प्रयोग के संदर्भ में ‘राजभाषा नियमों, हिन्दी प्रोत्साहन योजनाओं तथा हिन्दी रिपोर्ट के प्रपत्र भरने संबंधी जानकारी’ विषय पर दिनांक 20.06.2025 को वित्त वर्ष 2025-2026 की प्रथम हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया।

इस कार्यशाला का उद्घाटन संस्थान के कार्यकारी निदेशक श्री पुनीत वाशिष्ठ, वैज्ञानिक - जी, डॉ. एल.एम.पन्त, वैज्ञानिक - एफ, समूह निदेशक, श्री मधुसूदन उपाध्याय, त.अ.-सी, राजभाषा अधिकारी एवं समूह प्रमुख, श्री त्रिलोक सिंह, डाटा प्रोसेसिंग अधिकारी, प्रभारी अधिकारी राजभाषा तथा आमंत्रित वक्ता श्री सुधीर कुमार उप्रेती, उप निदेशक राजभाषा, आई.टी.एम. मसूरी द्वारा संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित करके किया गया।

संस्थान के कार्यकारी निदेशक श्री पुनीत वाशिष्ठ, वैज्ञानिक - जी ने कार्यशाला में उपस्थित सभी



अधिकारियों एवं कर्मचारियों को संबोधित करते हुए कहा कि हमारा संस्थान 'क' क्षेत्र में स्थित है अतः हम सभी का संवैधानिक एवं नैतिक दायित्व है कि कार्यालयीन कार्यों में अधिक से अधिक हिंदी का प्रयोग किया जाए ।

संस्थान में आंतरिक पत्राचार शत-प्रतिशत हिंदी में किया जाये और राजभाषा नीति, नियमों व निर्देशों का अनुपालन एवं कार्यान्वयन करते हुए गृह मंत्रालय राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए समुचित प्रयास किये जाएं ।

इस कार्यशाला में कुल 03 व्याख्यान प्रस्तुत किये गये । पहला व्याख्यान आमंत्रित वक्ता श्री सुधीर कुमार उप्रेती, उप निदेशक राजभाषा, प्रौद्योगिकी प्रबंधन संस्थान (आई.टी.एम.) मसूरी द्वारा 'राजभाषायी निरीक्षण संबंधी संसदीय निरीक्षण प्रश्नावली भरने संबंधी जानकारी' विषय पर ,दूसरा व्याख्यान 'हिन्दी प्रोत्साहन योजनाओं संबंधी जानकारी' विषय पर संस्थान के श्री मधुसूदन उपाध्याय, तकनीकी अधिकारी-सी नामित राजभाषा अधिकारी द्वारा तथा तीसरा व्याख्यान श्री त्रिलोक सिंह, डाटा प्रोसेसिंग अधिकारी प्रभारी अधिकारी राजभाषा द्वारा 'राजभाषा नियमों तथा हिन्दी रिपोर्ट के प्रपत्र भरने संबंधी जानकारी' विषय पर प्रस्तुत किये गये ।

इस कार्यशाला में संस्थान के विभिन्न विभागों से नामित 49 अधिकारियों एवं कर्मचारियों एवं 03 वक्ताओं तथा 12 राजभाषा कार्यान्वयन समिति. एवं कार्यदल के सदस्यों सहित कुल 64 अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया ।

(3.3) राजभाषा कार्यान्वयन एवं प्रगामी प्रयोग के संदर्भ में 'राजभाषा हिन्दी के परिप्रेक्ष्य में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा अनुवाद संबंधी समस्या एवं समाधान' विषय पर दिनांक 22.08.2025 को वित्त वर्ष 2025-2026 की द्वितीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया । इस कार्यशाला का उद्घाटन संस्थान के कार्यकारी

निदेशक श्री पुनीत वाशिष्ठ, वैज्ञानिक – जी द्वारा किया गया । श्री पुनीत वाशिष्ठ, वैज्ञानिक-जी ने अपने संबोधन में कहा कि भारत सरकार की राजभाषा नीति, नियमों व निर्देशों के अनुरूप राजभाषा हिन्दी का प्रचार – प्रसार तथा विकास करना और उसे व्यावहारिक रूप में कार्यालयीन प्रयोग में लाना हम सभी की संवैधानिक एवं नैतिक जिम्मेदारी है । उद्घाटन के अवसर पर श्री बिनोद कुमार, वैज्ञानिक-एफ, श्री मधुसूदन उपाध्याय, तकनीकी अधिकारी-सी नामित राजभाषा अधिकारी, श्री त्रिलोक सिंह, डाटा प्रोसेसिंग अधिकारी, प्रभारी अधिकारी राजभाषा तथा श्री अमित कुमार, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी तथा हिन्दी कार्यशाला के सभी प्रतिभागी उपस्थित रहे ।

इस कार्यशाला में संस्थान के 03 वक्ताओं श्री बिनोद कुमार, वैज्ञानिक एफ द्वारा – 'वैज्ञानिक एवं तकनीकी कार्यों में हिन्दी का प्रयोग : समस्या एवं समाधान', श्री त्रिलोक सिंह, डाटा प्रोसेसिंग अधिकारी प्रभारी अधिकारी राजभाषा द्वारा– 'हिन्दी पत्राचार के विभिन्न स्वरूप एवं राजभाषा नियमों की जानकारी' तथा श्री अमित कुमार पटेल, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी द्वारा 'हिन्दी अनुवाद संबंधी समस्या एवं समाधान तथा कंठस्थ टूल संबंधी जानकारी' विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किये गये ।

इस कार्यशाला में संस्थान के 03 वक्ताओं, 48 प्रतिभागियों तथा 10 राजभाषा कार्यदल के सदस्यों सहित 61 अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया ।

(3.4) चतुर्थ हिन्दी कार्यशाला दिनांक 18.12.2025 को प्रशासन, वित्त एवं भंडार संबंधी कार्यों में हिन्दी का प्रयोग तथा पत्राचार ' विषय पर आयोजित की गई । इस कार्यशाला में कुल 03 व्याख्यान प्रस्तुत किये गये । विशेष रूप से आमंत्रित वक्ता डॉ एम. आर. सकलानी, सेवा निवृत्त उप निदेशक राजभाषा – आयकर विभाग दिल्ली (निवासी – किशन नगर, देहरादून) ने 'राजभाषा नीति नियमों की जानकारी' तथा 'प्रशासन, वित्त एवं भण्डार संबंधी पत्राचार' विषयों पर 02 व्याख्यान



प्रस्तुत किये।



संस्थान के श्री त्रिलोक सिंह, डाटा प्रोसेसिंग अधिकारी एवं प्रभारी अधिकारी राजभाषा ने 'संस्थान में हिन्दी पत्राचार बढ़ाने के उपाय' विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया तथा पत्राचार में प्रयोग होने वाले प्रपत्र, पत्र तथा नोटशीट आदि के प्ररूप दिखाए। कार्यशाला का उद्घाटन संस्थान के डॉ. एल.एम.पन्त, वै. जी उपाध्यक्ष रा.का.स., आमंत्रित वक्ता डॉ. एम.आर. सकलानी संस्थान के श्री मधुसूदन उपाध्याय त.अ.-सी राजभाषा अधिकारी तथा श्री त्रिलोक सिंह, डाटा प्रोसेसिंग अधिकारी प्रभारी अधिकारी राजभाषा द्वारा संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया गया।

इस कार्यशाला में संस्थान के विभिन्न विभागों से नामित 57 अधिकारियों एवं कर्मचारियों तथा 02 वक्ताओं तथा 12 रा.का.स. एवं कार्यदल के सदस्यों सहित कुल 71 अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया।

4. मुख्यालय स्तर पर राजभाषायी निरीक्षण

(4.1) राजभाषा की प्रगति का जायजा लेने के लिए मुख्यालय के संपर्क एवं सहायता कार्यक्रम के अंतर्गत राजभाषायी निरीक्षणके तहत दिनांक 01 मई 2025 को मुख्यालय स्तर पर मुख्यालय के डॉ. सुनील शर्मा, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक तथा श्री सुजीत कुमार मेहता, सहायक निदेशक राजभाषा द्वारा यंत्र अनुसंधान एवं

विकास संस्थान, देहरादून का राजभाषायी निरीक्षण किया गया। निदेशक राजभाषा द्वारा निरीक्षण प्रश्नावली पर विस्तार से चर्चा एवं समीक्षा की गई।



निरीक्षण के दौरान संस्थान की ओर से डॉ. एल.एम.पन्त, वैज्ञानिक-एफ, श्री मधुसूदन उपाध्याय, तकनीकी अधिकारी-सी, नामित राजभाषा अधिकारी एवं समूह प्रमुख, श्री त्रिलोक सिंह, डाटा प्रोसेसिंग अधिकारी, प्रभारी अधिकारी राजभाषा, श्री टी.के.भारद्वाज, व.लेखा अधिकारी, श्रीमती दुर्गेश भट्ट, व. प्रशा. अधिकारी-११, श्री हेन्द्र सिंह गुसाई, त.अधि.-सी, श्री ए.के.ढोंडियाल, भण्डार अधिकारी, श्री प्रकाश नीरव, व.अनु.अधिकारी, श्री अमित कुमार पटेल, क.अनु.अधिकारी उपस्थित रहे।

(4.2) दिनांक 26 दिसम्बर 2025 को पुनः मुख्यालय केडॉ. सुनील शर्मा, उत्कृष्ट वैज्ञानिक द्वारा यंत्र अनुसंधान एवं विकास संस्थान, देहरादून का राजभाषायी निरीक्षण किया गया। निरीक्षण प्रश्नावली पर विस्तार से चर्चा एवं समीक्षा की गई।

निरीक्षण के दौरान संस्थान की ओर से डॉ. एल.एम.पन्त, वैज्ञानिक-एफ, श्री मधुसूदन उपाध्याय, तकनीकी अधिकारी-सी, नामित राजभाषा अधिकारी एवं समूह प्रमुख, श्री त्रिलोक सिंह, डाटा प्रोसेसिंग अधिकारी, प्रभारी अधिकारी राजभाषा, श्री बृजेश मिश्रा, व.भ. अधिकारी, श्रीमती दुर्गेश भट्ट, व. प्र. अधिकारी-११, श्री संजय नांगिया, व.प्र.अधिकारी-११,



संकल्प

2025-26 | अंक - 37

श्री हरेन्द्र सिंह गुसाई, त.अधि.-सी, श्री ए.के.ढोंडियाल, भण्डार अधिकारी, श्री अमित कुमार पटेल, क.अनु.अधिकारी उपस्थित रहे ।



डॉ. सुनील शर्मा, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक द्वारा मुख्यालय स्तरीय निरीक्षण प्रश्नावली तथा संसदीय निरीक्षण प्रश्नावली को भरने के संबंध में प्रश्नावली के सभी बिन्दुओं के बारे में मार्गदर्शन किया, उन्होंने विशेष रूप से कहा कि निरीक्षण प्रश्नावली में केवल प्रशासनिक एवं संवर्गीय विभागों / अनुभागों के आँकड़े ही भरे जायें । अन्त में श्री मधुसूदन उपाध्याय , तकनीकी अधिकारी-सी राजभाषा अधिकारी द्वारा दिये गये धन्यवाद ज्ञापन के साथ निरीक्षण कार्यक्रम सम्पन्न हुआ ।

5. संस्थान स्तर पर राजभाषा जांचदल द्वारा राजभाषायी निरीक्षण

इस संस्थान में राजभाषा अधिनियम, नियम तथा निर्देशों के अनुपालन एवं कार्यान्वयन से संबंधित किये जा रहे कार्यों का संस्थान के राजभाषा जांचदल द्वारा दिनांक 20 मई 2025 से 22 मई , 2025 के दौरान संस्थान के राजभाषा जांचबिंदुओं तथा अन्य सभी विभागों का निरीक्षण किया गया ।

6. लिखित हिन्दी प्रतियोगिताओं का आयोजन वर्ष 2025

संस्थान में दिनांक 02 सितम्बर 2025 से 11 सितम्बर

2025 तक सुलेख एवं श्रुतलेख प्रतियोगिता, हिंदी निबन्ध लेखन प्रतियोगिता, शब्द ज्ञान एवं अनुवाद प्रतियोगिता तथा हिंदी टिप्पण, प्रारूपण एवं पत्रलेखन, लिखित हिन्दी प्रतियोगिताओं का आयोजन 02 वर्गों (अधिकारी वर्ग एवं कर्मचारी वर्ग) किया गया ।



7. हिन्दी दिवस एवं हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन

राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय तथा मुख्यालय के निर्देशानुसार सभी मंत्रालयों तथा केन्द्रीय कार्यालयों द्वारा संयुक्त रूप से 14 -15 सितम्बर, 2025 को 'महात्मा मन्दिर कन्वेंशन एवं एग्जिविशन सेंटर, गांधी नगर, गुजरात में 'हिन्दी दिवस एवं 5वें अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन' का सम्मिलित आयोजन माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री माननीय अमित शाह जी की अध्यक्षता में किया गया जिसमें संस्थान के 03 अधिकारियों ने प्रतिनिधित्व किया ।





संस्थान में दिनांक 14 सितम्बर 2025 से 29 सितम्बर 2025 तक संस्थान में हिन्दी पखवाड़ा आयोजित किया गया जिसमें शाषी परिषद के सदस्यों हेतु हिन्दी सुलेख, श्रुतलेख एवं टिप्पण प्रतियोगिता, सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों हेतु व्याख्यान प्रतियोगिता, कविता पाठ प्रतियोगिता तथा प्रश्न मंचप्रतियोगिता आदि कार्यक्रम आयोजित किये गये । दिनांक 29 सितम्बर 2025 को हिन्दी पखवाड़ा समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया । इस कार्यक्रम का उद्घाटन संस्थान के निदेशक डॉ. अजय कुमार, उत्कृष्ट वैज्ञानिक , अध्यक्ष राजभाषा कार्यान्वयन समिति , डॉ. एल.एम. पन्त, वैज्ञानिक –जी, उपाध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति, श्री मधुसूदन उपाध्याय, तकनीकी अधिकारी-सी, समूह प्रमुख राजभाषा तथा श्री त्रिलोक सिंह, डी.पी.ओ., प्रभारी अधिकारी राजभाषा द्वारा संयुक्त रूप से किया गया ।

निदेशक महोदय ने अपने संबोधन में कहा कि राजभाषा नीति नियमों का कार्यान्वयन एवं अनुपालन हमारा संवैधानिक एवं नैतिक कर्तव्य है । राजभाषा नियमों का अनुपालन करते हुए हमें अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में करते हुए राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करना है ।

संस्थान में वर्ष 2024 -25 में सर्वाधिक कार्य हिन्दी में करने के लिए प्रशासन विभाग को राजभाषा चल-शील्ड निदेशक महोदय द्वारा प्रदान की गई । इसके साथ ही मूल रूप से हिन्दी में काम करने के लिए नकद प्रोत्साहन पुरस्कार योजना के अन्तर्गत 10 अधिकारियों एवं कर्मचारियों को पुरस्कृत किया गया । वर्ष 2025-26 के दौरान आयोजित विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताओं के विजेताओं, निर्णायकों, मूल्यांकन एवं संचालनकर्ताओं , सांस्कृतिक कार्यक्रम वन्दना एवं हिन्दी नाटक के प्रतिभागियों तथा संस्थान की वार्षिक हिन्दी पत्रिका संकल्प अंक 36 तथा संकल्प तकनीकी पत्रिका अंक 4 के लेखकों एवं रचनाकारों को नकद प्रोत्साहन से पुरस्कृत एवं सम्मानित किया गया ।

8. अखिल भारतीय वैज्ञानिक एवं तकनीकी हिन्दी संगोष्ठी का आयोजन

एल.आर.डी.ई. बैंगलूरु द्वारा 06-07 मार्च 2025 को आयोजित डी.आर.डी.ओ. के ई.सी.एस. क्लस्टर की वर्ष 2024 - 25 की 'संयुक्त राजभाषा तकनीकी संगोष्ठी में संस्थान के 04 अधिकारियों ने प्रतिभागिता की ।

9. डीआरडीओ मुख्यालय द्वारा एन.पी.ओ.एल. कोच्चि में आयोजित राजभाषा सम्मेलन 'उन्मेष' में प्रतिभागिता

मुख्यालय – संसदीय कार्य, राजभाषा संगठन पद्धति निदेशालय नई दिल्ली द्वारा एन.पी.ओ.एल. कोच्चि में आयोजित तृतीय अखिल भारतीय वैज्ञानिक एवं तकनीकी राजभाषा सम्मेलन 'उन्मेष' में संस्थान के 06 अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने प्रतिभागिता की, जिनमें से 05 अधिकारियों एवं कर्मचारियों के शोधपत्र / लेख उक्त सम्मेलन में सम्मिलित किये गये ।

10. ई.सी.एस. क्लस्टर की वर्ष 2025 - 26 की अखिल भारतीय वैज्ञानिक एवं तकनीकी राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन

मुख्यालय के निर्देशानुसार वित्त वर्ष 2025 – 26 के दौरान डी.आर.डी.ओ. के ई.सी.एस. क्लस्टर की 'अखिल भारतीय वैज्ञानिक एवं तकनीकी संयुक्त राजभाषा संगोष्ठी' दिनांक 25 – 26 फरवरी 2026 को 'यंत्र अनुसंधान एवं विकास संस्थान (आई.आर.डी.ई.) देहरादून में निम्नांकित विषय पर आयोजित की जा रही है -

- मुख्य विषय - आधुनिक युद्ध-कौशल हेतु डी.आर.डी.ओ. का योगदान एवं चुनौतियां' ।
- उप विषय - 'राजभाषा के प्रभावी कार्यान्वयन में आधुनिक तकनीकी का योगदान' ।

डीआरडीओ की विभिन्न प्रयोगशालाओं के वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा इस संगोष्ठी में 62 शोध पत्र / लेख प्रस्तुत किये जा रहे हैं ।



राजभाषा विभाग स्वर्ण जयंती समारोह में प्रतिभागिता

गृह मंत्रालय राजभाषा विभाग द्वारा दिनांक 26 जून, 2025 को भारत मण्डपम नई दिल्ली में आयोजित 'राजभाषा विभाग स्वर्ण जयंती समारोह' में संस्थान के 02 अधिकारियों ने तथा 11 जुलाई 2025 को हैदराबाद में आयोजित उक्त समारोह में 03 अधिकारियों ने भाग लिया।

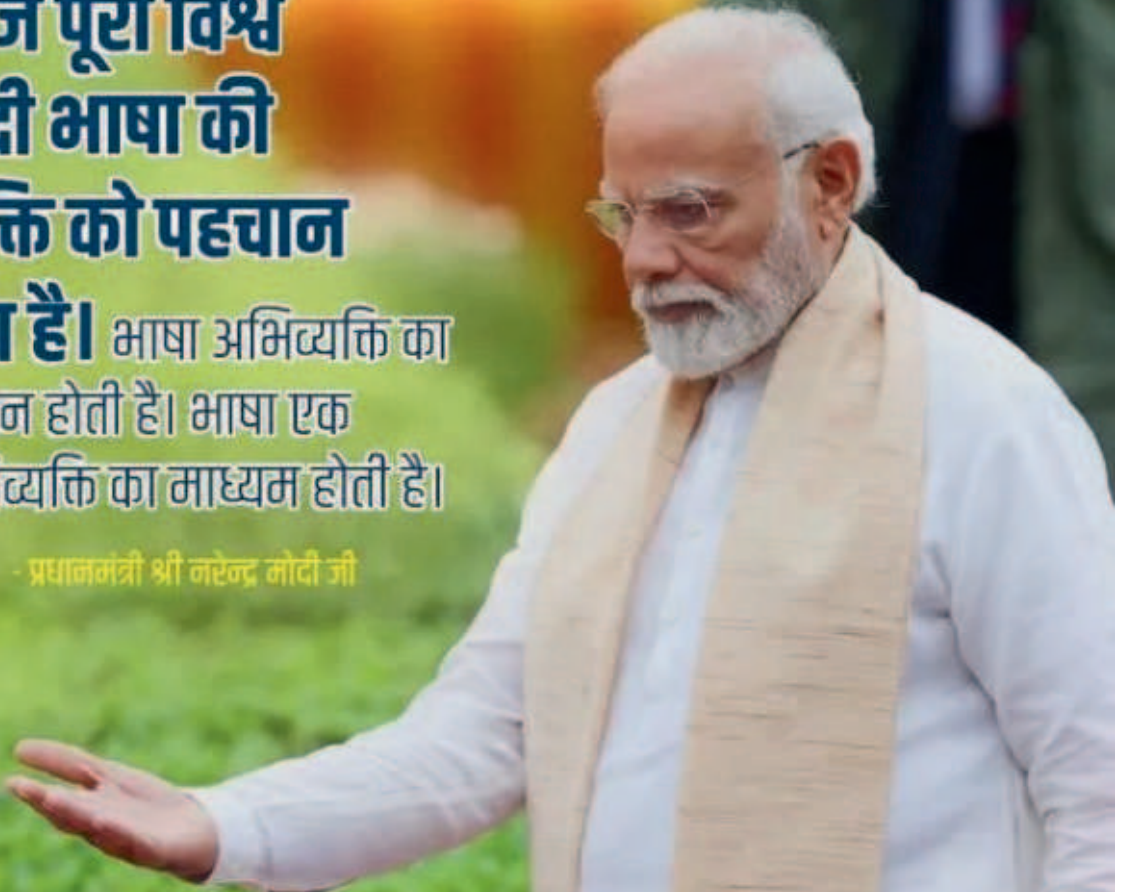
यंत्र अनुसंधान एवं विकास संस्थान, देहरादून द्वारा राजभाषा नीति, अधिनियम, नियमों व निर्देशों के अनुपालन एवं कार्यान्वयन तथा प्रचार - प्रसार हेतु समुचित प्रयास किये जा रहे हैं।



**आज पूरा विश्व
हिंदी भाषा की
शक्ति को पहचान**

रहा है। भाषा अभिव्यक्ति का
साधन होती है। भाषा एक
अभिव्यक्ति का माध्यम होती है।

- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी





संकल्प

2025-26 | अंक - 37

पुरस्कार वितरण एवं हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह 29.09.2025

प्रोत्साहन योजना – 2025-26 (संकलनकर्ता - त्रिलोक सिंह)

वर्ष 2024-2025 के दौरान सर्वाधिक कार्य हिन्दी में करने वाले विभाग को राजभाषा चलशील्ड प्रदान करना

प्रशासन विभाग

लिखित हिन्दी प्रतियोगिताओं का आयोजन
02 से 11 सितम्बर, 2025
हिन्दी सुलेख एवं श्रुतलेख प्रतियोगिता, 02 सितम्बर, 2025
वर्ग -1 - अधिकारी वर्ग

पुरस्कार	नाम	पदनाम	विभाग / अनुभाग	रुपये
प्रथम	श्री अनुज कुमार रुहेला	त.अ.- बी	एसटीएसएस	1000/-
द्वितीय	श्री आशुतोष सक्सेना	त.अ. -सी	निदेशक सचिवालय	800/-
तृतीय	श्री सुबोध कुमार	त.अ.-बी	आई.आर.एस.टी.	600/-

हिन्दी निबंध लेखन प्रतियोगिता 04 सितम्बर, 2025
विषय- 'पर्वतीय क्षेत्रों में आपदा प्रबंधन हेतु आधुनिक तकनीकी संभावनाएं'
वर्ग -2 - कर्मचारी वर्ग

पुरस्कार	नाम	पदनाम	विभाग / अनुभाग	रुपये
प्रथम	श्री कुनाल कुमार जायसवाल	आशुलिपिक- I	निदेशक सचिवालय	1000/-
द्वितीय	कु. सुधा	तकनीशियन-ए	प्रशासन	800/-
तृतीय	कु. एकता	प्रशा.सहा.-ए	प्रशासन	600/-

हिन्दी सुलेख एवं श्रुतलेख प्रतियोगिता, 02 सितम्बर, 2025
वर्ग - 2 - कर्मचारी वर्ग

पुरस्कार	नाम	पदनाम	विभाग / अनुभाग	रुपये
प्रथम	श्री दिवस मिश्रा	आशुलिपिक- II	एसटी एंड एस एस	1000/-
द्वितीय	श्री आशुतोष कुमार	तकनीशियन-सी	ओ.एम.ई.	800/-
तृतीय	श्री विकास खरोला	भण्डार सहा.-बी	सामग्री प्रबंधन	600/-

हिन्दी शब्द ज्ञान एवं अनुवाद प्रतियोगिता, 09 सितम्बर, 2025
वर्ग - 1 - अधिकारी वर्ग

पुरस्कार	नाम	पदनाम	विभाग / अनुभाग	रुपये
प्रथम	श्री सुबोध कुमार	त.अ.- बी	आई.आर.एस.टी.	1000/-
द्वितीय	श्री अरुण कुमार	व.प्र.अधिकारी- II	प्रशासन	800/-
तृतीय	श्री आशुतोष सक्सेना	त.अ.-सी	निदे.सचिवालय	600/-

हिन्दी निबंध लेखन प्रतियोगिता 04 सितम्बर, 2025
विषय- 'पर्वतीय क्षेत्रों में आपदा प्रबंधन हेतु आधुनिक तकनीकी संभावनाएं'
वर्ग -1 - अधिकारी वर्ग

पुरस्कार	नाम	पदनाम	विभाग / अनुभाग	रुपये
प्रथम	श्री लेखराज मीना	त.अ.- ए	नेवल	1000/-
द्वितीय	श्री सुबोध कुमार	त.अ.- बी	आई.आर.एस.टी.	800/-
तृतीय	श्री सचिन कुमार धीमान	त.अ.-सी	सीकर	600/-

शब्द ज्ञान एवं अनुवाद प्रतियोगिता, 09 सितम्बर, 2025
वर्ग - 2 - कर्मचारी वर्ग

पुरस्कार	नाम	पदनाम	विभाग / अनुभाग	रुपये
प्रथम	श्री विकास खरोला	भण्डार सहा.-बी	सामग्री प्रबंधन	1000/-
द्वितीय	श्री कुनाल कुमार जायसवाल	आशुलिपिक- I	निदे.सचिवालय	800/-
तृतीय	श्री दिवस मिश्रा	आशुलिपिक- II	एसटीएंडएसएस	600/-



संकल्प

2025-26 | अंक - 37

हिन्दी टिप्पण एवं प्रारूपण प्रतियोगिता, 11 सितम्बर, 2025

वर्ग - 1 - अधिकारी वर्ग

पुरस्कार	नाम	पदनाम	विभाग / अनुभाग	रुपये
प्रथम	श्री बृजेश कुमार यादव	त.अ.-ए	प्रकाशीय प्रौद्यो.	1000/-
द्वितीय	श्री रविन्द्र सिंह	त.अ. - बी	ओ.डी	800/-
तृतीय	श्री अनुज कुमार रहेला	त.अ. - बी	एस.टी. एस एस	600/-

टिप्पण एवं प्रारूपण प्रतियोगिता, 11 सितम्बर, 2025

वर्ग - 2 - कर्मचारी वर्ग

पुरस्कार	नाम	पदनाम	विभाग / अनुभाग	रुपये
प्रथम	श्री कुनाल कुमार जायसवाल	आशुलिपिक- I	निदेशक सचिवालय	1000/-
द्वितीय	कु.दर्शिका द्विवेदी	व.त.स.- बी	सी.एस.एंड एस.	800/-
तृतीय	श्री शुभम गुप्ता	तकनीशियन-ए	निदेशक सचिवालय	600/-

हिन्दी सुलेख एवं श्रुतलेख तथा टिप्पण प्रतियोगिता 18 सितम्बर, 2025

शासी परिषद के सदस्यों हेतु

पुरस्कार	नाम	पदनाम	विभाग / अनुभाग	रुपये
प्रथम	डॉ. पंकज श्रीवास्तव	वैज्ञानिक-एफ	प्रशासन	1000/-
द्वितीय	डॉ.अजय कुमार साहनी	वैज्ञानिक - जी	ओ.एम.ई.	800/-
तृतीय	श्री पुनीत वाशिष्ठ	वैज्ञानिक -जी	सीकर एवं फ्यूज	600/-

व्याख्यान प्रतियोगिता - 19 सितम्बर, 2025

विषय - वैश्विक अर्थव्यवस्था का भारतीय रक्षा अनुसंधान में प्रभाव ।

वर्ग -1 - अधिकारी वर्ग

पुरस्कार	नाम	पदनाम	विभाग / अनुभाग	रुपये
प्रथम	श्री अनुज कुमार रहेला	त.अ.बी	एस. टी.एस.एस.	1000 /-
द्वितीय	श्री बृजेश कुमार यादव	त.अ. -ए	प्रकाशीय प्रौद्यो.	800 /-
तृतीय	श्रीमती आर्निका सोनी	त.अ.-ए	सीकर फ्यूज	300 /-
	श्री सुबोध कुमार	त.अ.-बी	आईआरएसटी	300/-

व्याख्यान प्रतियोगिता - 19 सितम्बर, 2025

विषय - वैश्विक अर्थव्यवस्था का भारतीय रक्षा अनुसंधान में प्रभाव ।

वर्ग -2 - कर्मचारी वर्ग

पुरस्कार	नाम	पदनाम	विभाग / अनुभाग	रुपये
प्रथम	कु. दर्शिका द्विवेदी	व.त.स.-बी	सी.एस. एण्ड एस.एस.	1000 /-
द्वितीय	कु. सुधा	तकनीशियन-ए	प्रशासन	800 /-
तृतीय	श्री कुनाल कुमार जायसवाल	आशुलिपिक- I	निदे.सचिवालय	600 /-

कविता पाठ प्रतियोगिता - 22 सितम्बर, 2025

वर्ग - 1 - अधिकारी वर्ग

पुरस्कार	नाम	पदनाम	विभाग / अनुभाग	रुपये
प्रथम	श्री रakesh मोहन रावत	तक. अधिकारी- डी	एल.पी.एफ.	1000/-
द्वितीय	श्री बृजेश कुमार यादव	तक.अधिकारी -ए	प्रकाशीय प्रौद्योगिकी	800/-
तृतीय	श्री सुन्दर सिंह धोनी	वैज्ञानिक - ई	ओ.डी.	600/-

कविता पाठ प्रतियोगिता - 22 सितम्बर, 2025

वर्ग - 2 - कर्मचारी वर्ग

पुरस्कार	नाम	पदनाम	विभाग / अनुभाग	रुपये
प्रथम	कु. सुधा	तकनीशियन-ए	प्रशासन	1000/-
द्वितीय	श्री सोहन	प्रशा.सहायक-ए	रोकड़ अनुभाग	800/-
तृतीय	कु. दर्शिका द्विवेदी	व.त.स.-बी	सी.एस. एंड एस.	600/-

कम्प्यूटर द्वारा हिन्दी टंकण प्रतियोगिता 23 सितम्बर, 2025

तकनीकी वर्ग

पुरस्कार	नाम	पदनाम	विभाग / अनुभाग	रुपये
प्रथम	श्री अनुज कुमार रहेला	त.अ.-बी	एस. टी. एंड एस.एस.	1000/-
द्वितीय	कु. दर्शिका द्विवेदी	व.त.स.-बी	सी.एस.एस.	800/-
तृतीय	श्री रakesh पटेल	व.त.स. - बी	लेसर	600/-



संकल्प

2025-26 | अंक - 37

कम्प्यूटर द्वारा हिन्दी टंकण प्रतियोगिता 23 सितम्बर, 2025
गैर तकनीकी वर्ग

पुरस्कार	नाम	पदनाम	विभाग / अनुभाग	रुपये
प्रथम	कु. एकता	प्र. स.-ए	प्रशासन	1000/-
द्वितीय	श्री कुनाल कुमार जायसवाल	आशुलिपिक- I	निदेशक सचिवालय	800/-
तृतीय	श्री विजय सिंह	डी.पी.ओ.	प्रशासन	600/-

पुरस्कार वितरण एवं हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह 24.09.2025

दिनांक 24.09.2025 को आयोजित

विजेता प्रतिभागी (नकद प्रोत्साहन पुरस्कार रुपये 100/- प्रति पुरस्कार)

क्रमांक	नाम	पदनाम	प्रभाग/अनुभाग	पुरस्कार
1	श्री सुमित पोद्दार	तकनीशियन- बी	प्रकाशीय प्रौद्योगिकी	200/-
2	श्री श्रवण	तकनीशियन -ए	थिन फिल्म	200/-
3	श्री सुबोध कुमार	तकनीकी अधिकारी -बी	आई.आर.एस.टी.	200/-
4	श्री रोहित माकन	तकनीकी अधिकारी -सी	टी.एफ.एल.	100/-
5	सुश्री दर्शिका द्विवेदी	वरिष्ठ तकनीकी सहायक -बी	सीएसएंडएस	100/-
6	श्रीमती आर्निका सोनी	तकनीकी अधिकारी -ए	एल पी एफ	100/-
7	श्री राजेश कुमार	तकनीकी अधिकारी -बी	एस.टी.एंड एसएस	100/-
8	डॉ. सुमन अवस्थी	वैज्ञानिक - एफ	थिन फिल्म	100/-
9	श्री सुरेन्द्र सिंह गर्ब्याल	तकनीकी अधिकारी -बी	सी.एम.	100/-
10	श्री अनुज कुमार रुहेला	तकनीकी अधिकारी -बी	एसटीएंडएसएस	100/-
11	श्री वृजेश कुमार यादव	तकनीकी अधिकारी -ए	प्रका.प्रौद्योगिकी	100/-
12	सुश्री सुधा	तकनीशियन -ए	प्रशासन	100/-
13	श्री दिवस मिश्रा	आशुलिपिक- II	एसटीएंडएसएस	100/-
14	कु. एकता	प्रशासनिक सहायक-ए	प्रशासन	100/-
15	श्री संदीप यादव	तकनीकी अधिकारी -बी	एल आई	100/-

16	श्री सोमपाल सिंह	तकनीकी अधिकारी -सी	एल आई	100/-
17	श्री सोहन	प्रशासनिक सहायक-ए	रोकड	100/-
18	श्री नवीन कुमार	तकनीकी अधिकारी -ए	ओ.टी.	100/-
19	डॉ. अनिल कुमार	वैज्ञानिक - ई	थिन फिल्म	100/-
20	श्री अमित कुमार	तकनीशियन-बी	सुरक्षा	100/-
21	श्री आशुतोष सक्सेना	तकनीकी अधिकारी -सी	निदे.सचिवालय	100/-
22	श्री आशुतोष कुमार	तकनीशियन-सी	ओ.एम.ई.	100/-
23	श्री विकास खरोला	भण्डार सहायक-बी	सामग्री प्रबंधन	100/-
24	श्री पवन कुमार	वाहन प्रचालक-बी	एम.टी.	100/-
25	श्री कुनाल कुमार जायसवाल	आशुलिपिक-I	निदेशक सचिवालय	100/-
26	श्री विनीत तिवारी	तकनीकी अधिकारी-सी	प्रका. प्रौद्योगिकी	100/-
27	श्री विकी कुमार	तकनीशियन-ए	पर्यावरण	200/-
28	श्री सुरेन्द्र कुमार	तकनीकी अधिकारी-बी	वी आई	200/-
29	श्री राजेश कुमार सेन	तकनीकी अधिकारी- बी	ओ.टी.	100/-
30	श्री मोहित प्रताप सिंह कुशवाह	व.त.स.-बी	रिप्रोग्राफी	100/-
31	श्री यशपाल सिंह	तकनीकी अधिकारी-सी	आई आर एस टी	100/-
32	श्री सचिन कुमार धीमान	तकनीकी अधिकारी-सी	सीकर	100/-
33	श्री अनिल कुमार नायक	तकनीकी सहायक-बी	ओ.एम.ई.	100/-
34	श्री अरूण कुमार	तकनीशियन -बी	थिन फिल्म	100/-
35	श्रीमती प्रियंका सिंह	व.त.स.-बी	एल.पी.एफ.	100/-
36	श्रीमती अन्नू कुमारी	तकनीशियन -ए	सीकर	100/-
37	कु. प्रियंका चौरे	तकनीशियन-ए	थिन फिल्म	100/-
38	कु. रश्मि मल्ल	स्टेनो - II	पी.एंड सी	100/-

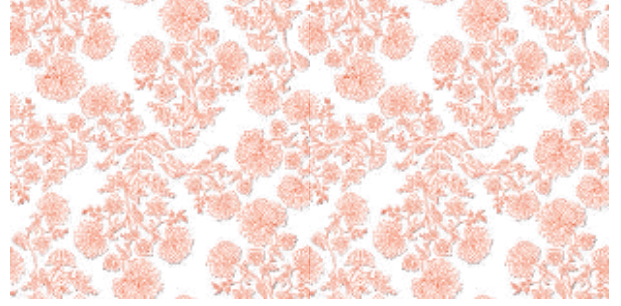


संकल्प

2025-26 | अंक - 37

39	श्री अफजल मोहम्मद एस.	व.त.स.- बी	पी. एंड सी	100/-
40	कु. शिवानी झा	व.त.स.-बी	आई आर एस टी	100/-
41	श्री सचिन तिवारी	व.त.स.-बी	लिडार	100/-
42	श्री नरेन्द्र कुमार	तकनीकी अधिकारी-ए	फैक्स कक्ष	200/-
43	श्री सुनील पाल	एल.एफ.एफ.	सुरक्षा	100/-
44	श्री अरुण कुमार	तकनीकी अधिकारी-बी	पी.एंड सी.	100/-
45	डॉ. एल.एम. पत्त	वैज्ञानिक -जी	प्रका.प्रौद्योगिकी	100/-
46	श्री एम.पी.सिंह	वैज्ञानिक-एफ	प्रका.प्रौद्योगिकी	100/-
47	श्री मधुसूदन उपाध्याय	तकनीकी अधिकारी-सी	नेवल	100/-
48	श्री हरेन्द्र सिंह गुसाई	तकनीकी अधिकारी-सी	ज्ञान केन्द्र	100/-
49	श्री त्रिलोक सिंह	डी.पी.ओ.	राजभाषा	100/-
50	श्री प्रकाश नीरव	व.अनु.अधिकारी	वित्त अनुभाग	100/-
51	श्री अमित कुमार पटेल	क.अनु.अधिकारी	राजभाषा	100/-
52	श्री मनोज कुमार	एम.टी.एस.	निदे.सचिवालय	100/-

5	कु. प्रियंका चौर	तकनीशियन - ए	थिन फिल्म	रु. 800/
6	कु. अनू	त. अ.-ए	टीआईएस	रु. 800/
7	श्रीमती प्रीति बंसल	प्रशा.सहायक-बी	स्थापना	रु. 800/-
8	कु. एकता	प्रशा.सहायक-ए	प्रशासन	रु. 800/



पुरस्कार वितरण एवं हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह 29.09.2025
दिनांक 29.09.2025 को सांस्कृतिक कार्यक्रम के अन्तर्गत हिन्दी पखवाड़ा समापन
एवं पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर हिन्दी नाटक ' गड्ढा ' की प्रस्तुति हेतु
(नकद प्रोत्साहन पुरस्कार 2025)

पुरस्कार वितरण एवं हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह 29.09.2025
दिनांक 29.09.2025 को सांस्कृतिक कार्यक्रम के अन्तर्गत हिन्दी पखवाड़ा समापन
एवं पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर वन्दना एवं गीत प्रस्तुति हेतु (नकद
प्रोत्साहन पुरस्कार 2025)
(रुपये 800/- प्रत्येक)

क्रमांक	नाम	पदनाम	प्रभाग/अनुभाग	पुरस्कार
1	श्रीमती मोनिका टंडन	त. अ. - सी	योजना एवं समन्वय	रु. 800/-
2	श्रीमती रितु रोहिला	त. अ. - -बी	प्रकाशीय प्रौद्योगिकी	रु. 800/
3	श्रीमती रश्मि रावत	व.त.स.- -बी	प्रशासन	रु. 800/
4	श्रीमती रूबी कुमारी	व.त.स.-बी	एएलटीडीएस	रु. 800/

क्रमांक	नाम	पदनाम	प्रभाग/अनुभाग	पुरस्कार
1	डॉ. एल. एम. पत्त	वैज्ञानिक - जी	प्रकाशीय प्रौद्यो.	800/-
2	श्री एस. सी. श्रीवास्तव	से.नि.वैज्ञानिक - ई	सेवानिवृत्त	800/
3	श्री मधुसूदन उपाध्याय	तक. अधि. - सी	राजभाषा	800/
4	श्री बलवीर सिंह	तक. अधि. - डी	एस. एफ. आई.	800/
5	श्री प्रवीन कुमार	तक. अधि. - बी	ओ. टी.	800/
6	श्री रविन्द्र सिंह	तक.अधि.-बी	ओ.डी.	800/-
7	श्रीमती संजू	सुरक्षा सहायक-ए	सुरक्षा	800/
8	श्री विवेक सिंह	तक. अधि. - ए	ओ. टी.	800/
9	श्री ललित कुमार पाल	तक. अधि. - ए	ओ. टी.	800/
10	श्री रितेश राना	एल. एफ. एम.	सुरक्षा	800/



संकल्प

2025-26 | अंक - 37

11	श्री सुनील कुमार पाल	एल. एफ. एम.	सुरक्षा	800/-
12	श्री नवीन तमोली	तक. सहा. - बी	लेसर	800/-
13	श्री विकास चौहान	तकनीशियन - बी	ओ. एम. ई.	800/-
14	श्री सोहन	प्रशा. सहा. - ए	रोकड़	800/-
15	सुश्री दर्शिका द्विवेदी	व. त. स. - बी	सी.एस. एस.	800/-
16	सुश्री प्रियंका चौरे	तकनीशियन - ए	थिन फिल्म	800/-
17	सुश्री सुधा	तकनीशियन - ए	प्रशासन	800/-
18	श्री मलखे जाटव	तकनीशियन-ए	ओ.टी.	800/-
19	श्री नितिन कुमार	त. अ. -ए	ओ.टी.	800/-
20	श्री त्रिलोक सिंह (सह निर्देशन एवं मंच व्यवस्था)	डी.पी.ओ.	राजभाषा	800/-
21	श्री सन्दीप नायक (स्क्रिप्ट संयोजन एवं निर्देशन)	तक. अधि. - बी	ओ. टी.	1,600/-

पुरस्कार वितरण एवं हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह 29.09.2025
राजभाषा कार्यान्वयन तथा हिन्दी पत्राचार में विशेष योगदान हेतु नकद प्रोत्साहन
पुरस्कार - 2025 सूची प्रोत्साहन
पुरस्कार वितरण रु. 500/- प्रत्येक

क्रमांक	नाम	पदनाम	प्रभाग/अनुभाग	पुरस्कार
1	श्रीमती रश्मि रावत	व.त.स.- बी	स्थापना	500/-
2	श्री ललित कुमार पाल	त.अ. -ए	जलपान गृह	500/-
3	श्री सुनील रावत	ए.एल.एस.- I	ओ एम ई	500/-
4	श्रीमती गिरजेश देवी	एम.टी.एस.	जी.डी. प्रशासन कार्यालय	500/-
5	श्री गणेश चन्द्र कुकरेती	एफ.एफ.	सुरक्षा	500/-

पुरस्कार वितरण एवं हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह 29.09.2025
राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी कार्यक्रमों के आयोजन में विशेष सहयोग हेतु
नकद प्रोत्साहन पुरस्कार - 2025 (रुपये 200/- प्रत्येक)

क्रमांक	नाम	पदनाम	प्रभाग/अनुभाग	पुरस्कार
1	डॉ. रणबीर मण्डल (हिन्दीतर भाषी)	वैज्ञानिक-जी	प्रका. अभिकल्पन	200/-
2	श्री अफजल मोहम्मद एस (हिन्दीतर भाषी)	व.त.स.-बी	पी.एंड सी.	200/-
3	श्री प्रदीप सिंह पंवार	तक. अधिकारी-सी	एम. टी.	200/-
4	श्री नरेन्द्र कुमार	त.अ.-ए	तकनीकी समन्वय	200/-
5	श्री राकेश चौधरी	तकनीशियन-ए	फैक्स	200/-
6	श्री परेश भण्डारी	त.अ.-बी	रिप्रोग्राफी	200/-
7	श्री पवन कुमार भैनवाल	तकनीशियन-सी	एच.आर.डी.	200/-
8	श्री जितेन्द्र कुमार यादव	कुक	जलपानगृह	200/-
9	श्री मृत्युंजय कुमार	त.अ.-ए	कार्य अनुभाग	200/-
10	श्री शिशिर पाण्डे	लेखाकार	रोकड अनुभाग	200/-

पुरस्कार वितरण एवं हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह 29.09.2025
हिन्दी प्रतियोगिता निर्णायक , मूल्यांकन कर्ता, उत्तर पुस्तिका जांच कर्ता, अन्वीक्षक
तथा संचालन कर्ता
विशेष नकद प्रोत्साहन पुरस्कार - 2025 (रुपये 800/- प्रत्येक)

क्रमांक	नाम	पदनाम	प्रोत्साहन राशि
1	श्री पुनीत वाशिष्ठ	वैज्ञानिक - जी	800/-
2	श्री विपिन कुमार शर्मा	वैज्ञानिक - जी	800/-
3	डॉ. एल.एम.पन्त	वैज्ञानिक - जी	800/-
4	श्रीमती लता मैनाली	वैज्ञानिक - एफ	800/-
5	डॉ. पंकज श्रीवास्तव	वैज्ञानिक - एफ	800/-
6	श्री गिरिराज प्रसाद	वैज्ञानिक -एफ	800/-
7	डॉ. सुमन अवस्थी	वैज्ञानिक - एफ	800/-
8	श्री अजय मिश्र	वैज्ञानिक- एफ	800/-



संकल्प

2025-26 | अंक - 37

9	श्री एम.पी.सिंह	वैज्ञानिक - एफ	800/-
10	श्री विकास दुआ	वैज्ञानिक - एफ	800/-
11	डॉ. एम.पी. मिश्रा	वैज्ञानिक - ई	800/-
12	श्री मधुसूदन उपाध्याय	त.अ.-सी	800/-
13	श्री शशांक जोशी	वैज्ञानिक - सी	800/-
14	श्री मनोज कुमार शर्मा	व.प्र.अ.- ग्रेड- I	800/-
15	श्रीमती मंजुलिका अमोली	तकनीकी अधिकारी-सी	800/-
16	श्री हरेन्द्र सिंह गुसाई	तकनीकी अधिकारी-सी	800/-
17	श्रीमती रितु रोहिला	तकनीकी अधिकारी-बी	800/-
18	श्री ओमकार क्षेत्री	तकनीकी अधिकारी-बी	800/-
19	श्री त्रिलोक सिंह,	डी.पी.ओ.	800/-
20	श्री वाई एस बरार	तकनीकी अधिकारी - बी	800/-
21	सुश्री केतिका ढोंगरा	वरिष्ठ निजी सचिव	800/-
22	श्री प्रकाश नीरव	वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी	800/-
23	श्री अतर सिंह	तकनीकी अधिकारी- बी	800/-
24	श्री सुखपाल सिंह	तकनीकी अधिकारी - बी	800/-
25	श्री बरिन्द्र सिंह भण्डारी	तकनीकी अधिकारी-ए	800/-
26	श्री अमित कुमार पटेल	कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी	800/-
27	श्री मनोज कुमार	एम.टी.एस.	800/-

‘संकल्प’ पत्रिका अंक 36 - वर्ष 2024 - 25
 तथा ‘संकल्प तकनीकी पत्रिका’ अंक -4 वर्ष 2024 - 2025
पुरस्कार सूची
 (उत्कृष्ट एवं विशेष नकद पुरस्कार रुपये 1000/- प्रत्येक)

क्रमांक	विवरण	लेख/ रचना	नाम	रुपये
1	उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं तकनीकी लेख	समय द्वारक रमन स्पेक्ट्रमिती	श्री मुकेश कुमार मथुरिया, वैज्ञानिक -एफ	1000/-
2	उत्कृष्ट साहित्यिक लेख	भारत में गृह सजा की पारम्परिक	श्री प्रकाश नीरव, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी	1000/-
3	उत्कृष्ट कविता	ऊंगली महिमा	श्री पवन कुमार सूरज तकनीकी अधिकारी-बी	1000/-
4	मुखपृष्ठ अधिकल्पन एवं फोटो पेज संयोजन	-	श्री त्रिलोक सिंह, डाटा प्रोसेसिंग अधिकारी	1000/-
5	फोटो संकलन तथा लेखों / रचनाओं का संयोजन	-	श्री अमित कुमार पटेल, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी	1000/-

संकल्प पत्रिका अंक 36- तथा संकल्प तकनीकी पत्रिका अंक -4 वर्ष 2024-2025
लेखक एवं रचनाकार प्रोत्साहन पुरस्कार

क्रमांक	नाम एवं पदनाम	लेख / रचना	रुपये
1	श्री त्रिलोक सिंह, डाटा प्रोसेसिंग अधिकारी	1. भारत को विकसित बनाने में राजभाषा का योगदान (लेख) 2. संस्थान में राजभाषा नीति का कार्यान्वयन (वार्षिक प्रतिवेदन-2024) 3. पुरस्कार वितरण एवं हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह-2024-25 4. संस्थान में नियुक्तियों, पदोन्नतियों, स्थानान्तरण, वर्ष 2024 5. आदर्श वाक्य संकलन 6. संस्थान में वर्ष 2024 में अतिविशिष्ट अतिथियों का परिभ्रमण हिन्दी कार्यशालाओं, हिन्दी पखवाड़ा, एवं पुरस्कार वितरण, स्थापना दिवस - छायाचित्र 2024	200/-
2	श्रीमती मंजुलिका अमोली, त.अ.-सी	पंचमाक्षर (लेख)	200/-
3	कु. रक्षिता उपाध्याय सुपुत्री श्री एम.एस. उपाध्याय, त.अ.-सी	सुविचार (लेख)	200/-
4	श्री कृष्ण मुरारी, त.अ.-डी (सेवा निवृत्त)	1.मारकण्डेय महादेव जी का महातम्य (लेख)	200/-



संकल्प

2025-26 | अंक - 37

5	श्री राघव उपाध्याय सुपुत्र श्री श्री एम.एस. उपाध्याय, त.अ.-सी	गुरु तो गुरु है (लेख)	200/-
6	कु. दर्शिका द्विवेदी, व.त.स.-बी	1.इनडीपेन्डेंट वुमन (लेख) 2. सपनों का जहाँ (कविता) 3. डाटा आदान प्रदान प्रणाली-संक्षिप्त विवरण (तकनीकी लेख)	200/-
7	सुश्री आरुषी राय सुपुत्री श्री कृष्ण मुरारी, तकनीकी अधिकारी-डी	1.शिव ही अनन्त हैं (कविता)	200/-
8	श्रीमती वन्दना राय धर्मपत्नी श्री कृष्ण मुरारी, त.अ.-डी	दर्शन (कविता)	200/-
9	कु. प्रियंका चौरे, तकनीशियन -ए	उभरती नारी (कविता)	200/-
10	श्री मधुसूदन उपाध्याय, त.अ.-सी	पैरालंपिक खिलाड़ियों से सीख (कविता)	200/-
11	श्रीमती ऊर्मिला धर्मपत्नी श्री पवन कुमार सूरज, त.अ.-बी	आलस त्यागो, कर्म करो कुछ, समय गँवाने से क्या होगा (कविता)	200/-
12	श्रीमती रूचि उपाध्याय धर्मपत्नी श्री एम.एस. उपाध्याय, त.अ.-बी	गुरु की महीमा (कविता)	200/-
13	श्री योगेश कुमार सक्सेना, वै.ई	चिड़िया के पंख	200/-
14	श्री अमित कुमार पटेल, क.अनुवाद अधिकारी	सम्भावना	200/-
15	श्री कमल कुमार गुलाटी, वै.ई	रिस्ले प्रिन्स पर आधारित बृहत दृष्टि क्षेत्र - कैमरा (तकनीकी लेख)	200/-
16	श्री बृजेश कुमार यादव, त.अ.-ए	अपरम्परागत पॉलिशिंग विधि द्वारा फ्रीफार्म प्रकाशीय घटक की पॉलिशिंग एवं भरण दर का आष्टीमाइजेशन (तकनीकी लेख)	200/-
17	श्री अजय मिश्रा, वै. एफ	टेराहर्ट्ज पैकेज स्कैनर प्रणाली (तकनीकी लेख)	200/-
18	डॉ. ललित मोहन पन्त, वै. - जी	परिशुद्ध प्रकाशीय घटकों की निर्माण प्रक्रियाएं (तकनीकी लेख)	200/-
19	श्री पवन कुमार सूरज, त.अ.-बी	पर्यावरण परीक्षण संबंधित राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय कुछ मुख्य मानक (तकनीकी लेख)	200/-

20	श्री शशांक जोशी, वैज्ञानिक -सी	प्रतिबिंब संलयन में डिफ्रैक्ट वेवलेट ट्रांसफॉर्म का उपयोग (तकनीकी लेख)	200/-
21	श्रीमती आर्निंका सोनी, त.अ.-ए	लेजर द्वारा परास मापन की तकनीकों का तुलनात्मक अध्ययन (तकनीकी लेख)	200/-
22	श्री सचिन कुमार धीमान, त.अ.-बी	लेजर सीकर (तकनीकी लेख)	200/-
23	श्री प्रकाश नीरव, व.अ.अधिकारी	प्रकाश और प्रगति : भारत में प्रकाशिकी अनुसंधान के उभरते चरण (तकनीकी लेख)	200/-

वार्षिक हिन्दी गृह पत्रिका 'संकल्प' अंक -36 वर्ष 2024-25
तथा 'संकल्प तकनीकी पत्रिका' अंक -4वर्ष 2024 - 25

सम्पादक मण्डल

क्रमांक	नाम एवं पदनाम	सम्पादक मण्डल	प्रोत्साहन रूपये
1	श्री पुनीत वाशिष्ठ, वैज्ञानिक - जी	प्रधान सम्पादक	1000/-
2	डॉ. ललित मोहन पन्त, वैज्ञानिक-एफ, उपाध्यक्ष, रा.का.स.समूह निदेशक राजभाषा	सम्पादक	1000/-
3	श्री कृष्ण मुरारी, तकनीकी अधिकारी-डी, (से.नि.) नामित राजभाषा अधिकारी, समूह प्रमुख	सदस्य	1000/-
4	श्री त्रिलोक सिंह, डाटा प्रोसेसिंग अधिकारी, प्रभारी अधिकारी राजभाषा अनुभाग	सदस्य	1000/-
5	श्री मधुसूदन उपाध्याय, तक.अधिकारी - सी	सदस्य	1000/-
6	श्री पवन कुमार सूरज, तक. अधिकारी - बी	सदस्य	1000/-
7	श्री प्रकाश नीरव, व.अनु.अधिकारी	सदस्य	1000/-
8	श्री अमित कुमार पटेल,क. अनु.अधिकारी	सदस्य	1000/-





संकल्प

2025-26 | अंक - 37

पुरस्कार वितरण एवं हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह
29.09.2025

प्रोत्साहन योजना – 2025 -26

पुरस्कार वितरण एवं हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह – 29. 09.2025
हिन्दी प्रोत्साहन पुरस्कार योजना – 2025-26
वर्ष 2024 - 25 के दौरान मूलरूप से हिन्दी में कार्य करने हेतु
नकद प्रोत्साहन पुरस्कार
तकनीकी वर्ग

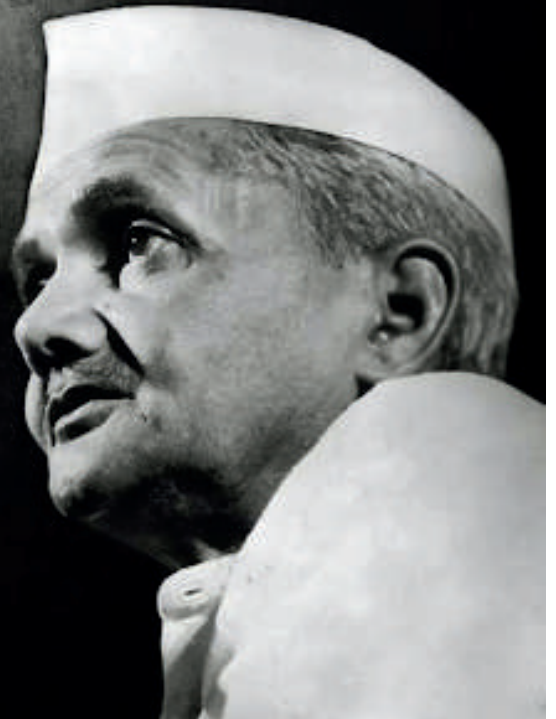
क्र.	नाम	पदनाम	प्रभाग/ अनुभाग	पुरस्कार
1	श्री अजय प्रसाद	तकनीशियन-सी	निदेशक सचिवालय	प्रथम पुरस्कार रु. 5000/-
2	श्री मनोज कुमार	तकनीशियन-बी	डी.ए.सेल	द्वितीय पुरस्कार रु. 3000/-
3	श्री सुनील चन्द पुरोहित	तक.अधि. - बी	टी.ए.डी.ए.	तृतीय पुरस्कार रु. 2000/-
4	श्री पवन कुमार सूरज	तक.अधि. - बी	पर्यावरण	तृतीय पुरस्कार रु. 2000/-
5	श्री अनूप कुमार थापा	तक.सहायक-बी	सामग्री प्रबंधन	तृतीय पुरस्कार रु. 2000/-

हिन्दी प्रोत्साहन पुरस्कार योजना – 2025-26
वर्ष 2024 - 25 के दौरान मूलरूप से हिन्दी में कार्य करने हेतु
नकद प्रोत्साहन पुरस्कार
गैर तकनीकी वर्ग

क्र.	नाम	पदनाम	प्रभाग/ अनुभाग	पुरस्कार
1	श्री विजय सिंह	डी.पी.ओ.	स्थापना अनुभाग	प्रथम पुरस्कार रु.5000/-
2	कु. एकता	प्रशासनिक सहायक-ए	मु.प्र.अ. का कार्यालय	द्वितीय पुरस्कार रु. 3000/-
3	श्री ए.के.दौंडियाल	भण्डार अधिकारी	सामग्री प्रबंधन	द्वितीय पुरस्कार रु.3000/-
4	श्रीमती नीना राना	एम.टी.एस.	मु.प्र.अ.कार्यालय	तृतीय पुरस्कार रु.2000/-
5	श्रीमती सुनीता देवी	प्रशासनिक सहायक -बी	वित्त अनुभाग	तृतीय पुरस्कार रु.2000/-



हिन्दी पढ़ना और पढ़ाना
हमारा कर्तव्य है। उसे
हम सबको अपनाना है
लालबहादुर शास्त्री





संकल्प

2025-26 | अंक - 37

संस्थान में नियुक्तियाँ, पदोन्नतियाँ, स्थानांतरण, सेवानिवृत्तियाँ - वर्ष 2025 संकलनकर्ता - त्रिलोक सिंह

संस्थान में नियुक्तियाँ
01 जनवरी 2025 से 31 दिसम्बर 2025
(सुस्वागतम्)

क्र.	नाम	पदनाम	नियुक्ति की तिथि
1	श्री प्रशांत सिंह भाटी	वैज्ञानिक 'बी'	20.05.2025
2	श्री अरुण कुमार	व.प्रशा. अधि.-II	20.08.2025
3	श्री नमोनारायण मीना	वैज्ञानिक 'बी'	22.08.2025

पदोन्नतियाँ 01 जनवरी 2025 से 31 दिसम्बर 2025
(बधाई)

क्र.	नाम	पदनाम	नियुक्ति की तिथि
1	श्री ब्रजेश कुमार मिश्रा	वरि.भं.अधि.-I	01.01.2025
2	श्रीमती विजय लक्ष्मी चौहान	व.प्रशा. सहा.	01.01.2025
3	श्री जितेन्द्र कुमार यादव	सहा. प्रबंधक सह स्टोरकीपर	01.01.2025
4	श्री राजीव सैनी	भं. अधि.-II	16.04.2025
5	श्रीमती सुनीता	वैज्ञा 'एफ'	01.07.2025
6	श्री दलबीर सिंह	वैज्ञा 'एफ'	01.07.2025
7	श्री संजय धीमान	वैज्ञा 'एफ'	01.07.2025
8	श्री विपुल कुमार भारती	वैज्ञा 'एफ'	01.07.2025
9	श्री विनय कुमार	वैज्ञा 'एफ'	01.07.2025
10	श्री साक्षी गुप्ता	वैज्ञा 'एफ'	01.07.2025
11	श्री विकास दुआ	वैज्ञा 'एफ'	01.07.2025
12	श्री अरुण कुमार	वैज्ञा 'एफ'	01.07.2025
13	श्री दीपक कुमार पासवान	वैज्ञा 'ई'	01.07.2025

14	सुश्री संतोषी देवी	वैज्ञा 'ई'	01.07.2025
15	श्रीमती प्रीती पाल	वैज्ञा 'ई'	01.07.2025
16	श्री सिद्धार्थ नेगी	वैज्ञा 'ई'	01.07.2025
17	श्री राज कुमार जैसवाल	वैज्ञा 'ई'	01.07.2025
18	श्री मानवेन्द्र सिंह चौहान	वैज्ञा 'ई'	01.07.2025
19	श्रीमती निशा केरो	वैज्ञा 'डी'	01.07.2025
20	श्री रवीन्द्र गौर	वैज्ञा 'डी'	01.07.2025
21	श्री अवधेश प्रताप सिंह	वैज्ञा 'डी'	01.07.2025
22	श्री रवि भल्ला	त.अ. 'डी'	01.07.2025
23	श्री बलवीर सिंह	त.अ. 'डी'	01.07.2025
24	श्री जयपाल सिंह	त.अ. 'सी'	01.07.2025
25	श्री दीपक पंवार	त.अ. 'सी'	01.07.2025
26	श्री सुनील चौधरी	तकनी. 'बी'	01.07.2025
27	श्री राजेश कुमार गोंड	तकनी. 'बी'	01.07.2025
28	श्रीमती जमना भट्ट	तकनी. 'सी'	01.07.2025
29	श्री पवन कुमार भेनवाल	तकनी. 'सी'	01.07.2025
30	श्री संजय कुमार	तकनी. 'सी'	01.07.2025
31	श्री पद्म दत्त	त.सहा. 'बी'	01.07.2025
32	श्री अनुप कुमार थापा	त.सहा. 'बी'	01.07.2025
33	डॉ. सुधीर खरे	वैज्ञा 'एच' (उत्कृष्ट वैज्ञानिक)	28.08.2025
34	श्री राजकमल सिंह रावत	वैज्ञा 'जी'	28.08.2025



संकल्प

2025-26 | अंक - 37

35	श्री मनोज पुरोहित	वैज्ञा 'जी'	28.08.2025
36	डॉ. ललित मोहन पंत	वैज्ञा 'जी'	28.08.2025
37	डॉ. गिरीश सेमवाल	वैज्ञा 'जी'	28.08.2025
38	श्री दुर्गेश कुमार मिश्रा	वैज्ञा 'जी'	28.08.2025
39	श्री दिनेश सिंह कुटियाल	वैज्ञा 'जी'	28.08.2025
40	डॉ. हिमांशु सिंह	वैज्ञा 'जी'	28.08.2025

स्थानांतरण पर संस्थान में आए
01-01-2025 से 31-12-2025 तक
(सुस्वागतम्)

क्र.	नाम	पदनाम	स्थानांतरण की तिथि
1	श्री नरेन्द्र सिंह चौहान	वरि. सुरक्षा अधि.	01.01.2025
2	श्री लोकेश देवराड़ी	प्रशा. सहा. 'बी'	24.01.2025
3	श्री रविन्द्र सिंह रावत	वैज्ञानिक 'एफ'	15.04.2025
4	श्री संजय नांगिया	व.प्रशा. अधि. -II	26.05.2025
5	डॉ. कैलाश चन्द्र सती	वैज्ञानिक 'एफ'	23.06.2025
6	डॉ. प्रीति सती	वैज्ञानिक 'एफ'	23.06.2025
7	श्री अश्विनी आनंद	वैज्ञानिक 'ई'	08.09.2025
8	श्री सुनील	लीडिंग फायर फाइटर	09.09.2025
9	श्री पंकु सिंह	तकनी.' बी'	03.10.2025
10	श्री मोन् कुमार	त.अ. 'ए'	17.10.2025
11	कैप्टन हरिकृष्ण आर	चिकित्सा अधिकारी	24.11.2025
12	श्री संजय बाबू	तकनी.' बी'	15.12.2025
13	श्रीमती स्मिता रॉय	व.त.स. 'बी'	18.12.2025

स्थानांतरण पर संस्थान से गए
01-01-2025 से 31-12-2025 तक
(शुभकामनाएँ)

क्र.	नाम	पदनाम	स्थानांतरण की तिथि
1	श्री रोहित कुमार	प्रशा. सहा. 'बी'	01.01.2025
2	श्री हितेश कुमार	मुख्य प्रशा. अधिकारी	21.03.2025
3	सुश्री रजनी मल्होत्रा	वैज्ञा 'एफ'	25.04.2025
4	सुश्री ममता मीना	वैज्ञा 'ई'	25.04.2025
5	सुश्री स्मिता शर्मा	वैज्ञा 'ई'	25.04.2025
6	श्री परमेन्द्र कुमार	तकनी.सहा. 'बी'	25.04.2025
7	श्री अजय तिकी	तकनी.सहा. 'बी'	25.04.2025
8	डॉ. नीलरतन दास	वैज्ञा 'जी'	30.04.2025
9	डॉ. मुकेश कुमार जिंदल	वैज्ञा 'एफ'	30.04.2025
10	सुश्री रश्मी राय चौहान	वैज्ञा 'एफ'	30.04.2025
11	डॉ. सुबोध कुमार	वैज्ञानिक 'ई'	30.04.2025
12	श्री पूरन चन्द	त.अ. 'डी'	30.04.2025
13	श्री रमेश कुमार	त.अ. 'सी'	30.04.2025
14	श्री अरविन्द बंसल	त.अ. 'बी'	30.04.2025
15	श्री विपिन कक्कर	त.अ. 'बी'	30.04.2025
16	सुश्री दीपिका पोरवाल	वैज्ञा 'डी'	09.05.2025
17	श्री विकास सागर	त.अ. 'सी'	04.07.2025
18	श्री टी.के. भारद्वाज	व.लेखा. अ -I	08.08.2025
19	श्रीमती सुभद्रा कुमारी	त.अ. 'ए'	20.08.2025



संकल्प

2025-26 | अंक - 37

20	सुश्री रेनु सिंह	निजी सचिव	01.09.2025
21	श्रीमती विशाखा शर्मा	एमटीएस	01.09.2025
22	डॉ. संजय	वैज्ञा 'एफ'	22.09.2025
23	सुश्री शालिनी मित्तल	वैज्ञा 'ई'	04.09.2025
24	श्री अनिल कुमार	त.अ. 'सी'	25.09.2025
25	श्री प्रदीप कुमार शर्मा	त.अ. 'बी'	26.09.2025
26	श्रीमती उषा कुमार	त.अ. 'ए'	26.09.2025
27	श्री सौरभ खत्ती	व.त.स. 'बी'	10.10.2025
28	श्री शाबीर अहमद	वैज्ञा 'एफ'	03.10.2025
29	श्री विपिन कुमार शर्मा	वैज्ञा 'जी'	11.11.2025
30	श्री राकेश चौधरी	तकनी. 'ए'	05.12.2025
31	श्री राजेन्द्र सिंह राजपूत	स.श्र.क.आ. (के.)	26.12.2025

9	श्री हरि सिंह राणा	त.अ. 'डी'	30.06.2025
10	श्री महाराज सिंह बिष्ट	त.अ. 'सी'	30.06.2025
11	श्री संदीप ध्यानी	त.अ. 'बी'	30.06.2025
12	श्री दीपक	एएलएस-I	30.06.2025
13	श्री लीला सिंह	त.अ. 'सी'	31.07.2025
13	श्री स्वराज सिंह सोलंकी	डी.पी.ओ.	31.07.2025
14	श्री अशोक कुमार	तकनी. 'सी'	31.07.2025
15	श्री प्रभात कुमार	त.अ. 'डी'	31.08.2025
16	श्री कमल कुमार	एमटीएस	31.08.2025
17	श्री बलवीर सिंह	त.अ. 'डी'	31.10.2025
18	श्री महेश चन्द्रा	त.अ. 'बी'	31.10.2025
19	श्री ए.के. श्रीवास्तव	वैज्ञा 'जी'	31.12.2025
20	श्री पी.सी. पाण्डेय	वैज्ञा 'एफ'	31.12.2025
21	श्री जय प्रकाश सिंह (बोलेटरी सेवा-निवृत्त)	वैज्ञा 'जी'	10.10.2025

सेवानिवृत्ति (01-01-2025 से 31-12-2025 तक)

क्र.	नाम	पदनाम	सेवानिवृत्ति की तिथि
1	श्री नरेश कुमार	वैज्ञा 'ई'	31.01.2025
2	श्री के.के. भवानी	त.अ. 'डी'	31.01.2025
3	श्री अशोक कुमार	त.अ.	31.01.2025
4	श्री मदन सिंह	वैज्ञा 'एफ'	28.02.2025
5	श्री कृष्ण मुरारी	त.अ. 'डी'	30.04.2025
6	श्री ओम प्रकाश	एमटीएस	30.04.2025
7	श्री कृष्ण प्रताप सिंह	तकनी. सहा. 'बी'	30.04.2025
8	श्री कृष्ण कुमार पाण्डे	त.अ.	31.05.2025

त्यागपत्र (01-01-2025 से 31-12-2025 तक)

क्र.	नाम	पदनाम	त्यागपत्र की तिथि
1	श्री पराग सरोहा	वैज्ञानिक 'बी'	21.08.2025
2	डॉ. उदित श्रुवेंशी	चिकित्सा अधिकारी	30.11.2025
3	श्री दिवस मिश्रा	आशुलिपिक ग्रेड-I	18.11.2025





संस्थान में वर्ष 2025 के दौरान अतिविशिष्ट अतिथियों का परिभ्रमण



निदेशक सेष्टम डॉ. मनोरंजन पत्री का संस्थान में परिभ्रमण 09-05-2025



महाप्रबंधक बी.ई.एल. का संस्थान में परिभ्रमण 04-06-2025



महानिदेशक ई.सी.एस. कलस्टर डॉ. बि.के. दास के द्वारा शिवालिक का उद्घाटन
04.08.2025



प्रोफेसर (पद्मश्री) आशुतोष, आईआईटी, कानपुर का संस्थान में परिभ्रमण 05-08-2025



वाईस एडमिरल संदीप नैथानी (सेवा-निवृत्त) का संस्थान में परिभ्रमण 06-11-2025



सचिव, रक्षा अनुसंधान तथा विकास विभाग एवं अध्यक्ष, डीआरडीओ डॉ. समिर वी. कामत
का संस्थान में परिभ्रमण 07-05-2025



स्थापना दिवस एवं वार्षिक खेल-कूद 18 फरवरी 2025 के परिदृश्य





हिंदी पखवाड़ा 2025 के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के परिदृश्य





हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह पर पुरस्कार वितरण दिनांक 29.09.2025





हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह पर पुरस्कार वितरण दिनांक 29.09.2025





हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह पर पुरस्कार वितरण दिनांक 29.09.2025





हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह पर पुरस्कार वितरण दिनांक 29.09.2025





हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह पर पुरस्कार वितरण दिनांक 29.09.2025



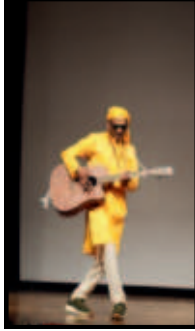


हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह पर पुरस्कार वितरण दिनांक 29.09.2025





हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह के अवसर पर प्रस्तुत हास्य नाटक 'गड्डा' की झलकियाँ





राजभाषा कार्यान्वयन समिति यंत्र अनुसंधान एवं विकास संस्थान देहरादून



डॉ. अजय कुमार
उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक



श्रीमती रूमा ढाका
उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं सह-निदेशक



डॉ. सुधीर खरे
उत्कृष्ट वैज्ञानिक



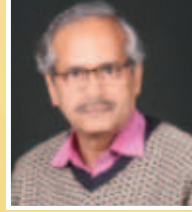
डॉ. ललित मोहन पंत
वैज्ञानिक 'जी'
समूह निदेशक राजभाषा
उपाध्यक्ष, रा.का.स.



श्री मधुसूदन उपाध्याय
तकनीकी अधिकारी 'सी'
नामित राजभाषा अधिकारी



श्री पुनित वाशिष्ठ
वैज्ञानिक 'जी', सदस्य



श्री अशोक कुमार
वैज्ञानिक 'जी', सदस्य



डॉ. ए. के. साहनी
वैज्ञानिक 'जी', सदस्य



डॉ. पंकज श्रीवास्तव
वैज्ञानिक 'एफ', सदस्य



डॉ. प्रभात शर्मा
वैज्ञानिक 'एफ', सदस्य



श्री गिरिराज प्रसाद
वैज्ञानिक 'एफ', सदस्य



श्री एम. पी. सिंह
वैज्ञानिक 'एफ', सदस्य



कु. रितिका वर्मा
वैज्ञानिक 'बी', सदस्य



श्री मनोज कुमार शर्मा
वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी, ग्रेड-I
सदस्य



श्री प्रदीप सिंह पुरी
त.अ. 'सी', सदस्य



श्री ओमकार खेत्री
त.अ. 'सी', सदस्य



श्री एच.एस. गुसाई
त.अ. 'सी', सदस्य



श्री अतर सिंह
त.अ. 'सी', सदस्य



श्री वाई. एस. बरार
त.अ. 'बी', सदस्य



श्री पवन कुमार सूरज
त.अ. 'बी', सदस्य



श्री सुनील चन्द्र पुरोहित
त.अ. 'बी', सदस्य



श्री अनुज कुमार रुहेला
त.अ. 'बी', सदस्य



श्री सुखपाल सिंह
त.अ. 'बी', सदस्य



श्री ए. के. ढंडियाल
भण्डार अधिकारी, सदस्य



श्री त्रिलोक सिंह
डी.ओ.पी., सदस्य



श्री प्रकाश नीरव
व.अ. अ., सदस्य



श्री विरेन्द्र सिंह भण्डारी
त.अ. 'ए', सदस्य



श्री अमित कुमार
क.अ.अ., सदस्य



कु. एकता
प्रशा. सहा. 'ए', सदस्य

उत्तराखण्ड के दर्शनीय स्थल



यंत्र अनुसंधान एवं विकास संस्थान

रायपुर रोड, देहरादून-248008